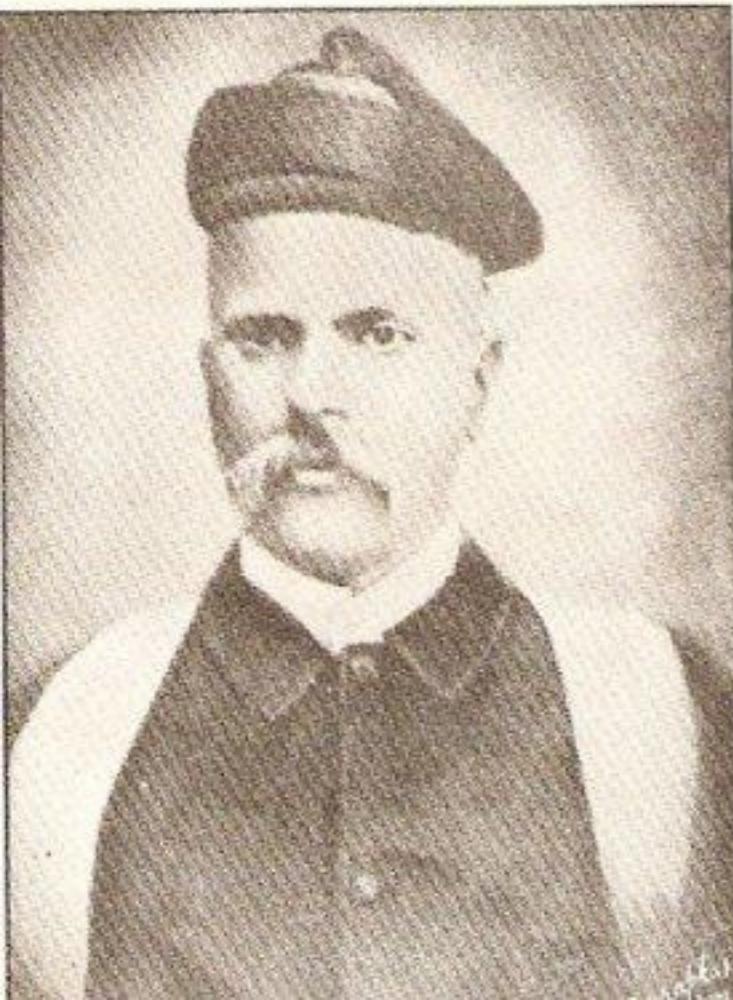
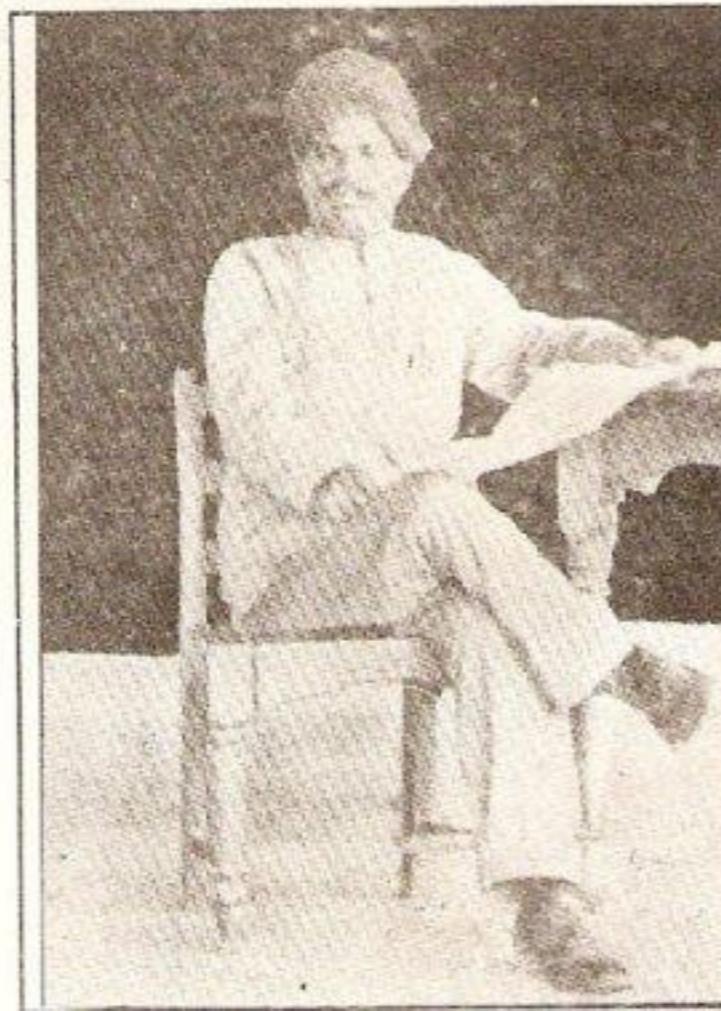


के. प्रो. पांडुरंग भिकाजी उर्फ तात्यासाहेब नाईक
एम. ए. आद्य चिटणीस



के. विठ्ठल तात्या देसाई,
एल. सी. ई



संस्थापक

कै. रावसाहेब गणेश रघुनाथ पाटकर

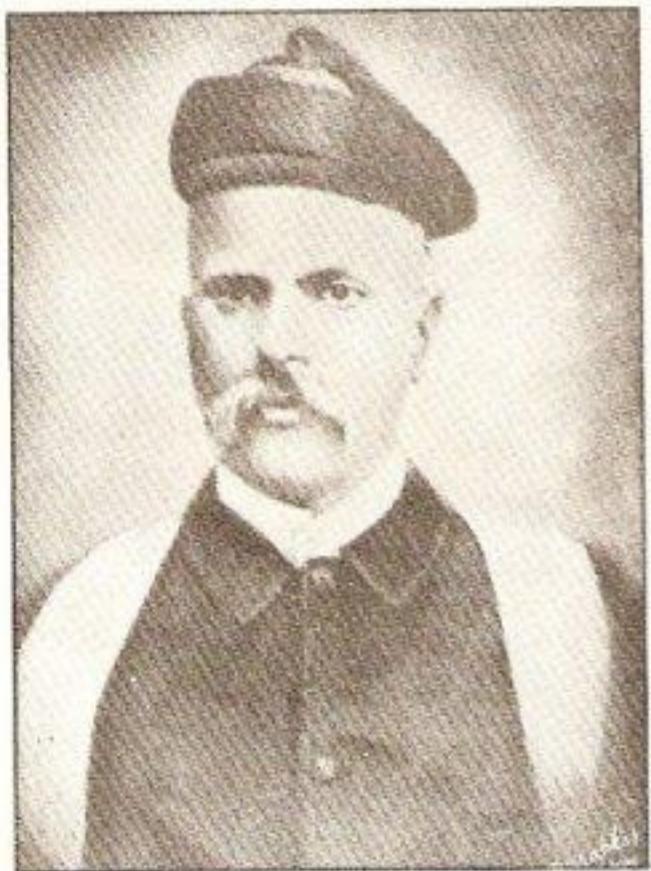


कै. पुरुषोत्तम पांडुरंग वाघ



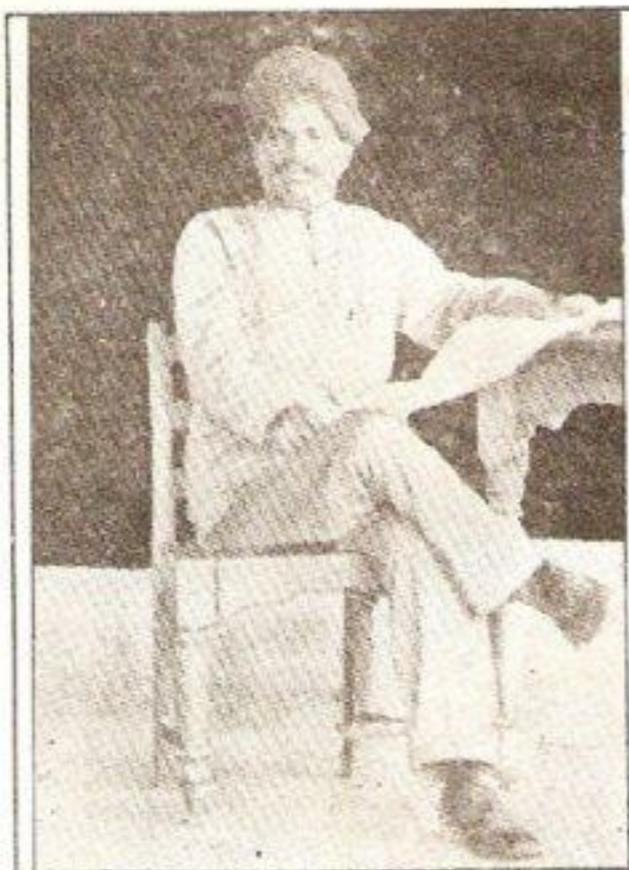
कै. प्रो. पांडुरंग भिकाजी उर्फ तात्यासाहेब नाईक

एम. ए. आद्य चिटणीस



कै. विठ्ठल तात्या देसाई,

एम. सी. इ.



टीप : संस्थापक व आद्य चिटणीस के अनंतराव गीताराम देसाई वी. ए. एलएल. वी., याचे छायाचित्र उपलब्ध नाही।
यावळल खेद होतो.

महोत्सवाचे अध्यक्ष

सुवर्ण महोत्सव

श्रीमंत मोतीराम नारायणराव देसाई टोपीवाले



हिंदू महोत्सव

'सकाळ' कार के, डॉ. नारायणराव भिकाजी परस्लेकर

एम्. ए. पीएच. डॉ.



अमृत महोत्सव

के. स. का. पाटील

माजी भाग्योर व केंद्रीय मंत्री



शताद्वी महोत्सव

डॉ. दत्ता सामंत

कामगार पुढारी, माजी लोकसभा सदस्य

अध्यक्ष



के. सोताराम रघुनाथ देसाई



के. बालकृष्ण वामनाजी गवास्कर



के. पांडुरंग वाद्यराव वातावलकर
बी. ए. एलएल. बी.



के. लक्ष्मण विठ्ठल सामंत
बी. ए. एलएल. बी.



के. श्रीधर आत्माराम नाईक
अंडवाळट



के. सम्भाराम सोताराम देसाई,
बी. ए., एल.सी.इ., बी.एसी., (एडवर्से),



के.रघुनाथ गणेश ट्रकूर,
जे. पी.



के. वामन श्रीधर पाटेकर,

शताब्दी महोत्सवी वर्षातील (१९९३-९४)

संस्थेचे पदाधिकारी व व्यवस्थापक मंडळ

क्रमांक संघर्ष

| | | |
|---------------------------------|---|--------------------------------------|
| अध्यक्ष | : | *** |
| उपाध्यक्ष | : | श्री. मोहन महादेव परुळेकर |
| | : | श्री. शिवराम अनंत सामंत |
| विषयस्त | : | डॉ. तुकाराम रामकृष्ण प्रभु |
| | : | श्री. वसंत शंकर नाईक |
| | * | श्रीमती सुशीलाबाई लक्ष्मण गव्हाणकर |
| खजिनदार | * | श्री. दत्तात्रेय सखाराम आजगांवकर |
| चिटणीस | : | श्री. विनायक नारायण नाईक |
| | : | श्री. नरसिंह नारायण पंतवालावलकर |
| | * | श्री. श्रीपाद शंकर पंतवालावलकर |
| | | व्यवस्थापक मंडळ |
| कार्याध्यक्ष (चेअरमन) | : | श्री. भास्कर माधवराव सामंत |
| उपकार्याध्यक्ष (कार्डिस चेअरमन) | : | श्री. जगन्नाथ भगवंत महाजन |
| सभासद | : | श्री. पंढरीनाथ विश्राम सामंत |
| | : | सौ. मीता नंदकुमार गाळवणकर |
| | : | श्री. श्रीपाद बाळकृष्ण पाटील |
| | : | श्री. जयंत दत्तात्रेय सामंत कोपराडकर |
| | : | श्री. सुंदर रामकृष्ण सामंत नेवाळकर |
| | : | श्री. सुधाकर सखाराम पाटकर |
| | : | श्री. रजनीनाथ विठ्ठल घोड |
| | : | डॉ. कु. विजया रघुनाथ ठाकूर |
| | : | सौ. जयश्री तुकाराम वालावलकर |
| | : | श्री. शाम रघुनाथ देसाई |

*** (दिनांक १४-११-९३ रोजी श्री. वामन श्रीधर परुळेकर दिवंगत झाल्यामुळे

उर्वरित कालावधीमध्ये अध्यक्षाचे पद रिकामे आहे.

वर * चिन्हाने दर्शविलेल्या पदाधिकाऱ्यांपैकी एक विषयस्त, खजिनदार व एक चिटणीस हे हुद्यान्वये

व्यवस्थापक मंडळाचे सभासद आहेत

शताब्दी महोत्सव

स्वागत समिति

| | |
|---|---|
| श्री. भास्कर माधवराव सामंत, वांड्रे (स्वागताध्यक्ष) | श्री. कृष्णाजी राजाराम खानोलकर, दादर |
| श्री. एकनाथ केशव ठाकूर, दादर | श्री. शांताराम शंकर ठाकूर, बोरिवली |
| डॉ. श्रीधर शांताराम आजगांवकर, दादर | सौ. निर्मला अविनाश सामंत प्रभावळकर, वांड्रे |
| श्री. वामन त्रिंबक सामंत, विरार | सौ. जयमाला जयेंद्र वालावलकर, गिरगांव |
| श्री. शांताराम कृष्णाजी पंतवालावलकर, कोल्हापूर | सौ. कमल शंकर नाईक, वांड्रे |
| श्री. दिनेश नागेश देसाई, दादर | डॉ. कमलाकर नरसिंह देसाई, मालवण |
| श्री. सीताराम नारायण देसाई, माहीम | डॉ. उमाकांत नारायण सामंत, परुळे |
| प्रा. कमलाकर नारायण तिरोडकर, मुंबई | श्री. सुरेश परशुराम नाईक, कुडाळ |
| श्री. मोतीराम नारायण देसाई टोपीवाले, मुंबई | श्री. रामचंद्र सखाराम गव्हाणकर, सावंतवाडी |
| श्रीमती नर्मदाबाई सीताराम देसाई टोपीवाले, मुंबई | श्री. नारायण आत्माराम तेंडुलकर, कोल्हापूर |
| डॉ. रवींद्र वामन रामदास, माटुंगा | श्री. बापूजी निलकंठ देसाई, पुणे |
| श्री. नंदकुमार सावळाराम परुळेकर, मुंबई | श्री. नारायण नरसिंह देसाई, पुणे |
| श्री. शशिकांत श्रीरंग प्रभु, मुंबई | श्री. लक्ष्मण जयराम परुळेकर, डोबिवली |
| श्री. चंद्रकांत काशीनाथ परुळेकर, रलागिरी | श्री. विकास दिगंबर पाटकर, डोबिवली |
| श्री. काशीनाथ रामचंद्र झारापकर, गोरेगांव | श्री. जगजीवन श्रीकांत प्रभु, मुलुंड |
| श्री. दिनकर मुकुंद परुळेकर, चेंबूर | श्री. मनोहर राजाराम खानोलकर, विक्रोळी |
| श्री. शरद जनार्दन झारापकर, म्हापसे | श्री. अरविंद लक्ष्मण पाटील पाटकर, पनवेल |
| श्री. अशोक रामचंद्र नेरकर, दादर | श्री. अनंत लक्ष्मण प्रभु, दादर |
| श्री. जयंत चंद्रकांत केळुसकर, अलिबाग | श्री. रामचंद्र दत्तात्रय पाटील, मुंबई |
| श्री. गजानन रघुनाथ तिरोडकर, मुंबई | श्री. कमलाकर लक्ष्मण वालावलकर, दादर |
| श्री. रमाकांत पीतांबर देसाई, मुंबई | श्री. मुकुंद गजानन देसाई, वांड्रे |
| श्री. रजनीकांत वासुदेव प्रभु, बोरिवली | श्री. दिनकर सखाराम देसाई, विलेपाले |
| श्री. नारायण कानोबा वालावलकर, दादर | श्रीमती आशालता विश्वनाथ ठाकूर, बोरिवली |
| श्री. गजानन वासुदेव प्रभु, गोरेगांव | श्री. राधाकिशोर मधुसूदन वाघ, दादर |
| श्रीमती लीला वासुदेव प्रभु, गोरेगांव | श्री. कृष्णकुमार रावजी गाळवणकर, अर्नाळ्या |
| श्री. अरविंद केशव नेरकर, गिरगांव | श्री. सतीश गजानन सामंत, गिरगांव |
| श्री. सुहास विश्वनाथ सामंत, गोरेगांव | श्री. जयंत दत्तात्रय सामंत कोपराडकर, दादर |
| श्री. विलास शिवराम सामंत, ठाणे | श्री. श्रीपाद शंकर पंतवालावलकर, दादर (निमंत्रक) |

शताब्दी महोत्सव

स्वागत समिति

| | |
|---|---|
| श्री. भास्कर माधवराव सामंत, वांड्रे (स्वागताध्यक्ष) | श्री. कृष्णाजी राजाराम खानोलकर, दादर |
| श्री. एकनाथ केशव ठाकूर, दादर | श्री. शांताराम शंकर ठाकूर, बोरिवली |
| डॉ. श्रीधर शांताराम आजगांवकर, दादर | सौ. निर्मला अविनाश सामंत प्रभावलकर, वांड्रे |
| श्री. वामन त्रिंबक सामंत, विरार | सौ. जयमाला जयेंद्र वालावलकर, गिरगांव |
| श्री. शांताराम कृष्णाजी पंतवालावलकर, कोल्हापूर | सौ. कमल शंकर नाईक, वांड्रे |
| श्री. दिनेश नागेश देसाई, दादर | डॉ. कमलाकर नरसिंह देसाई, मालवण |
| श्री. सीताराम नारायण देसाई, माहीम | डॉ. उमाकांत नारायण सामंत, परुळे |
| प्रा. कमलाकर नारायण तिरोडकर, मुंबई | श्री. सुरेश परशुराम नाईक, कुडाळ |
| श्री. मोतीराम नारायण देसाई टोपीवाले, मुंबई | श्री. रामचंद्र सखाराम गव्हाणकर, सावंतवाडी |
| श्रीमती नर्मदाबाई सीताराम देसाई टोपीवाले, मुंबई | श्री. नारायण आत्माराम तेंडुलकर, कोल्हापूर |
| डॉ. रवींद्र वामन रामदास, माटुंगा | श्री. बापूजी निलकंठ देसाई, पुणे |
| श्री. नंदकुमार सावळाराम परुळेकर, मुंबई | श्री. नारायण नरसिंह देसाई, पुणे |
| श्री. शशिकांत श्रीरंग प्रभु, मुंबई | श्री. लक्ष्मण जयराम परुळेकर, डोबिवली |
| श्री. चंद्रकांत काशीनाथ परुळेकर, रलागिरी | श्री. विकास दिगंबर पाटकर, डोबिवली |
| श्री. काशीनाथ रामचंद्र झारापकर, गोरेगांव | श्री. जगजीवन श्रीकांत प्रभु, मुलुंड |
| श्री. दिनकर मुकुंद परुळेकर, चेंबूर | श्री. मनोहर राजाराम खानोलकर, विक्रोळी |
| श्री. शरद जनार्दन झारापकर, म्हापसे | श्री. अरविंद लक्ष्मण पाटील पाटकर, पनवेल |
| श्री. अशोक रामचंद्र नेरकर, दादर | श्री. अनंत लक्ष्मण प्रभु, दादर |
| श्री. जयंत चंद्रकांत केळुसकर, अलिबाग | श्री. रामचंद्र दत्तात्रय पाटील, मुंबई |
| श्री. गजानन रघुनाथ तिरोडकर, मुंबई | श्री. कमलाकर लक्ष्मण वालावलकर, दादर |
| श्री. रमाकांत पीतांबर देसाई, मुंबई | श्री. मुकुंद गजानन देसाई, वांड्रे |
| श्री. रजनीकांत वासुदेव प्रभु, बोरिवली | श्री. दिनकर सखाराम देसाई, विलेपाले |
| श्री. नारायण कानोबा वालावलकर, दादर | श्रीमती आशालता विश्वनाथ ठाकूर, बोरिवली |
| श्री. गजानन वासुदेव प्रभु, गोरेगांव | श्री. राधाकिशोर मधुसूदन वाघ, दादर |
| श्रीमती लीला वासुदेव प्रभु, गोरेगांव | श्री. कृष्णकुमार रावजी गाळवणकर, अर्नाळा |
| श्री. अरविंद केशव नेरकर, गिरगांव | श्री. सतीश गजानन सामंत, गिरगांव |
| श्री. सुहास विश्वनाथ सामंत, गोरेगांव | श्री. जयंत दत्तात्रय सामंत कोपराडकर, दादर |
| श्री. विलास शिवराम सामंत, ठाणे | श्री. श्रीपाद शंकर पंतवालावलकर, दादर (निमंत्रक) |

निधि संकलन समिती

| | |
|---|--|
| श्री. मोहन महादेव परुळेकर, माहीम (अध्यक्ष) | श्री. आनंद शिवराम सामंत, मुलुंड |
| श्री. नरसिंह नारायण पंतवालावलकर, डोबिवली | श्री. शाम रघुनाथ देसाई, गोरेगांव |
| श्रीमती सुशीलाबाई लक्ष्मण गवाणकर, वसई | श्री. दीपक गजानन गवाणकर, वसई |
| श्री. सुंदर रामकृष्ण सामंत नेवाळकर, गोरेगाव | श्री. सतीश दत्तात्रय देसाई, मुंबई |
| श्री. मनोहर त्रिबंक सामंत, विरार | श्री. शशिकांत तुकाराम बांबडेंकर, वांद्रे |
| श्री. द्वारकानाथ साबाजी दाभोलकर, सांताकुंज | श्री. प्रभाकर रामचंद्र देसाई, दादर |
| श्री. रजनीनाथ विठ्ठल धोंड, सांताकुंज | श्री. पद्मनाथ हरी महाजन, गोरेगांव |
| श्री. वसंत कानोबा झारापकर, खार | श्री. दिगंबर वासुदेव सामंत, अंधेरी |
| श्री. वसंत विष्णु देसाई, गोरेगांव | श्री. दत्तात्रय सखाराम आजगांवकर, गिरगांव (नियंत्रक) |
| श्री. विजय बाळकृष्ण कोचरेकर, डोबिवली | |

स्मरणिका समिती

| | |
|--|--|
| श्री. जगन्नाथ भगवंत महाजन, वांद्रे (अध्यक्ष) | श्री. अरुण सुधाकर गोसावी, गोरेगाव |
| श्री. श्रीपाद बाळकृष्ण पाटील, दादर (नियंत्रक) | श्री. अच्युत वामन तेंडुलकर, विलेपाले |
| श्री. मधुकर लक्ष्मण सामंत, गोरेगाव | डॉ. किशोर बळवंत महाजन, ठाणे |
| श्री. सुधाकर रावजी सामंत, दादर | श्री. दीपक श्रीकृष्ण वालावलकर, डोबिवली |
| डॉ. कु. विजया रघुनाथ ठाकूर, मुंबई | सौ. स्नेहल मधुकर मुण्गेकर, विलेपाले |
| सौ. मिता नंदकुमार गाळवणकर, वसई | सौ. जयश्री तुकाराम वालावलकर, मुलुंड |
| श्री. सुधाकर सखाराम पाटकर, गिरगांव | श्री. विनायक नारायण नाईक, गिरगांव |

कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाज शताब्दि महोत्सव निवेदन

कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाज इ. स. १८९४ मध्ये अगदी लहान प्रमाणात सुरु झाला. सुरवातीपासून सतत वाढ होत गेलेल्या ह्या संस्थेने गेली शंभर वर्षे समाजातील गरजु मुलांना शिक्षणासाठी मदत करण्याचे जे पवित्र कार्य प्रभावीपणे केले आहे, त्याबदल कृतज्ञता व आनंद व्यक्त करण्याकरिता संस्थेचा शताब्दि महोत्सव भव्य प्रमाणात साजरा करण्यात आला आहे.

ज्या काळात या संस्थेची स्थापना, आपल्या समाजधुरिणांनी केली, त्या काळात हा देश ब्रिटिशांच्या सतेखाली होता. त्या सत्ताधाऱ्यांनी स्वतःचे साम्राज्य चालविण्यापुरत्या जनतेच्या शिक्षणाच्या सोयी निर्माण केल्या होत्या. मुंबईसारख्या मोठ्या इलाख्याच्या ठिकाणी व काही मध्यम शहरांमध्ये फक्त उच्च शिक्षणाची व्यवस्था होती. पण सामान्यतः जिल्ह्याच्या ठिकाणी केवळ माध्यमिक शिक्षणाची, तर मोठ्या गांवांनी प्राथमिक शिक्षणाची सोय जेमतेम होती. त्या काळी आपला समाज बहुतांशाने कुडाळ प्रांतातील लहानलहान गांवांमध्ये शेतीभाती आणि लहानसहान व्यवसायात गुंतलेला होता. कुटुंबाची आर्थिक स्थिती जेमतेमच असे. त्यामुळे उच्च प्राथमिक वा माध्यमिक शिक्षण घ्यावयाचे म्हटले, तरी गांवातील घरापासून दूर जाऊन राहणे क्रमप्राप्त होई. महाविद्यालयीन शिक्षणासाठी तर मुंबई, पुणे, कोल्हापूर अशा दूरच्या मोठ्या शहरांत जावे लागे. अशा परिस्थितीमध्ये आर्थिक पाठबळाच्या अभावी समाजातील अनेक उदयोन्मुख तरुणांना शिक्षणाला वंचित व्हावे लागे.

त्यातही मोठ्या धडपडीने स्वतःच्या शिक्षणासाठी म्हणून मुंबईत आलेल्या कै. अनंत सीताराम प्रभुदेसाई, कै. रा. सा. गणेश रघुनाथ पाटकर, कै. बाळकृष्ण भिकाजी नाईक, कै. पुरुषोत्तम पांडुरंग वाघ व कै.

पांडुरंग भि. नाईक अशा काही तरुणांनी आपल्या समाज बांधवांना शिक्षणाचा लाभ मिळावा ह्या विचाराने विद्यावृद्धि समाज ह्या संस्थेची कल्पना मूर्त स्वरूपात आणली. त्यांनी लावलेल्या लहानशा रोपट्याचे आज विशाल अशा आधारवडात रूपांतर झाले आहे. गेल्या शंभर वर्षांमध्ये अनेक ज्ञात व अज्ञात बांधवांनी आर्थिक सहाय्य देऊन, तसेच स्वतः परिश्रम करून या संस्थेची वाढ केली आहे. त्यांच्या कार्याची दखल घेण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत स्मरणिकेमध्ये इतरत्र केला आहे. त्या सर्व समाजधुरिणांचे, देणगीदारांचे, कार्यकर्त्त्यांचे व संस्थेच्या मदतीचे सार्थक करणाऱ्या माजी विद्यार्थ्यांचे या प्रसंगी आम्ही कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करीत आहोत आणि पुढील काळांत संस्थेचा हा वृक्ष उत्तम प्रकारे जोपासला जाऊन समाजबांधवांची अधिक सेवा घडो अशी सर्व समाजाच्या वर्तीने ईश्वर चरणी विनम्र प्रार्थना करितो.

संस्थेतर्फे सध्या प्रतिवर्षी ३०० हून अधिक विद्यार्थ्यांना तीन लक्ष रुपयांच्या शिष्यवृत्यांचे अधिदान करण्यात येते. प्राथमिक शिक्षणापासून विश्वविद्यालयीन शिक्षणार्पयत, ही मदत दिली जात असून समाजबांधवांकडून मिळणाऱ्या वाढत्या आर्थिक सहाय्यामुळे, गेल्या काही वर्षांपासून परदेशी शिक्षणासाठी जाणाऱ्या विद्यार्थ्यांना देखील मर्यादित मदत देण्याचा उपक्रम सुरु केला आहे. आता पदव्युत्तर अभ्यासक्रमासाठी काही भरीव सहाय्य उपलब्ध करावे अशी कल्पना संस्थेच्या विचाराधीन आहे.

सध्याच्या परिस्थितीचा विचार केल्यास सार्वत्रिक वाढत्या महागाईबरोबर मुलांच्या शिक्षणाचा खर्च सुद्धा वाढत असल्यामुळे विद्यार्थ्यांना दिल्या जाणाऱ्या शिष्यवृत्यांमध्ये वाढ करणे अपरिहार्य झाले आहे. त्यासाठी प्रस्तुत महोत्सवाच्या निमित्ताने केलेल्या

आवाहनाला ज्ञातिबांधवांकदून उत्तम प्रतिसाद मिळाला असल्याचे नमूद करतांना आम्हाला आनंद होत आहे. संस्थेला लहानमोठ्या देणाऱ्या देणाऱ्या, स्मरणिकेसाठी जाहिराती उपलब्ध करणाऱ्या, तसेच इतर वेगवेगळ्या प्रकारे मदत करणाऱ्या सर्वांचे आभार मानून सर्वांची समाजाच्या या व इतर सर्व संस्थांवर अशीच कृपादृष्टी राहो अशी इच्छा व्यक्त करतो. अर्थात इथे एका प्रमुख देणगीचा उल्लेख करणे आवश्यक आहे. संस्थेचे एक भूतपूर्व चिटणीस कै. श्रीरंग आर. प्रभू ह्यांचे सुपुत्र श्री. सुधाकर श्रीरंग प्रभू हे व्यवसायाच्या निमित्ताने गेली कित्येक वर्षे इंग्लंडमध्ये स्थायिक झाले असून, त्यांचे आपल्या समाजबांधवांकडे कायम लक्ष असते. त्यानी अलीकडे आई-वडिलांच्या स्मरणार्थ म्हणजे कै. श्रीरंग रघुनाथ प्रभू व कै. श्रीमती ताराबाई श्रीरंग प्रभू ह्यांचे स्मरणार्थ संस्थेला एकूण रुपये ५,०८,००० ची देणगी दिली आहे. त्यांचे आभार मानावे तितके थोडे आहेत.

आता आपला समाज देशात व देशाबाहेरही सर्वदूर पसरलेला आहे. तेव्हा मुंबई बाहेरील ज्ञाति-बांधवांना संस्थेच्या शताब्दी महोत्सवात सहभागी करावे ह्या हेतूने कुडाळ, येथे दि. २३ मे १९९३ रोजी, पुणे येथे २ सप्टेंबर १९९३ रोजी आणि डोंबिवली येथे दि. २६ डिसेंबर १९९३ रोजी सम्मेलने घेतली होती. ह्या सर्व सम्मेलनांना स्थानिक बांधवांनी उपस्थित राहून उत्तम प्रतिसाद दिल्याबदल आम्ही त्यांचे आभारी आहेत. कोल्हापूरला दिनांक २ ऑक्टोबर रोजी व्हावयाचे संमेलन, तेव्हा झालेल्या भूकंपामुळे स्थगित करावे लागले. मात्र दिनांक ६ मार्च १९९४ रोजी मुंबईत दादर येथे सावरकर स्मारक सभागृहामध्ये शताब्दी महोत्सवाचा सांगता समारंभ अंतिशय भव्य प्रमाणात साजरा करण्यांत आला.

आरंभीच्या काळांत संस्थेची कचेरी चिटणीसांच्या घरीच असे. पण पुढे कै. रा. ब. अनंत शिवाजी देसाई टोपीवाले चौरिटीच्या ट्रस्ट डीडमध्ये कै. नारायणराव

देसाई यांनी औदायनि तरतूद केल्याप्रमाणे तिथे कायम जागा उपलब्ध झाली. त्यामुळे संस्थेला स्थैर्य येऊन तिचा चांगला विकास झाला. संस्था त्यांची कृणी आहे.

शताब्दी महोत्सवाला आर्थिक मदत मिळावी म्हणून कार्यकारी मंडळाच्या सभासदांनी व कार्यकर्त्यांनी वसई, ठाणे, डोंबिवली, वाशी, पुणे, मालवण, कुडाळ, वेंगुलें, सावंतवाडी, गोवा या भागांत वारंवार दौरे केले. स्थानिक कार्यकर्त्यांनी त्यांना दिलेल्या सहकार्यामुळेच देणाऱ्यांची रक्कम आतापर्यंत सुमारे एकोणीस लक्ष रुपये झाली आहे. या कामामध्ये श्री. द्वारकानाथ साबाजी दाभोलकर सांताक्रूज, श्री. दिगंबर वा. सामंत अंधेरी, श्री. सदानंद ज. पाटकर, मुलुंड, श्री. दिलीप शां. ठाकूर बोरिवली, श्री. अच्युत वा. तेंडुलकर विलेपालें, डॉ. नंदकुमार स. गाळवणकर वसई, ह्यांनी आम्हाला निधी व जाहिरातीसाठी विशेष मदत केली आहे.

स्मरणिका तयार करण्याची मेहनत सर्वश्री जगन्नाथ भ. महाजन, श्री. मधुकर ल. सामंत, श्रीपाद शं. पंतवालावलकर, श्री. दत्तात्रेय स. आजगांवकर आणि नरसिंह ना. पंतवालावलकर ह्यांनी घेऊन उत्तम प्रकारचा अंक प्रकाशित केला आहे.

मे. टाऊन प्रिंटिंग प्रेसचे संचालक श्री. शांताराम कृष्णाजी देसाई ह्यांनी स्मरणिकेची छपाई परिश्रम घेऊन उत्तम प्रकारे केली आहे.

वरील सर्व व्यक्तीचे, देणगीदारांचे, जाहिरातदारांचे व ज्ञाती बांधवांचे आभार मानून सर्व समाजाने संस्थेबदल अशीच आपुलकी ठेवावी अशी विनंती करून हे निवेदन पुरे करतो.

भास्कर माधवराव सामंत

चेरमन

व्यवस्थापक मंडळ

कुडाळ देशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाज

(१८९४-१९१४)

समाजाच्या शंभर वर्षांतील कार्याचे समालोचन

प्रास्ताविक

कुडाळ देशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाज या संस्थेस यंदा १०० वर्षे पूर्ण झाली आहेत ही अभिमानाची गोष्ट होय. त्या निमित्ताने शताब्दी महोत्सव साजरा करून आता स्मरणिका सादर करण्यास समाजास आनंद होत आहे. दक्षिणेत, मोगरनाड, बारकोर प्रांतापासून उत्तरेत दिल्ली, किंवद्दुन परदेशातही विस्तारलेल्या या वृक्षाचे ज्यांनी विजारोपण केले, द्रव्यरूप खतपाणी घालून ज्यांनी त्याला जोम आणला, ज्या कार्यकर्त्यांनी व स्वयंसेवकांनी त्याला दृढमूल व विस्तीर्ण होण्यास मदत केली, त्या सवाचे त्यांनी केलेल्या विद्यादानाच्या महनीय व पवित्र कामगिरीबद्दल आम्ही ऋणी आहेत.

आपण सुरु केलेल्या आणि आरंभीच्या काळांत जोपासलेल्या ह्या संस्थेची भरधोस वाढ झालेली पाहण्यास १०० वर्षांपूर्वीच्या त्या महापुरुषांपैकी आता कुणीही हयात नाहीत. तेव्हा त्यांच्या पुण्य सृतीस अभिवादन करून त्यांच्याविषयी कृतज्ञता प्रकट करणे हे आपले कर्तव्य आहे.

मानवाचे आयुष्म मर्यादित असल्याने आपल्यापैकी कुणा कर्तव्यगार व्यक्तीच्या आयुष्याला ६० वर्षे पूर्ण झाल्यावर आपण षष्ठ्यविद्पूर्ती समारंभ करून “जीवेत शरदः शतम्” असे म्हणतो. आपल्या संस्थेने तर आता शंभर वर्षे पूर्ण केली आहेत. तिला “चिरंजीविभवेत” असेच म्हटले पाहिजे. पण कोणत्याही संस्थेचे चिरस्थायित्व कार्यकर्त्यांच्या सेवेवर व उत्साहावरच अवलंबून असते. तेव्हा सतत नवे कार्यकर्ते पुढे येऊन संस्थेत नवचैतन्य निर्माण करण्याकरिता विशिष्ट टप्प्यांवर उत्सव साजे-

करण्याला महत्व असते. संस्थेच्या गत आयुष्यातील कार्यकर्त्यांनी कोणती कामगिरी केली, संस्थेची सद्यःस्थिती कशी आहे याचा आढावा घेऊन पुढील काळात कोणते कार्य होणे जरुरीचे आहे याची रुपरेषा झातीपुढे ठेवण्यासाठी व कार्य करणाऱ्यांना प्रोत्साहन मिळण्यासाठी या उत्सवांचा चांगला उपयोग होतो.

विद्यावृद्धि समाजाने १९४४ साली सुवर्ण महोत्सव, १९५५ साली हीरक महोत्सव आणि १९७० साली अमृत महोत्सव अत्यंत उत्साहाने साजरा केला असून शताब्दी महोत्सवाचा सुदिन आता १९९४ साली उगवला आहे. हा सोन्याचा दिवस दाखविण्यासाठी ज्यानी हातभार लावला त्या सवाचे आभार मानून हा ज्ञानदिप अखंड तेवत राहो अशी ईश्वरापाशी प्रार्थना करून हा शताब्दि महोत्सव विशेषांक झातीत सादर करीत आहोत.

कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मणांची पूर्वपीठिका

वेदांचे प्रामाण्य मानणारे पण शेतीभाती व व्यापार उदिमात लक्ष घालणारे आणि परिस्थितीनुसार शस्त्रास्त्र विद्येत पारंगत होउन पराक्रम गाजवणारे उत्तरेकडील गौडदेशांचे अनेक पराक्रमी आर्यकुलोत्पन्न ब्राह्मण खिस्तोत्तर पांचव्या ते दहाव्या शतकाच्या दरम्यान दक्षिण महाराष्ट्रातील कोकण प्रांतात आले. त्यापैकी ज्यांनी कुडाळच्या परिसरात वासतव्य केले, ते कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मण म्हणून ओळखले जाऊ लागले. अल्प काळातच कोकणाच्या पूर्वापार स्थानिक रहिवाशांशी नीट जमवून घेऊन, त्यांच्या रीतीभीती, भाषा व्यवहार, दैनंदिन राहणी, इत्यादींचा सोयीस्करपणे अवलंब करण्याचे कार्य या मंडळींनी फार झापाट्याने केले.

केवळ इतकेच नव्हे तर या कुडाळदेशकर गौड ब्राह्मणांनी कोंकणातील कुडाळ, फोंडा पंचमहाल, कारवार, मिरज व अंकोला या पांच प्रांतावर आपली राजसत्ता प्रस्थापित करून सुमारे सहाशे वर्ष राजवैभव उपभोगले पण पुढे त्यांचे राज्य १६९७ साली अस्तात गेले. पुढील प्रतिकूल काळात कुडाळदेशकरांची पांगापांग झाली. कित्येक दक्षिणेस मोगरनाड, बारकोर कालीकत वर्गैरे प्रांतात गेले; कित्येक पूर्वेस आजरे, बेळगांव, धारवाड वर्गैरे ठिकाणी गेले; कित्येक वसई व अर्नाळा येथे गेले व बाकीचे निवळ शेतीवर अवलंबून राहून मूळ प्रांतातच राहिले. गरिबी व विद्येचा अभाव यामुळे त्यांतील बहुसंख्य ज्ञातीबांधव इतर ज्ञातींच्या स्पर्धेत मागे पढू लागले.

विद्यावृद्धि समाजाची गंगोत्री

एकोणिसाब्या शतकाच्या शेवटच्या दशकांत या ज्ञातीचे जे पंधरा वीस विद्यार्थी मोठ्या प्रयत्नाने मुंबईत आले होते ते गिरगावांत नातलगांकडे राहून विद्याभ्यास करीत. परीक्षा व नोकरी यावर त्यांची दृष्टी असे. ज्ञातीच्या अशा सर्व विद्यार्थीस एकत्र आणण्याच्या उद्देशाने दि. १४—१—१८९४ रोजी “गौड ब्राह्मण विद्यार्थी सभा” स्थापन झाली. त्यामध्ये मुख्यतः कै. बाळकृष्ण भिकाजी नाईक, कोल्हापुर, कै. रा. सा. गणेश रघुनाथ पाटकर, नाशिक व कै. गजानन यशवंत परुळेकर या विद्यार्थ्यांचा सहभाग होता. पुढे दि. २७—५—१८९४ रोजी ज्ञातीच्या काही गृहस्थांची एक खासगी सभा या तरुणांच्या प्रयत्नाने भरविण्यात आली. या सभेत, गरीब विद्यार्थीस हरेक प्रयत्न करून मदत करण्याचे ठरले. तशी जाहीर पत्रिका काढण्यात आली. यानंतर कै. रामचंद्र बाजी गाळवणकर यांच्या घरी वसईला आणि कै. जगत्राथ बाजी गाळवणकर यांच्या अध्यक्षतेखाली अर्नाळ्याला सभा होऊन विद्यावृद्धीने ज्ञातीची उन्नती करण्याचे ठरले. फिरुन कै. केशवराव रामचंद्र गाळवणकर यांच्या अध्यक्षतेखाली कै. बाबाजी अनंत तेंडोलकर यांच्या मुंबईतील हरिवरदा छापखान्यात एक सभा झाली. कै. लक्ष्मण भिकाजी कोंडकर यांनीही तीत प्रामुख्याने भाग घेतला होता. विद्यावृद्धीसाठी निधी उभारावा असे या सभेत ठरले.

कै. अनंत सीताराम देसाई, हे चिटणीस व कै. पुरुषोत्तम पांडुरंग वाघ हे खजिनदार असे दोन पदाधिकारी निवडण्यांत आले. याच वेळी फंडाची वर्गणी जमा करण्याकरिता एक जाहीर पत्रिका छापून प्रसिद्ध करण्यांत आली होती. या सभेनंतर पुनः दोन महिन्यांनी एक सभा कै. तात्या लक्ष्मण वालावलकर, सुभेदार यांच्या घरी झाली. पण अर्थात या संस्थेच्या स्थापनेची मूळ कल्पना काही विद्यार्थ्यांची असून, तत्कालीन ज्येष्ठ ज्ञातिगृहस्थांनी त्या कल्पनेला मनःपूर्वक प्रोत्साहन देऊन ती मूर्तस्वरूपात आणली, ही वस्तुस्थिती आहे.

१८९५ सालच्या उन्हाळ्याच्या सुटीत समाजाच्या कामास प्रारंभ होऊन कोंकण, बेळगांव वर्गैरे प्रांती वर्गणी जमा करण्याची खटपट सुरु झाली. समाजाची पहिली वार्षिक सभा १८९५ सालच्या जून महिन्यात कै. बाळकृष्ण वामनाजी गव्हाणकर यांच्या अध्यक्षतेखाली कै. तात्या लक्ष्मण वालावलकर, सुभेदार यांच्या घरी मुंबई येथे झाली. सभेमध्ये समाजाच्या नियमांचा खरडा करण्यासाठी पुढील सद्गृहस्थांची एक समिती नेमण्यांत आली. १) कै. अनंत सीताराम देसाई, २) कै. पुरुषोत्तम पांडुरंग वाघ, ३) कै. प्रो. पांडुरंग भिकाजी नाईक, ४) कै. हरि भिकाजी सामंत, ५) कै. विष्णु बाळकृष्ण वायंगणकर आणि ६) कै. विठ्ठल तात्या देसाई, या समितीने एक नियमांचा खरडा तयार करून व नंतर सभासदांची एक साधारण सभा मुंबई येथे कै. रा. ब. लक्ष्मण नारायण आजगांवकर यांच्या अध्यक्षतेखाली भरवून त्या सभेपुढे वरील नियम सादर केले. नंतर १८९६ सालच्या मे महिन्यात दुसरी वार्षिक सभा पुनः रा. ब. आजगांवकर यांच्या अध्यक्षतेखाली होऊन व्यवस्थापक मंडळ व इतर पदाधिकारी यांची निवड करण्यात आली. मालवण, वेंगुर्ले, सावंतवाडी, रत्नगिरी, मुंबई, वसई, ठाणे, पुणे, कोल्हापुर, बेळगांव व इतर प्रांत याकरिता विभागवार सहाय्यकारी मंडळेदेखील निवडण्यांत आली. सोलापूर, रत्नाम, विरमगाव, इंदूर, गोंडळ (संस्थान) अशा काही प्रांतांकरिता विशेष प्रतिनिधी नेमण्यात आले. याशिवाय वरील सभेत समाजाचे नियम ठरविण्यात आले व समाज चिरकाल राहावा

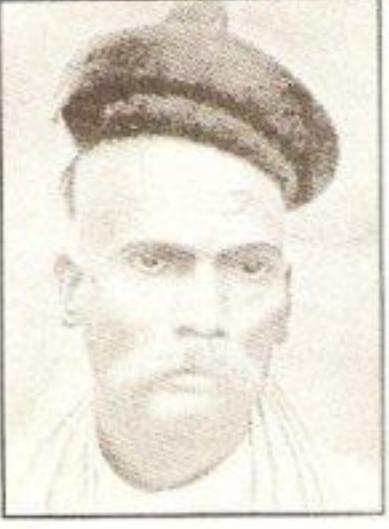
ट्रस्टी



कै. राववहादुर अनंत शिवाजी देसाई, टोंडवाले



कै. दामोदर वामनाजी तिरोडकर



कै. जगन्नाथ वाजाजी गावळवणकर



कै. कंशवराव रामचंद्र गावळवणकर



कै. मधुसुदन पूर्ण्योत्तम वाय



कै. डॉ. दत्तात्रेय गोपाळ तेंडुलकर
एम्. बी. बी. एम्.

रवजिनदार



कै. श्रीमंत नारायणराव अनंत देसाई, टोंडवाले



कै. नरसिंह भाऊ ठाकूर

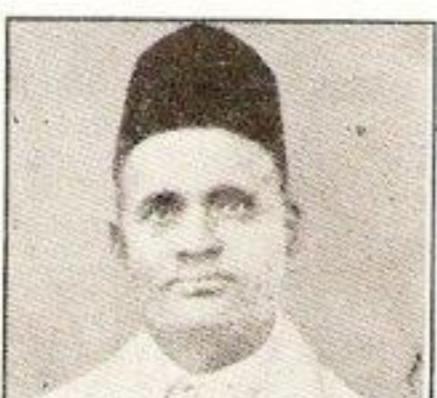
कार्यकर्ते



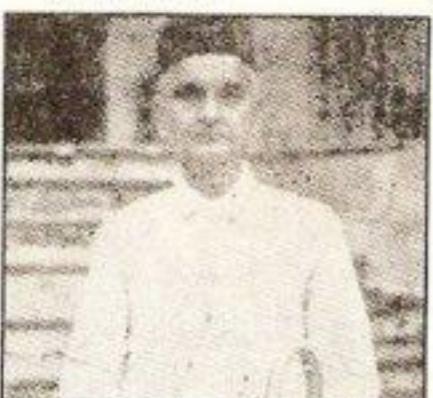
के. डॉ. हरि शिवराम पत्लेकर
एम. बी. बी. एम.



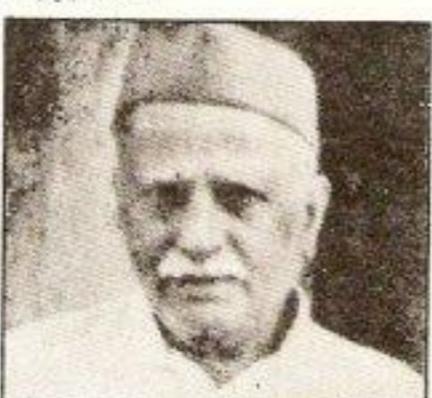
बै. डॉ. भिकाजी सिताराम नाईक
एम. बी. बी. एस., जै. पी.



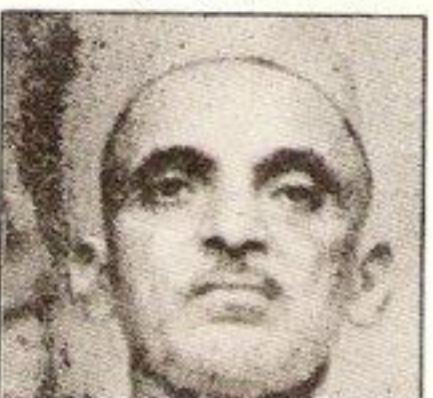
के. गणपत सूर्योजी देसाई



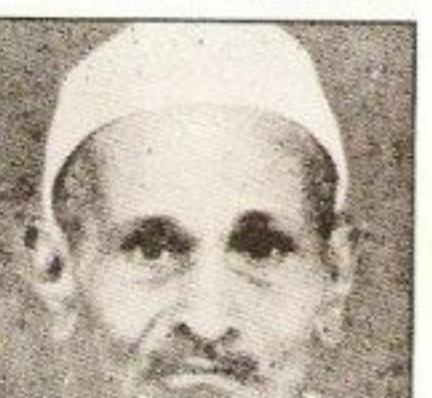
के. पांडुरंग पुंडलक सरनाईकर



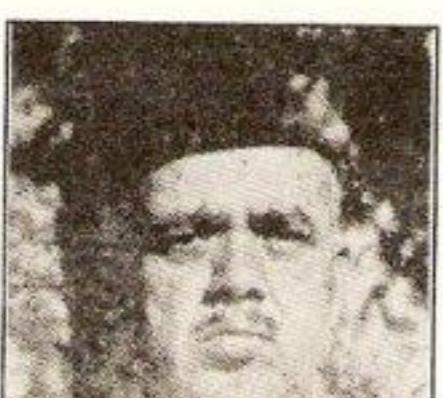
के. नारायण बाबाजी आजगोंदकर



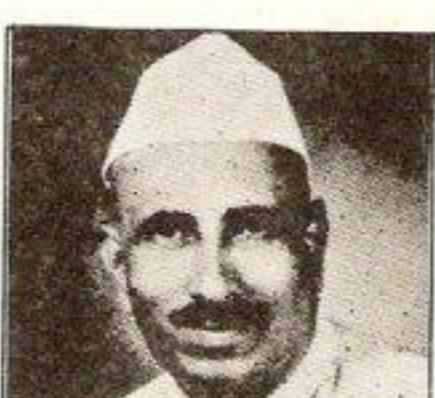
के. नारायण गोविंद राजवंडकर



के. गणेश शिवराम सामंत



के. बालकृष्ण जगन्नाथ सामंत



के. यशवंत कृष्ण उफ़ दादासाहेब पत्लेकर



के. गणेश रामचंद्र प्रभूखानोलकर

म्हणून १८६० च्या २१ व्या अँकटप्रमाणे तो रजिस्टर करण्याचे सर्वानुमते ठरले. प्रत्यक्षात पुढे १९०२ मध्ये समाज रजिस्टर झाला.

समाजाने नेमलेल्या सहाय्यकारी मंडळांचे काम म्हणजे फंडासाठी मेहनत घेऊन निधि गोळा करणे, विद्यार्थी निवडून काढणे व जे विद्यार्थी फंडातून शिष्यवृत्ती मिळवीत असतील त्यांच्या अभ्यासावर व इतर प्रगतीवर देखरेख ठेवणे हे होते.

समाजाची पहिली पंचवीस वर्षे (१८९४ ते १९१८)

जून १८९४ सालापासून समाजाने विद्यार्थ्यांस शिष्यवृत्त्या देण्यास प्रारंभ केला. या साली चार विद्यार्थ्यांस शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या होत्या. पण त्यापैकी एक विद्यार्थी शाळेत दाखल झाला नाही व दुसऱ्याने शिक्षणक्रम पुढे चालू ठेवण्याचे सोडूनच दिले. बाकी राहिलेले दोन विद्यार्थी म्हणजे त्या वेळी सावंतवाडी हायस्कूलात मॉट्रिकच्या वर्गात शिकत असलेले कै. शिवराम बाबाजी पाटील व रत्नागिरी हायस्कूलात त्याच वर्गात असलेले कै. दत्तात्रय यशवंत पाटकर हे होत. कै. पाटील हे पुढे सब. अंसिस्टंट सर्जन झाले. सेवानिवृत्त झाल्यावर ते पिंगुळी येथे स्थायिक झाले होते. कै. पाटकर हे काही वर्षे शाहापूर येथे पोलीस प्रॉसिक्युटर होते. १९११ साली मुंबई येथे ते अकाली कालवश झाले.

मालवण येथे १८९९ साली भरलेल्या समाजाच्या पांचव्या वार्षिक सभेत, समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांची त्रैवार्षिक निवडणूक झाली. तीत कै. अनंतराव देसाई हे चिटणीस व कै. प्रो. पांडुरंग भिकाजी नाईक, हे व्यवस्थापक मंडळाचे सभासद म्हणून निवडून आले. परंतु वार्षिक सभेनंतर थोड्याच दिवसांत समाजाचे अध्यक्ष श्री. सीताराम रघुनाथ प्रभू देसाई, वकील हे व त्यानंतर लागलीच त्यांचे पुत्र व समाजाचे चिटणीस श्री. अनंतराव देसाई यांचे निधन झाले. १८९९ सालानंतर कै. पांडुरंग भिकाजी उर्फ तात्यासाहेब नाईक हे चिटणीस झाले. पण कै. प्रो. तात्यासाहेब यांचे वास्तव्य बडोद्यासारख्या दूरच्या ठिकाणी असल्यामुळे आणि कै. हरि सूर्याजी देसाई व कै. दिगंबर वासुदेव देसाई या

मुंबईतील कार्यकर्त्यावर जास्त भार पडत असल्यामुळे समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाने कै. गणेश मुकुंद परुळेकर, वकील, यांची समाजाचे दुव्यम चिटणीस म्हणून निवड केली व ती १९०१ सालच्या समाजाच्या वार्षिक सभेत कायम करण्यात आली. तत्पूर्वी जून १९०० पासून समाजाने सहा विद्यार्थ्यांना मिळून दरमहा रुपये ३४ च्या शिष्यवृत्त्या सुरु केल्या.

दि. ८ जून १९०२ रोजी वसई येथील समाजाच्या वार्षिक सभेत समाजाचे मेमोरांडम ऑफ एसोसिएशन मंजूर करण्यात येऊन पुढे त्याच साली दि. १६ डिसेंबर रोजी विद्यावृद्धि समाज रजिस्टर करण्यात आला. वरील वार्षिक सभेत समाजाची त्रैवार्षिक निवडणूक झाली, व घटनेप्रमाणे या पुढे समाजाची मुख्य कचेरी मुंबई येथे असावी असे ठरले.

१९०३ साल अखेर समाजास १० वर्षे पुरी झाली. त्यासाली १० विद्यार्थ्यांस रुपये ६५०/- ची मदत झाली व समाजाची साल अखेर शिल्लक रुपये ८, ३२१-६-८ होती. १९०४ साली फंडाच्या खचनि दहा पेट्या तयार करून ठिकठिकाणी ठेवण्यात आल्या व त्याच साली या पेट्यांतूनही समाजास निधी मिळू लागला. समाजाचे पहिले अध्यक्ष कै. सीताराम रघुनाथ देसाई यांनी आपल्या मातोश्रीच्या नांवे समाज स्थापनेपासून रुपये ४० ची वार्षिक शिष्यवृत्ती सुरु केली होती. समाजाची हीच पहिली स्वतंत्र शिष्यवृत्ती. कै. भाऊ रघुनाथ ठाकूर यांनी १९२० साली खास रुपी शिक्षणासाठी रु. २००/- दिले.

कै. गणेश मुकुंद परुळेकर यांनी १९०५ सालच्या एप्रिल महिन्यात आपल्या दुव्यम चिटणीस पदाचा राजीनामा दिला आणि ते वसईला वकिली करू लागले. त्यात यशस्वी होऊन त्यांनी पुढे गौड ब्राह्मण झातीचा इतिहास लिहिला. त्यांच्या जागी कै. हरि सूर्याजी देसाई यांची निवड झाली.

दि. ३१ डिसेंबर १९०८ रोजी समाजाला १५ वर्षे पुरी झाली. त्या साली समाजाने १९ विद्यार्थ्यांच्या शिष्यवृत्त्यांसाठी रुपये ९२८ खर्च केले. त्या सालअखेर समाजाचे कायम भांडवल रुपये १०, ३५६-१२-११ होते. १९०९ सालच्या समाजाच्या वार्षिक सभेत

शिष्यवृत्त्यांच्या नियमांत फेरफार करून त्यांची रक्कम वाढविण्यात आली. १९०८ साली समाजाच्या पटावर २७ तहाहयात सभासद व ८ वार्षिक सभासद होते.

अर्नाळा येथे विद्यावृद्धि समाजाच्या दि. २८ मे १९११ रोजी झालेल्या वार्षिक सभेत समाजाचे संस्थापक व आद्य चिटणीस कै. अनंत सीताराम देसाई यांचे कायमचे स्मारक म्हणून समाजातर्फे त्यांच्या नांवे एक शिष्यवृत्ती सुरु करावी असे ठरले. या कार्यासाठी स्मारक समितीने रुपये ७९७ गोळा केले. १९१८ सालापासून ही शिष्यवृत्ती समाजातर्फे सुरु आहे.

विद्यावृद्धि समाज स्थापन होण्यापूर्वीची आपल्या ज्ञातीची स्थिती आणि १९१२ सालची तिची स्थिती यांमध्ये बरेच अंतर पडले होते. या संस्थेमुळे आपल्या ज्ञाति समाजांत शिक्षणा विषयीची गोडी सर्वत्र उत्पन्न होऊन, शिक्षणामध्ये दिवसेदिवस त्याची चांगली प्रगती होत होती आणि शिक्षणाचा प्रसार झापाट्याने आपल्या लोकांत होत चालला होता. ज्ञातिगृहस्थांच्या दातृत्वाचा ओघही हळूहळू जास्त प्रमाणावर समाजाकडे वळू लागला होता. कै. लक्ष्मण कृष्ण सामंत गोरेगांवकर यांनी १९०४ साली कै. रा. ब. अनंत शिवजी देसाई यांजकडे काही अटीवर समाजास देण्याकरितां म्हणून चार हजार रुपयांची रक्कम जमा करून ठेवली होती. त्या शारी १९१२ साली पुन्या झाल्यामुळे त्यांची चार हजार रुपयांची रक्कम समाजास मिळाली. एका रकमेने एवढी मोठी देणगी समाजास यापूर्वी कधी मिळाली नव्हती. १९१३ साली १८ विद्यार्थी व एक विद्यार्थीनीस रु. १,४१६ च्या शिष्यवृत्त्या दिल्या. त्यातील ही एक विद्यार्थिनी श्रीमती आवडाबाई सामंत मुंबई येथील कामा हॉस्पिटलमध्ये शिक्षण घेत होती. तीच आपल्या समाजाची पहिली विद्यार्थिनी होय. ती पुढे चांगली नर्स झाली. तिने घेतलेल्या शिष्यवृत्तीच्या सर्व रकमेची परतफेड करून समाजाची ती तहहयात सभासद झाली.

समाजाची २२ वी वार्षिक सभा मुंबई येथे दि. १८ जून १९१६ रोजी कै. रा. ब. अनंत शिवजी देसाई यांच्या बंगल्यावर कै. बाळकृष्ण वामनाजी गव्हाणकर यांच्या अध्यक्षतेखाली झाली. या सभेत समाजाचा १९१५ सालचा वार्षिक अहवाल मंजूर करण्याच्या

सूचनेला आक्षेप घेण्यात येऊन त्यांतील दोन स्त्री सभासदांची नांवे गाळण्यात यावी असे काही सभासदांनी प्रतिपादन केले. स्त्रियांना मतदानाचा हक्क नसावा असे त्यांचे म्हणणे तेव्हा मान्य झाले. १९१७ साली झालेल्या समाजाच्या त्रैवार्षिक निवडणूकीत कै. प्रो. पांडुरंग भिकाजी नाईक, कै. हरि सूर्याजी देसाई व कै. राजाराम नारायण सामंत हे संयुक्त चिटणीस म्हणून निवडून आले. विशेष म्हणजे या पैकी कै. सामंत हे समाजाचे माजी विद्यार्थी होते.

१९१६ साली स्त्रियांना मतदानाचा हक्क नसावा हा ठराव—सूचना, अनुमोदन व मतमोजणी अशा रीतसर पद्धतीने मंजूर झालेला नव्हता आणि तो मतभेदाचा असल्यामुळे शक्य तो लवकर रद्द करून घ्यावा या हेतूने कै. हरि सूर्याजी देसाई प्रभृति पांच मतदार सभासदांनी समाजाचे तत्कालीन हंगामी अध्यक्ष कै. पांडुरंग बाबूराव वालावलकर, ग्वालहेर, यांजकडे असाधारण सभा बोलावण्याविषयी लेखी सूचना पाठविली. त्याप्रमाणे सदरहू असाधारण सभा मुंबई येथे सँडहर्स्ट रोडवरील “वनिता विश्राम हॉल” मध्ये दि. २२ ऑक्टोबर १९१७ रोजी झाली. या संस्मरणीय समयी सभेचे अध्यक्षस्थान कै. वासुदेवराव वामन ठाकूर यांनी स्वीकारले होते. प्रतिकूल मत कोणत्या स्वरूपाचे आहे, हे पूर्णपणे समजावे म्हणून मतदानाचा हक्क नसणाऱ्यांनाही सभेत बोलण्यास अध्यक्षांनी पूर्ण मोकळीक दिली होती. शेवटी स्त्रियांची नांवे पूर्ववत् सभासदांत ठेवावी अशा आशयाचा दुरुस्ती सुचविणारा ठराव कै. नरसिंह भाऊ ठाकूर यांनी मांडला व त्यास कै. बाळकृष्ण भिकाजी नाईक, वकीली, यांनी अनुमोदन दिले. नंतर हा ठराव लेखी मते जमेस धरून ३४ अनुकूल व ४ विरुद्ध अशा बहुमताने मंजूर झाला. मात्र यामुळे टोपीवाले घराणे व त्यांना अनुसरणारे समाजाच्या कामापासून थोडे बाजूला झाले.

विद्यावृद्धि समाजाला दि. ३१ डिसेंबर १९१८ रोजी तत्कालीन गणनापद्धतीने २५ वर्षे पुरी झाली. समाजाने पहिल्या वर्षी दोन विद्यार्थ्यांकरिता अवधे रुपये ६० खर्च केले होते. तर त्याने आपल्या २५ व्या वर्षी ४८ विद्यार्थ्यांकरिता रुपये २,४४७-५-२ मंजूर केले.

या साल अखेर रिफंड येणे धरून समाजाचे कायम भांडवल रु. ४७, ८६०-११-९ होते.

समाजाची दुसरी पंचवीस वर्षे (१९१९ ते १९४३)

समाजाच्या पहिल्या सहा वर्षात तहाह्यात सभासदांची संख्या जी केवळ ३२ होती; ती २५ वर्षांमध्ये १०६ पर्यंत वाढली. त्याच प्रमाणे वार्षिक वर्गणीदार ५६ वरून ७५० पर्यंत वाढले. कायम भांडवलाची शिल्लक रुपये ६,००३-८-० होती ती रुपये ५३,०९३-१३-५ झाली. २५ वर्षांच्या मुदतीत एकूण १६२ विद्यार्थ्यांस समाजाकडून एकंदर रुपये २४,८१५-१-२ एवढी रक्कम शिष्यवृत्ती म्हणून देण्यांत आली. या रकमेपैकी, उद्योगांद्यास लागलेल्या जुन्या विद्यार्थ्यांकडून रिफंड वसूल म्हणून रुपये ६,१६६-८-० एवढी रक्कम समाजाकडे आली. शिष्यवृत्ती दिलेल्या एकंदर १५५ विद्यार्थ्यांची तेव्हाची शिक्षण विषयक उत्तरती येणे प्रमाणे होती.

एम्. ए. १, एलएल. बी. ६, बी. ए. १२, हायकोर्ट प्लीडर १, इंटर आर्ट्स १४, प्रिहिअस २९, मॉट्रिक व स्कूल फाईनल ५९, एल. एम्. अॅन्ड एस. १, एल. एम्. एफ १, एल. सी. पी. एस. २ सब. अ. सि. सर्जन १, व्हेटनरी डॉक्टर ४, नर्स मिड्वाईफ, २, मॉट्रिक पर्यंत व खालच्या वर्गात २२ मिळून एकंदर विद्यार्थी १५५.

विद्यावृद्धि समाजाच्या कायम भांडवलाची शिल्लक १९१९ साली रु. ५३,०९३-१३-५ होती. या रकमेत १९२० साली रु. ५७,५१२-४-५ ची भर पडून ही शिल्लक दुप्पटीहून जास्ती झाली. समाजाच्या कायम भांडवलाची शिल्लक सुमारे एक लक्ष दहा हजार रुपयांपर्यंत जाण्यास या साली ज्या ठळक तीन देणाऱ्या कारणीभूत झाल्या त्या पुढील होत. १. कै. लक्ष्मण कृष्ण सामंत गोरेगांवकर यांच्या ट्रस्ट डीडची रु. ४६,५०३-१-५ (मागील व्याजासह ही रक्कम नंतर रु. ४८,१३२-९-९ झाली), २. कै. माधवराव विठ्ठल सामंत यांनी आपल्या पल्ली कै. सौ. रमाबाई माधवराव सामंत यांच्या नंवे दरमहा रु. १६ ची शिष्यवृत्ती सुरु करण्याकरिता दिलेले रु. ५,५००, अणि ३. कै. विठ्ठल

तातोबा अरदकर यांनी आपल्या पल्ली कै. सौ. रमाबाई विठ्ठलराव अरदकर यांच्या नंवे दरमहा रु. १० ची शिष्यवृत्ती सुरु करण्याकरिता दिलेले रु. ३,५०० या तीन देणाऱ्यांशिवाय या साली इतर स्वज्ञातीयांकडून समाजास रु. २,००८-११-० मिळाले.

यापैकी कै. लक्ष्मणराव सामंत यांच्या १९१२ च्या ट्रस्ट डीडप्रमाणे रु. ३० हजारांची देणगी वसई येथे हायस्कूल सुरु करण्यासाठी जर आणखी तितकीच रक्कम स्थानिक मंडळींनी १९१३ पर्यंत जमविली आणि सरकारने हे हायस्कूल चालविण्याचे कबूल केले तर त्याला द्यावी असे होते. त्या मुदतीत या गोष्टी घडल्या नाहीत, तर ही देणगी विद्यावृद्धि समाजास द्यावी असे पुढे म्हटले होते. कै. पुरुषोत्तम पांडुरंग वाघ, कै. अनंत गणेश देसाई व कै. माधव विठ्ठल सामंत हे त्याचे ट्रस्टी होते. दिलेल्या मुदतीनंतर दोन वर्षे उलटली तरी म्हणजे १९१५ अखेर पर्यंत या गोष्टी घडल्या नाहीत. तेव्हा ट्रस्टींनी सादर केलेल्या अर्जावरुन दिवाणी दावा हायकोर्टापर्यंत लढविला जाऊन १९१९ साली व्याजासह देणगीची रक्कम रु. ४८ हजार होऊन समाजास मिळाली.

१९२० सालची दुसरी महत्वाची गोष्ट म्हणजे वसई येथे दि. १३-६-१९२० रोजी भरलेल्या वार्षिक सभेत समाजाच्या त्रैवार्षिक निवडणुकीत कै. दिगंबर वासुदेव देसाई यांची समाजाच्या तिसऱ्या चिटणीसाच्या जागी निवड झाली.

कै. रामचंद्र कृष्णाजी पाटकर यांनी आपल्या मातोश्री कै. सौ. राधाबाई कृष्णाजी पाटकर यांच्या नंवे समाजामार्फत दरमहा रु. १५ ची शिष्यवृत्ती सुरु करण्याकरिता १९२२ साली रु. ५,२०० ची देणगी संस्थेच्या हवाली केली. गोरेगांव येथील याच सालच्या दि. १८ जून रोजी झालेल्या समाजाच्या वार्षिक सभेत विद्यार्थ्यांस द्यावयाच्या शिष्यवृत्त्यांचे प्रमाण वाढते ठेवावे असे ठरले.

१९२३ साल अखेर समाजास तीस वर्षे पुरी झाली. या साली समाजाने ८५ विद्यार्थ्यांच्या शिष्यवृत्त्यांसाठी रु. ६,८९४ खर्च केले. या साली समाजाची त्रैवार्षिक निवडणूक होऊन नवीन नियमान्वये व्यवस्थापक मंडळाच्या चेअरमनच्या जागी कै.

बाळकृष्ण भिकाजी नाईक, वकील, हे निवडून आले. त्यांनी या जागी पुढे १९३५ सालपर्यंत दक्षतापूर्वक काम केले.

कै. कृष्णाची दाजी ठाकूर, वकील यांच्या अध्यक्षतेखाली दि. २८ जून १९२५ रोजी झालेली समाजाची वार्षिक सभा मुंबई येथील कुडाळदेशकर गौड ब्राह्मण निवासांतील पहिली सभा होय. या सभेत कुडाळदेशकर गौड ब्राह्मण निवास स्थापन करून स्वजातीच्या विद्यार्थ्यांची सोय केल्याबद्दल कै. नारायणराव अनंत देसाई यांचे तसेच कै. रा. ब. वासुदेवराव अनंत बांबडेकर यांनी “मठगावचा शिलालेख” हे ऐतिहासिक पुस्तक प्रसिद्ध करण्यासाठी जे परिश्रम घेतले त्याबद्दल त्यांचे अभिनंदन करण्यात आले.

१९२६ साली दि. १३ जून रोजी वांद्रे येथील वार्षिक सभेत कै. श्रीधर आत्माराम नाईक, यांची अध्यक्षांचे जागी निवड झाली. त्यांनी यापुढे १५ वर्षे समाजाच्या कारभाराचे निःपक्षपाती व समतोल बुध्दीने मार्गदर्शन केले.

१९२५ ते १९२८ या पांच वर्षांच्या मुदतींत स्वयंसेवकांच्या परिश्रमामुळे वार्षिक वर्गणी व दक्षिणा यांचा वसूल दर साल दीड हजार रुपयांच्यावर गेला. चिटणीस कै. दिगंबर वासुदेव देसाई यानी समाजाची वार्षिक वसुली वाढविणासाठी अतिशय परिश्रम घेतले. ते दि. २१ फेब्रुवारी १९२९ रोजी दिवंगत झाले तेव्हा १९२६ सालापासून मुंबई कमिटीचे चिटणीस म्हणून कार्य करणारे कै. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांची वांद्रे येथे दि. २३ जून १९२९ रोजी झालेल्या वार्षिक सभेत निवड झाली. त्यांनी समाजाचे काम शिस्तबद्धतेने अधिक वाढविले.

विद्यावृद्धि समाजाच्या मूळच्या घटनेत, नियमांत व शिष्यवृत्त्यांच्या नियमांत बदलत्या परिस्थितीनुसार महत्वाच्या सुधारणा करण्याचे काम कै. सखाराम सीताराम नाईक, सॉलिसिटर कै. वासुदेव भिकाजी सामंत, न्यायमूर्ती कै. शामराव रघुनाथ तेंडोलकर, ॲड. कै. सावळाराम रामचंद्र परुळेकर व कै. रघुनाथ गणेश ठाकूर ह्या तज्जांच्या समितीने १९३२ साली केले.

वांद्रे येथे दि. ९ जुलै १९३३ रोजी झालेल्या समाजाच्या विशेष सर्वसाधारण सभेमध्ये ह्या सुधारित नियमांना मंजुरी देण्यांत आली. त्या वेळी मंजूर झालेल्या नियमांत पुढे अधूनमधून किरकोळ दुरुस्त्या केल्या गेल्या असल्या तरी ह्या थोर तज्जांनी केलेली मूळ चौकट अद्याप कायम आहे. या घटनेनुसार समाजाचे वर्ष दि. १ एप्रिल ते ३१ मार्च असे करण्यांत आले.

१९२३ ते १९३४ या सुमारे १० वर्षांच्या मुदतीत विद्यावृद्धि समाजास ८०-८५ नवीन तहहयात सभासदांचा लाभ झाला ही समाधानाची गोष्ट होय. समाजाच्या ४० व्या वर्षी विद्यार्थ्यांकडे येणे असलेली रक्कम धरून साल अखेर शिल्लक रु. २,३२,७१५-१५-८ होती.

१९२३ सालापासून १९३५ पर्यंत समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे चेअरमन कै. बाळकृष्ण भिकाजी नाईक, वकील हे कोल्हापूर येथील रहिवासी असूनही त्यांनी आपले काम आस्थेने व नीट रीतीने बजाविले होते. १९३५ सालाची समाजाची त्रैवार्षिक निवडणुक वैशिष्ट्यपूर्ण झाली. श्री. मोतीराम नारायण देसाई टोपीवाले हे या निवडणुकीत खजीनदाराच्या जागी आले आणि टोपीवाले घराणे समाजाच्या कार्याशी दीड तपाने पुन्हा सहभागी झाले. पूर्वीचे व्यवस्थापक मंडळ ११ सभासदांचे होते. नवीन घटनेप्रमाणे ते विस्तृत होऊन १५ सभासदांचे झाले. समाजाचे अध्यक्ष हे हुद्यान्वये व्यवस्थापक मंडळाचे चेअरमन समजण्यांत यावेत व व्यवस्थापक मंडळावर निवडून आलेल्या सभासदांनी आपल्यांतून एक व्हाईस-चेअरमन निवडावा अशी तरतूद नवीन घटनेत करण्यांत आली. समाजाचे चिटणीस कै. हरि सूर्याजी देसाई यांनी सेवानिवृत्ती स्वीकारल्यामुळे कै. नरसिंह विष्णु देसाई, यांची त्यांच्या जागी निवड झाली.

वांद्रे येथे समाजाची वार्षिक सभा ता. २३ जून १९३५ रोजी झाली. तीत कै. हरि सूर्याजी देसाई यांना त्यांच्या समाजसेवेच्या गुणांचे कौतुक करण्याच्या हेतूने मानपत्र द्यावे असे ठरले. या सभेत नवीन नियमानुसार पहिले व्हाईस-चेअरमन म्हणून कै. सखाराम सीताराम नाईक, यांची निवड झाली.

कै. हरि सूर्याजी देसाई यांना दि. २१ जून १९३६ रोजी झालेल्या समाजाच्या वार्षिक सभेत मानपत्र देण्याचा समारंभ झाला. पण वृद्धापकाळामुळे प्रो.

दाते



के. लक्ष्मण कृष्ण सामंत गोरेगोवकर



के. डॉ. दिनकर दामोदर देसाई
एन. पी. अर्ड प्रम.



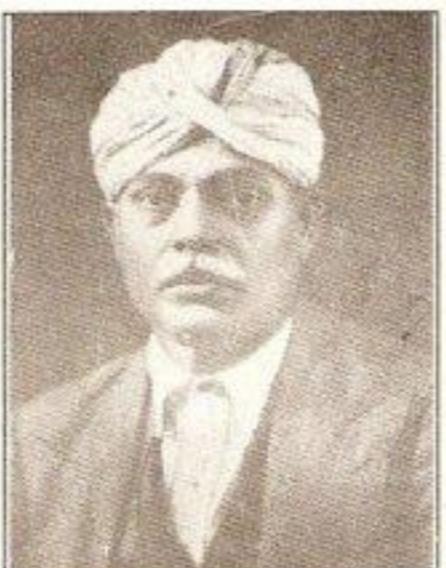
सा. गुनानाथवाई मानोहरराम देसाई टोंडियावाळे



के. श्रीमती सोतावाई रामचंद्र पाटकर



के. भग्वराव विठ्ठल सामंत वांवाड़कर



के. रामचंद्र कृष्णजी पाटकर

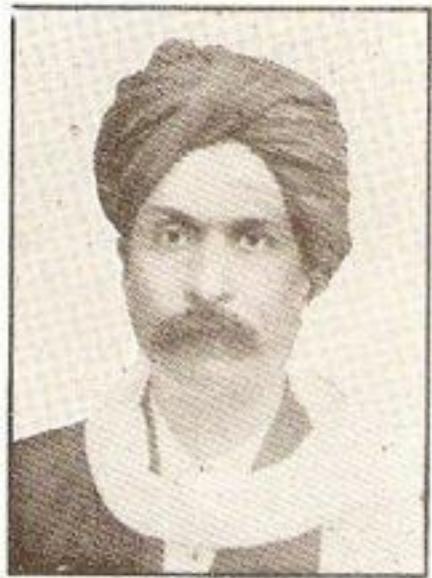


के. रामचंद्र गांविंद सामंत

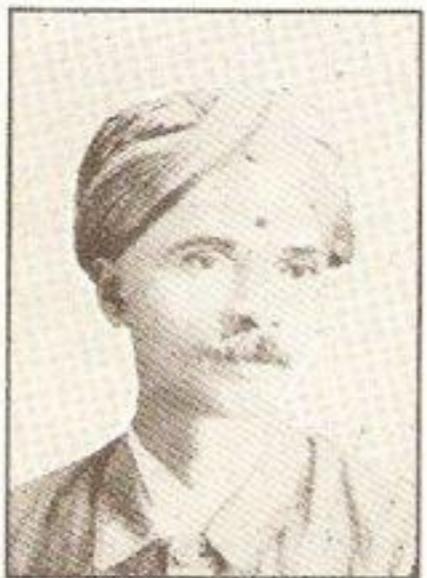


के. विठ्ठल तातोबा अरदकर

चिटणीस



के. दिगंबर वासुदेव देसाई



के. हरि सूर्याजी देसाई



के. नारायण गणेश सामंत
बी. ए., एल.एल. वी.



के. दत्तात्रेय नरहरि पाटकर



के. श्रीरंग रघुनाथ प्रभू



के. भालचंद्र भास्कर सामंत



श्री. शांताराम शंकर ठाकूर

तात्यासाहेब नाईक त्यावेळी उपस्थित राहू शकले नाहीत. पुढे दि. ११ जुलै १९३६ रोजी वेंगुले येथे त्यांचा अंत झाला. त्यांनी विद्यावृद्धि समाजाची ४२ वर्षे अविरतपणे जी अमोलिक सेवा बजाविली होती ती ध्यानी घेऊन त्यांचे उचित स्मारक करण्यासाठी विद्यावृद्धिसमाज, गौड ब्राह्मण सभा, निराश्रित साहाय्यकारी फंड व टोपीवाले चैरिटी या संस्थांच्या विद्यमाने मुंबई येथे दि. १८ जुलै १९३६ रोजी कै. श्रीधर आत्माराम नाईक, यांच्या अध्यक्षतेखाली दुखवट्याबी सभा भरुन एक समिती नेमण्यांत आली. या स्मारक समितीने समाजाच्या दि. १२ जून १९३८ च्या वार्षिक सभेत, गोळा झालेले रु. ३,१०० संस्थेच्या स्वाधीन केले. वरील रकमेच्या व्याजांतून कुडाळदेशकर गौड ब्राह्मण झातींतील विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्ती देण्याच्या रूपाने कै. प्रा. पांडुरंग भिकाजी नाईक यांचे स्मारक करण्यांत यावे असे ठरले.

दि. १२ जून १९३८ रोजी मुंबई येथील समाजाच्या ४४ व्या वार्षिक सभेत कै. नारायण गणेश सामंत व कै. रामचंद्र भिकाजी वालावलकर हे दोन नवीन चिटणीस निवडून आले. मुख्य म्हणजे ते दोघे समाजाचे माजी विद्यार्थी होते. दि. ३१ मार्च १९३९ रोजी विद्यावृद्धि समाजास ४५ वर्षे पुरी झाली. या दिवशी समाजाची मिळकत येणे धरुन रु. २,५०,३५४-१-१ होती.

प्रा. कै. पांडुरंग भिकाजी उर्फ तात्यासाहेब नाईक यांचे जामात वांद्रयाचे कै. नरसिंह भाऊ ठाकूर हे एक यशस्वी व्यापारी होते. त्यांनी १९१६ सालापासून अठरा वर्षे पर्यंत समाजाचे खजिनदार म्हणून चांगले काम केले होते. त्यांच्यामुळे कायम भांडवलात सुमारे पाच हजार रुपयांची भर पडली होती. त्यांच्याकडे समाजाची जी रक्कम ठेव म्हणून ठेवलेली असे तिच्यावर ते समाजाला सहा टक्के प्रमाणे व्याज देत असत. पण १९३३-३४ च्या सुमारास त्यांची व्यावसायिक स्थिती बिघडल्यामुळे समाजाच्या साधारण मंडळाच्या सभेत यावर विचार होऊन त्यांच्याकडे असलेले समाजाचे बाबीस हजार रुपये परत करण्यास त्यांना दहा वर्षांनी मुदत देण्यात येऊन गोरेगांवचे कै. बाळकृष्ण रामचंद्र सामंत यांचा व्यक्तिगत जामीन स्वीकारण्यांत आला. पण १९३८ साली बाळव्याभाऊ सामंत यांचे निधन झाले. तेव्हा त्यांच्या वारसदारांकडून तीन हजार रुपये स्वीकारून

त्यांना जामीनकीच्या जबाबदारीतून मुक्त करण्यांत आले. कै. नरशुभाऊ ठाकूर यांनी देखील शक्य ती रक्कम भरुन बाकीच्या रकमेची सूट मागावी अशी काही ज्येष्ठ कार्यकर्त्यांनी सूचना केली. पण नरशुभाऊंनी आपण सर्व रक्कम परत करु असे सांगून कोणतीही सूट नाकारली व पुढे लवकरच, स्वतःच्या प्रतिकूल परिस्थितीतही, समाजाची सर्व रक्कम परत केली. यामध्ये त्यांची सचोटी व बाणेदारपणा दिसून आला.

समाजाची ४८ वी वार्षिक सभा दि. १५ जून १९४१ रोजी झाली. तीत कै. सखाराम सीताराम नाईक, हे अध्यक्षस्थानी निवडून आले आणि समाजाच्या तिसऱ्या चिटणीसाच्या जागी कै. श्रीरंग रघुनाथ प्रभू यांची निवड झाली. पुढे १९७० पर्यंत त्यांनी समाजाचे हिशेब चोख ठेवून आपली कामगिरी समाधानकारक रीतीने बजाविली.

समाजाचा विकास सुवर्णमहोत्सवी वर्ष १९४३-४४

कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाजाचे ५० वे म्हणजे सुवर्णमहोत्सवी वर्ष दि. १ एप्रिल १९४३ रोजी सुरु झाले. पण त्यापूर्वी “गौडब्राह्मण” त्रैमासिकाने “विद्यावृद्धि समाजाचा सुवर्णमहोत्सव” या शीर्षकाखाली जानेवारी १९४० च्या अंकांत एक स्वतंत्र लेख प्रसिद्ध केला होता. अर्थात या नियतकालिकाने आपल्या अगदी जन्मापासून आतापर्यंत समाजाचे प्रचारकार्य अत्यंत आपलेपणाने करून झातींत अनुकूल वातावरण निर्माण केले आहे.

सुवर्ण महोत्सव निधी गोळा करण्याकरिता कै. मधुसुदन पुरुषोत्तम वाघ व कै. रा. सा. गणेश रघुनाथ पाटकर ह्या ज्येष्ठ कार्यकर्त्यांना खास विनंती करण्यात आली. खेरीज मुंबई, बेळगांव व सावंतवाडी करिता स्वयंसेवक नियुक्त करण्यात आले. तसेच श्री. मोतीराम नारायणराव देसाई टोपीवाले यांनी व्यवस्थापक मंडळाच्या विनंतीस मान देऊन समाजाचे कार्य सक्रीयपणे केल्यामुळे समाजाचा सुवर्णमहोत्सव निधि एक लक्ष नऊ हजार रुपयांवर गेला. मोतीराम शेठ केवळ स्वतःची देणगी देऊन थांबले नाहीत तर इतर कार्यकर्त्यांबोरोबर निधी गोळा करण्याकरिता त्यांनी

परिश्रम देखील घेतले. थोर देशभक्त कै. यशवंत कृष्ण पुढेकर यांचीही कामगिरी अशीच महत्वाची आहे. निधि गोळा करण्यासाठी कराव्या लागणाऱ्या पत्रव्यवहाराप्रीत्यर्थ त्यांनी फार परिश्रम केले. सुवर्ण महोत्सवानिमित्त प्राप्त झालेल्या देणाऱ्यांमधो सौ. सुनिता मोतिराम देसाई रु. १०,५००/-, कै. नारायण दाजी सामंत रु. १०,३००/-, कै. सीताबाई रामचंद्र पाटकर रु. १०,०००/-, श्रीमती यशोदाबाई मुकुंद सामंत रु. ५,२००/- आणि कै. श्रीमती सीताबाई रामचंद्र गोविंद सामंत रु. ५,०००/- यांचा अंतर्भाव होता.

समाजाचा सुवर्णमहोत्सव समारंभ गिरणांव मुंबई येथील कुडाळदेशकर गौड ब्राह्मणनिवासांत दि. २२ ऑक्टोबर १९४४ रोजी श्री. मोतीराम नारायणराव देसाई टोपीवाले यांच्या अध्यक्षतेखाली अतिशय उत्साहने पार पडला. उत्सवासाठी निवासांतील क्रीडांगणावर खास प्रशस्त असा मंडप उभारण्यांत आला होता. प्रारंभी ज्ञातीतील पुरोहितांकडून वेदघोष. झाल्यावर इशास्तवन करण्यांत आले. त्यानंतर समाजाचे अध्यक्ष कै सखाराम सीताराम नाईक यांनी प्रास्ताविक भाषण केले. आपल्या भाषणांत कै. नाईक यांनी समाजाच्या सांप्रतच्या उर्जितावस्थेस कारणीभूत झालेल्या प्रमुख व्यक्तींचा कृतज्ञतापूर्वक उल्लेख केला.

त्यानंतर समाजाच्या कार्याविषयी गौरवपर अशी कै. रामचंद्र गोविंद सामंत, कै. गंगाधर देवराव खानोलकर, कै. विश्वनाथ अनंत आजगांवकर, कै. सदाशीव कानोजी पाटील, कै. रा. सा. यशवंत जनार्दन गाळवणकर, कै. बाळकृष्ण अनंत पाटील, कै. वासुदेव भिकाजी सामंत, व कै. र. ग. ठाकूर यांची भाषणे झाली.

श्री. मोतिराम नारायणराव देसाई टोपीवाले यांनी आपल्या अध्यक्षीय भाषणांत कै. प्रो. पांडुरंग भिकाजी उर्फ तात्यासाहेल नाईक यांच्या अपूर्व लोकोत्तर झातिसेवेचा उल्लेख करून समाजाच्या कार्याबदल समाधान व्यक्त केले. यानंतर समाजाचे अध्यक्ष कै. स. सी. नाईक यांनी आभार मानल्यानंतर विविध मनोरंजक कार्यक्रम झाले व हा गौड समारंभ पार पडला.

सुवर्णमहोत्सव ते हीरकमहोत्सव

(१९४४ ते १९५४)

सुवर्णमहोत्सवानिमित्त समाजाने प्राथमिक शिक्षणासाठी रु. ३०४६२ व स्वतंत्र शिष्यवृत्यांप्रित्यर्थ रु. ७९,१९८ असे रु. १,०९,६६० कायमनिधीखाती जमा केले. त्यासाठी जातीतील व्यापाऱ्यांनी ज्याप्रमाणे सढळ हाताने मदत केली, त्याचप्रमाणे जातीतील बहुसंख्य असा जो मध्यम वर्ग त्यानेही शिक्षणाच्या या पवित्र कार्यास चांगली मदत केली. या वर्गातून अनेक तहहयात सभासदांचा लाभ समाजास झाला. माजी विद्यार्थ्यांनीही आपल्या कार्याचा वाटा उचलला. अशा रीतीने ज्ञातीतील सर्व गरीब, श्रीमंत, लहानथोर, मंडळींनी सुवर्णमहोत्सवानिमित्त एकत्र येऊन आपली शक्ती केंद्रित केल्यामुळे च हे यश प्राप्त झाले.

सुवर्णमहोत्सवानंतरच्या पुढील दहा वर्षांतील कायमनिधी जमविण्याच्या कामी मुळीच शैथिल्य आले नाही. या कालखंडात समाजास कै. डॉ. दिनकर दामोदर देसाई, सेवानिवृत्त असि. सिव्हिल सर्जन, मध्यप्रांत, यांनी स्वतंत्र शिष्यवृत्ती सुरु करण्यासाठी रु. १,००,००० ची उदार देणगी दिली. एक रकमी एवढी मोठी देणगी देणाऱ्या डॉक्टरसाहेबांचा जन्म १८८५ साली वसई येथे झाला. त्यांचे मूळ गांव कुंभवडे. ग्रॅट मेडिकल कॉलेजातून १९१२ साली ते एल.एम. अँड एस. ची परीक्षा पास झाले. पुढे सेंट्रल प्रॉफिन्स मेडिकल सर्विसमध्ये १९४४ साली ते असि. सिव्हिल सर्जनच्या जागेवरून सेवानिवृत्त झाले.

दुसरी देणगी कै. दत्तात्रय हरि बोद्रे यांच्या मृत्युपत्रांव्ये समाजास मिळालेले रु. ७,००० ही होय. ही रक्कम जरी लहान असली तरी ती एका अल्प वेतन असलेल्या प्रार्थमिक शिक्षकांचे संचित सर्वस्व होते.

१९४३ साली नोकरीत मिळालेल्या बढतीमुळे कै. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांना समाजाच्या दैनंदिन कार्याकडे लक्ष पुरविणे अशाव्य झाल्यामुळे त्यांनी आपल्या १९२६ पासूनच्या चिटणीसपदाचा राजिनामा दिला. कै. ठाकूर हे यानंतर व्यवस्थापक मंडळाचे सभासद म्हणून १९५१ पर्यंत कार्य करीत राहिले आणि

१९५१ साली समाजाची गरज व स्वतःला असलेली या कामाची ओढ म्हणून पुन्हा चिटणीसपद स्वीकारून अमृत महोत्सवाचे महत्वाचे कार्य त्यांनी १९५५ पर्यंत केले. त्यानंतर १९६८ पर्यंत व्हाईस चेअरमन व पुढे १९६८ ते १९७० पर्यंत समाजाचे अध्यक्ष म्हणून त्यांनी भरीव कार्य केले. अशा प्रकारे ते सतत ४४ वर्षे (१९२६ ते १९७०) विद्यावृद्धि समाजाच्या कार्यात व्यस्त राहिले. कै. ठाकूर यांच्या १९४३ साली रिकाम्या झालेल्या चिटणीसाच्या जागी कै. दत्तात्रय नरहरी पाटकर, यांची निवड करण्यांत आली. पुढील सालाच्या सुरवातीपासून सुवर्णमहोत्सवानिमित्त देण्या मिळविण्यास सुरुवात झाली व या कामी कै. पाटकर यांचे अमोल सहाय्य समाजास मिळाले. कै. पाटकर यांनी १९४६ साली राजिनामा दिला व त्यांच्या जागी कै. वामन श्रीधर परुळेकर यांची निवड झाली. ते पूर्वी गौडब्राहण सभा या ज्ञातिसंस्थेत सुमारे ९ वर्षे चिटणीस म्हणून काम करीत होते. कै. वामन श्रीधर परुळेकर यांनी १९४६ ते १९७७ पर्यंत ३९ वर्षे समाजाचे चिटणीस म्हणून निरलसपणे कार्य केले. यानंतर १९८६ पर्यंत समाजाचे उपाध्यक्ष व १९८६ ते १९९३ मध्ये निधन होईपर्यंत अध्यक्ष म्हणून त्यांनी कार्य केले. त्यांच्या हातून सतत ४७ वर्षे समाजाची जी सेवा घडली ती भूषणावह होय. दानशूर व्यापारी कै. रामचंद्र गोविंद सामंत हे १९४० ते १९४८ पर्यंत समाजाचे ट्रस्टी होते. १९४८ साली ते दिवंगत झाले व वांद्रे येथील सुप्रसिद्ध कॉटेक्टर कै. नारायण दाजी सामंत, यांची त्यांच्या जागी निवड झाली. कै. रामचंद्र गोविंद सामंत यांचा ज्ञातीतील अनेक संस्थांशी अगदी जिव्हाळ्याचा संबंध होता. अनाथ, अपंग अशा ज्ञातीतीत स्त्रीपुरुषांस मदत देण्याचे उपयुक्त कार्य करीत असलेल्या निराश्रित सहाय्यकारी फंडाचे ते उत्पादक व प्रमुख आधारसंभ होते. गौडब्राहण सभेचेहि ते कांही वर्षे अध्यक्ष होते. याच काळीतील एक महत्वाची घटना म्हणजे समाजाचे एक माजी विद्यार्थी कै. सदाशिव कान्होबा पाटील हे १९४९ ते १९५२ अशी सतत तीन वर्षे मुंबईचे महापौर झाले होते. तेव्हा त्यांनी मुंबईच्या विकासासाठी भरीव कामगिरी केली.

या कालखंडात घडलेली एक दुर्दैवी घटना म्हणजे समाजाचे एक चिटणीस श्री. नारायण गणेश सामंत यांचे ता. ३० मार्च १९५० रोजी झालेले दुःखद निधन ही होय. कै सामंत हे जसे निष्णात वकील होते तसेच ते एक अत्यंत उत्साही व निष्ठावंत ज्ञातिसेवक होते. त्यांचे शिक्षण समाजाच्या मदतीने झाले असल्यामुळे, समाजाविषयी कृतज्ञतेची जाणीव त्यांच्या ठिकाणी वसत होती. विद्यार्थीदरेतच कै. सामंत यांनी समाजकार्याचा आपला वाटा उचलण्यास सुरवात केली व अभ्यासक्रम संपल्यावर तर तनमनधने करून त्यांनी समाजकार्याला वाहून घेतले. कै. सामंत यांचे कार्य विद्यावृद्धिसमाजापुरतेच मर्यादित न राहता त्यांनी गौड ब्राहण सभेच्या कार्यातही प्रत्यक्ष भाग घेण्यास सुरुवात केली. ज्ञातीतील संस्थांची व प्रमुख घटनांची माहिती ज्ञातिबांधवांस करून देण्याच्या उद्देशाने गौड ब्राहण नांवाचे एक त्रैमासिक प्रसिद्ध करण्याचा उपक्रम १९३९ सालापासून गौडब्राहण सभेने सुरु केला होता. कै. सामंत यांनी प्रारंभापासून या त्रैमासिकाच्या संपादकत्वाची जबाबदारी पत्करून ते नांवारुपास आणले. त्यांच्या निधनाबद्दल दुःख व्यक्त करण्यासाठी ज्ञातीतील सर्व संस्थांच्या वतीने एक शोकसभा कुडाळदेशकर गौडब्राहण निवासांत दि. ९.४.१९५० रोजी भरली होती. या सभेत कै. सामंत यांची स्मृति चिरंतन करण्यासाठी कै. नारायण दाजी सामंत, यांच्या अध्यक्षतेखाली कै. ना. ग. सामंत स्मारक समिती स्थापन करण्यात आली व या समितीने जमविलेल्या रु. ८,००० निधींतून कै. नारायण गणेश सामंत शिष्यवृत्ती सुरु करण्यांत आली.

कै. सखाराम सीताराम उर्फ भाऊसाहेब नाईक यांची प्रदीर्घ समाजसेवा लक्षात घेऊन सर्व ज्ञातिसंस्थाते १९५१ साली त्यांच्या एकाहत्तराव्या वाढदिवशी त्यांचा सत्कार करण्यांत आला. कै. नाईक हे यानंतरही पुढे १९६८ सालापर्यंत समाजाचे अध्यक्ष म्हणून काम करीत होते.

श्री. मोतीराम नारायणराव देसाई, टोपीवाले, यांनी १९३५ सालापासूनच्या आपल्या खजिनदारपदाचा १९५४ साली राजिनामा दिला. त्यांच्या जागी कै. राजाराम गोविंद सामंत यांची निवड झाली. श्री. मोतीरामशेठ यांनी आपले आजोबा व वडिलांप्रमाणे समाजास सद्भलपणे मदत करून उपकृत केले आहे.

विद्यावृद्धि समाजाच्या व्यवहारांत अत्यंत कठीण असा जर कोणता प्रश्न तेव्हा होता असेल तर तो रिफंडवसुली हा होय. समाजाच्या घटनेप्रमाणे विद्यार्थ्यांनी घेतलेल्या शिष्यवृत्त्या (काही थोड्या वगळून) या परत फेडीच्या होत्या. त्यांची रक्कम समाजास परत करण्याचे कायदेशीर बंधन विद्यार्थ्यावर होते. प्रारंभीच्या काळी रिफंडाची रक्कम लहान असतांना कार्यकर्त्यांना व स्वयंसेवकांना तिची वसूली करणे सोपे जात असे. परंतु दिवसेदिवस ती वाढत चालल्यामुळे वसूलीसाठी काय योजना करावी हा मोठा प्रश्न समाजापुढे येऊन पडला. रिफंड वसूलीचे काही कायदेशीर प्रयत्नही करण्यात आले. पण त्याचा अनेक ज्ञातिबांधवांच्या समाजाविषयीच्या अपुलकीच्या भावनेवर विपरीत परिणाम झाल्याचे दिसून आले.

पुढे पब्लिक ट्रस्ट अँकट अमलांत आल्यावर रिफंडाच्या प्रश्नाला निकडीचे स्वरूप प्राप्त झाले. समाजाच्या घटनेप्रमाणे विद्यार्थ्यांकडे असलेली रिफंडाची रक्कम हे समाजाचे येणे असल्यामुळे एक तर त्याची ताबडतोब वसूली झाली पाहिजे अगर घटनेत जरुर ते फेरफार केले पाहिजेत, अशी परिस्थिती उत्पन्न झाल्यामुळे घटनेत योग्य ते फरक सभासदांच्या दि. २०.६.१९५४ रोजी भरलेल्या असाधारण सभेत मंजूर झाले व ते चैरिटी कमीशनरनी मान्य केले. मात्र दि. ३१.३.१९५५ पर्यंतच्या परत फेडीच्या शिष्यवृत्त्यांच्या रकमांची वसूलीची जबाबदारी त्यांनी व्यवस्थापक मंडळावर टाकली. ती पार पाडण्यासाठी व्यवस्थापक मंडळाने तेव्हा सतत प्रयत्न केले. पत्रे पाठविणे, घरोघरी फिरणे, लहानलहान हप्तेदेखील मुद्दाम घरी जाऊन घेणे, ही कामे केली गेली. त्यामुळे प्रतिवर्षी रिफंडाचे दहा पंधरा हजार रुपये वसूल झाले. पण सर्व रिफंड वसूल होणे दुरापास्त होते. कायदेशीर कारवाई देखील अँडव्होकेट कै. शंकर गोपाळ सामंत व व्यवस्थापक मंडळाचे सभादस कै. श्रीधर रघुनाथ देसाई यांच्या विशेष प्रयत्नांनी केली गेली. चिटणीस कै. श्रीरंग रघुनाथ प्रभू ह्यांनी देखील पुष्कळ परिश्रम घेतले. पण पुढे त्यातून समाजात कटुता वाढू लागल्याने ही पघ्दती थांबवून आता विनंतीने रिफंड वसूली जेवढी होईल, तेवढी केली जाते.

इ.स. १८९४ ते १९५४ ह्या पहिल्या साठ वर्षांच्या कालावधीमध्ये एकूण ८२५ ज्ञाती बंधुभगिनीनी रु. १००/- वा त्याहून अधिक रकमेच्या देणाऱ्या दिल्या. समाजाचा कायम निधी रु. ४,७१,०००/- इतका झाला. तसेच तोर्यंत एकूण ११३८ विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्त्यांच्या रूपाने एकूण रु. २,७६,१४० दिले गेले. दि. २७ मार्च १९५५ रोजी झालेल्या हीरकमहोत्सव समारंभासाठी झालेल्या खर्चाप्रित्यर्थ रु. ४,५६४ च्या वेगळ्या देणाऱ्या मिळाल्या.

समाजाचा हीरक महोत्सव

दि. २७ मार्च १९५५

विद्यावृद्धि॒ समाजाचा हीरक महोत्सव रविवार दि. २७ मार्च १९५५ रोजी दादर येथील किंग जॉर्ज हायस्कूलच्या सभागृहामध्ये साजरा झाला. अध्यक्षस्थानी सकाळकार कै. डॉ. ना. भि. परुळेकर हे होते. आरंभी स्वागताध्यक्ष कै. स. सी. उर्फ भाऊसाहेब नाईक यांनी सर्वांचे स्वागत केल्यानंतर कै. भालचंद्र भा. सामंत यांनी समारंभाकरिता आलेले संदेश वाचून दाखविले. तसेच चिटणीस कै. श्रीरंग र. प्रभू यांनी प्राप्त झालेल्या देणाऱ्यांची माहिती दिली. सॉलिसिटर कै. वासुदेव भिकाजी सामंत यांनी कै. पा. भि. उर्फ तात्यासाहेब नाईक यांच्या समाजसेवेचे गौरवपूर्वक वर्णन केले व अध्यक्षांना त्यांच्या तैलचित्राचे अनावरण करावयाची विनंती केली. त्यानंतर अध्यक्षांच्या हस्ते तात्यासाहेबांच्या तैलचित्राचे अनावरण झाले.

यानंतर कै. अँड. रा. गो. सामंत यांनी समाजाच्या आद्यसंस्थापकापैकी तेव्हा हयात असलेल्या कै. बाळकृष्ण भिकाजी उर्फ मामासाहेब नाईक व कै. रावसाहेब गणेश रघुनाथ पाटकर यांच्या साठ वर्षापूर्वीच्या पायाभूत कार्याची माहिती दिली. त्या दोघांपैकी या समारंभाला प्रत्यक्ष उपस्थित असलेले रावसाहेब पाटकर यांचा अध्यक्षांच्या हस्ते सत्कार करण्यांत आला. कै. पाटकर यांनी सत्काराला उत्तर दिले. कै. मामासाहेब नाईक हे तेव्हा प्रकृती अस्वास्थ्यामुळे समारंभाला प्रत्यक्ष उपस्थित नव्हते. पण त्यांनी पाठविलेला संदेश समारंभात वाचून दाखविण्यात आला.

समाजाच्या साठ वर्षांच्या कार्याचे सविस्तर वर्णन करणाऱ्या हीरकमहोत्सव समरणिकेचे प्रकाशन अध्यक्षांच्या हस्ते झाले. समाजाचे एक माजी विद्यार्थी आणि माजी चिटणीस कै. नारायण गणेश सामंत यांनी परिश्रमपूर्वकतेने गोळा केलेली समाजाच्या इतिहासाची माहिती, त्यांच्या अकाली निधनानंतर कै. यशवंत विठ्ठल देसाई यांनी नीट संकलित करून व तिच्या मध्ये आवश्यक ती भर घालून ही स्मरणिका प्रत्यक्ष तयार केली होती. अध्यक्षांच्या खास विनंतीवरून समाजाचे ज्येष्ठ चिटणीस कै. र. ग. ठाकूर यांनी या स्मरणिकेतील काही भाग समारंभामध्ये वाचून दाखविला.

यानंतर शिक्षणतज्ज्ञ कै. रा. वि. परुळेकर, कै. द.न. पाटकर, कै. शं. गो. सामंत व कै. र. ग. ठाकूर यांची समयोचित भाषणे झाल्यावर अध्यक्षीय भाषण झाले. त्यांनी समाजाच्या मदतीचा आपल्याला स्वतःला देखील विद्यार्थीदरोमध्ये कसा उपयोग झाला हे सांगितले आणि गरजु व महत्वाकांक्षी अशा विद्यार्थ्यांना योग्य वेळी भरीव मदत देण्याची आवश्यकता प्रतिपादन केली. त्यानंतर डॉ. श्री. शं. आजगांवकर यांनी आभार प्रदर्शन केले.

दुपारच्या सत्रामध्ये कै. स. सी. नाईक यांच्या नेतृत्वाखाली प्रश्नप्रालेचा कार्यक्रम झाला. समाजातील विविध क्षेत्रातील अग्रगण्य व्यक्तींनी श्रोत्यांच्या उत्सुर्त प्रश्नांना समर्पक उत्तरे दिली. मग महाराष्ट्र भाषाभूषण कै. ज. र. आजगांवकर यांच्या अध्यक्षतेखाली झालेली असंबद्ध भाषणांची झातीबांधवांची स्पृहदिखील चांगली रंगली. संध्याकाळी कै. बी. जी. सामंत यांचे सुश्राव्य भावगीत गायन व रात्री महाराष्ट्र नाटक मंडळीचा डॉ. कैलास ह्या नाटकाचा प्रयोग झाला. शेवटी चिटणीस कै. र. ग. ठाकूर यांनी समारोप केल्यावर हीरक महोत्सवी कार्यक्रमाची समाप्ती झाली.

या समारंभाच्या खर्चाकरिता स्वतंत्रपणे गोळा करण्यांत आलेल्या रु. ४,५६५ च्या वेगळ्या निधीतून समारंभाचा प्रत्यक्ष खर्च वजा जाता बाकी राहिलेली रु. ४०१ ची शिल्लक समाजाला देण्यांत आली. त्यांतून

सुरु केलेले हीरक महोत्सव पारितोषिक प्रतिवर्षी दिले जाते. या हीरक महोत्सवासाठी देणाऱ्या गोळा करणे व कार्यक्रमांची आखणी करणे या बाबतीत कै. भालचंद्र भास्कर सामंत यांनी विशेष परिश्रम घेतले होते.

हीरक महोत्सव ते अमृत महोत्सव

१९५५ ते १९६९

अतिशय भव्य प्रमाणात साजन्या झालेल्या विद्यावृद्धि समाजाच्या हीरक महोत्सवामध्ये, झातीतील अनेक ज्येष्ठ व श्रेष्ठ व्यक्ती सहभागी झाल्या मुळे, समाजाच्या कार्याला झाती बांधवांमध्ये सर्वत्र विशेष प्रसिध्दी मिळाली व समाजाची प्रगती झापाण्याने सुरु झाली. मात्र शिष्यवृत्त्यांची परतफेड मिळविणे ही एक डोकेदुखी झाली असल्यामुळे १९५५ साली साधारण मंडळाची जादा सभा बोलावून संस्थेच्या उद्देशांत आवश्यक ते फेरबदल करण्यांत आले. त्यामुळे बिनफेडीच्या शिष्यवृत्त्यांव्यतिरिक्त, विद्यार्थ्यांना दिलेली मदतीची रक्कम त्यांनी परत देऊ केल्यास ती स्वीकारावी असे ठरले. चौरिटी कमिशनरनी त्याला मान्यता दिली. पण हा ठराव होण्यापूर्वीच्या परतफेडीच्या शिष्यवृत्त्यांची रक्कम वसूल करण्याची जबाबदारी संस्थेच्या विश्वस्तांवर, म्हणजे व्यवस्थापक मंडळावर टाकली. या वर्षी समाजाचे माजी अध्यक्ष श्री. श्रीधर आत्माराम उर्फ मुन्सफ तात्यासाहेब नाईक यांचे दि. ६.८.१९५५ रोजी दुःखद निधन झाले.

श्री. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांनी आपल्या इतर जबाबदाऱ्या वाढल्यामुळे १९५५ साली समाजाच्या चिटणीसपदाचा राजिनामा दिला. त्यांच्या पदावर श्री. भालचंद्र भास्कर सामंत यांची नियुक्ती करण्यांत आली. १९५६ साली महाराष्ट्र भाषाभूषण श्री. जगन्नाथ रघुनाथ आजगांवकर यांचे निधन झाले. परिस्थिती गरीब असूनही सदा हसतमुख, उत्साही असे हे थोर संतचरित्रिकार समाजाच्या कामांत नेहमीच मदत करीत असत. या वर्षी समाजाचा कायम निधी रु. ४९०२६०/- झाला. १३६ मुलामुलींना रु. १३,६९२ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. आतापर्यंतच्या बासृष्ट वर्षामध्ये समाजाने परतफेडीच्या एकूण रु.

१,९६,७४७ च्या शिष्यवृत्त्या दिल्या होत्या. त्यापैकी बुडीत खातीची रु. ४,२९२ ची रक्कम थरुन रु. ८१,२५२ ची रक्कम परतफेड केली गेली. बाकी रु. १,१५,४९५ ची रक्कम माजी विद्यार्थ्यांकदून येणे होती.

श्री. मधुसूदन पुरुषोत्तम वाघ यांनी वृधापकाळामुळे १९५६ साली ट्रस्टीच्या जागेचा राजीनामा दिला. १९२६ सालापासून सतत ३० वर्षे ते समाजाचे ट्रस्टी होते. या कालावधीत त्यांनी समाजाच्या कार्यकर्त्यांना वेळोवेळी चांगले मार्गदर्श केले. त्यांच्या रिकाम्या झालेल्या पदावर श्री. गोविंद रामचंद्र सामंत यांची नियुक्ती करण्यांत आली. या वर्षी श्री. शिवराम केशव वालावलकर लोणीवाले यांच्याकडून समाजाला रु. १०,०००/- ची उदार देणगी मिळाली आणि समाजाचा कायम निधी रु. पांच लाखाच्या पलीकडे गेला. पण दुर्दैवाने ही देणगी दिल्यानंतर काही दिवसांतच त्यांचे निधन झाले. त्या वर्षी १३३ विद्यार्थ्यांना रु. १२,९६० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या.

सन १९३८ पासून सतत वीस वर्षे समाजाचे ट्रस्टी असलेले परळ येथील लोकप्रिय डॉ. दत्तात्रय गोपाळ तेंडूलकर यांचे १९५८ साली निधन झाले. ते काही काळ मुंबई महापालिकेचे सदस्य होते. त्यांचे समाजाच्या उपक्रमांना चांगले पाठबळ असे. प्रतिवर्षी पारितोषिके देण्यासाठी ते रोख देणगी देखील देत असत. कै. डॉ. द. गो. तेंडूलकर यांच्या निधनाने रिकाम्या झालेल्या ट्रस्टीच्या पदावर श्री. दत्तात्रय नरहरी पाटकर यांची नियुक्ती करण्यांत आली. या वर्षी आपल्या झातीतील दोन थोर कायदेपंडितांचे निधन झाले. त्यापैकी एक म्हणजे वांद्रे येथील श्री. अनंत गणेश देसाई व दुसरे मुंबईतील न्यायमूर्ती श्री. शामराव रघुनाथ तेंडोलकर होते. या दोघांचाही समाजावर सदैव लोभ होता. कै. देसाई यांनी प्रथम पासून समाजाच्या कार्याची आस्थेने चौकशी करून मदत देण्याची पृष्ठती चालू ठेवली होती. तर कै. न्यायमूर्ती तेंडोलकर प्रतिवर्षीच्या सर्वसाधारण सभेला मुदाम उपस्थित राहून व तिच्यामध्ये भाग घेऊन समाजाच्या प्रगतीच्या दृष्टीने

योग्य त्या सूचना करीत. समाजाच्या घटना दुरुस्तीत त्यांचा महत्वाचा सहभाग होता. ते टोपीवाला चॉरिटीचे देखील एक प्रमुख ट्रस्टी होते. यावर्षी १५५ अर्जदार मुलामुलींना रु. १५,१३२ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या.

१९५९-६० या वर्षी श्री. द.न. पाटकर यांच्या जागी ट्रस्टी म्हणून डॉ. बाळकृष्ण रामचंद्र सामंत यांची व श्री. भालचंद्र भास्कर सामंत यांच्या जागी चिटणीस म्हणून श्री. यशवंत विठ्ठल देसाई यांची निवड झाली. या वर्षी देणगांमध्ये देखील महत्वाची भर पडली. डॉ. दिनकर दामोदर देसाई यांनी आपल्या पूर्वीच्या १,०२,०२९/- च्या देणगीत मातोश्री कै. सौ. काशीबाई यांच्या नांवे रु. २६,५०० ची भर घातली. या देणगीमुळे समाजाचा एकूण कायम निधी सहा लक्ष रुपयांहून अधिक झाला.

१९६०-६१ साली वसई आणि अर्नाळा येथील श्री. मधुसूदन पुरुषोत्तम वाघ आणि श्री. पुरुषोत्तम जनार्दन गाळवणकर यांचे निधन झाल्याने समाजाचे त्या परिसरातले महत्वाचे असे दोन जुने दुवे निखळून पडले. समाजाच्या आरंभापासूनच्या कार्यात या दोघांनी आपलेपणाने भाग घेतला होता. अगदी अखेरपर्यंत ते वडीलधारेपणाने मार्गदर्शन करीत असत. याच वर्षी गिरगांव येथील आदर्श शिक्षक श्री. वासुदेव वामन ठाकूर यांचे देखील निधन झाले. कै. ठाकूर यांच्यामुळे गिरगांवातील आर्यन एज्युकेशन सोसायटी स्थापन झाली. त्यांचा विद्यावृद्धि समाजाच्या कार्यात नेहमी सहभाग असे. ते १९११ ते १७ पर्यंत व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य होते. ३१ मार्च १९५४ रोजी येणे असलेल्या कायदेशीर रिफंड खातीच्या रु. १,२३,२८३/- पैकी रु. ४६,१४१/- ची रक्कम दि. ३१ मार्च १९६१ पर्यंतच्या सात वर्षांमध्ये कायदेशीर व इतर सर्व मार्गानी प्रयत्न करून वसूल झाली. या वर्षी १४० विद्यार्थ्यांना एकूण रु. १६,२१८ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर झाल्या. कायम भांडवलाच्या रकमेतून विकत घेतलेल्या सरकारी कर्ज रोख्यांची रक्कम या वर्ष अखेरीस रु. ६,२५,०००/- झाली.

१९६१-१९६२ सालामध्ये शिक्षणतज्ज्ञ श्री. रामचंद्र विठ्ठल तथा रामभाऊ परुळेकर यांचे निधन झाले. ते समाजाचे माजी विद्यार्थी व माजी उपाध्यक्ष होते. समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांना व कार्यकर्त्यांना त्यांचे मार्गदर्शन सतत लाभत असे. तसेच त्या वर्षी अर्नाळ्याचे श्री. राजाराम नारायण सामंत यांचेही निधन झाले. ते राजाराम मास्तर म्हणून ओळखले जात. वसईचे आर.पी.वाघ हायस्कूल नांवारुपाला आणण्यात मुख्यतः त्यांचे श्रम कारणीभूत झाले होते. ते काही काळ विद्यावृद्धि समाजाचे चिटणीस व उपाध्यक्षही होते.

१९६२-६३ सालामध्ये समाजाच्या उपाध्यक्षपदी डॉ. लाडकोबा श्रीरंग देसाई यांच्या जागी डॉ. कमलाकर दिगंबर देसाई यांची व चिटणीसपदी श्री. यशवंत विठ्ठल देसाई यांच्या जागी श्री. शांताराम शंकर ठाकूर यांची निवड झाली. या वर्षी समाजाच्या आद्य संस्थापकांपैकी एक श्री. बाळकृष्ण घिकाजी उर्फ मामा नाईक, कोल्हापूर यांचे तसेच बडोदे येथील थोर शिक्षण तज्ज्ञ व समाजावर सतत कृपा लोभ असलेले डॉ. महादेव दत्तात्रय अवसरे, समाजाचे माजी उपाध्यक्ष डॉ. शंकर रघुनाथ नाईक आणि थोर समाजसेवक व झातीतील विविध संस्थांचे कार्यकर्ते श्री. बाळकृष्ण अनंत पाटील यांचे निधन झाले. या वर्षी १७८ अर्जदारांना रु. १७,६४० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. कायम निधीतून घेतलेल्या सरकारी कर्ज रोख्यांची दर्शनी किंमत रु. ६,६६,०००/- झाली.

डॉ. दिनकर दामोदर देसाई यांनी कायम शिष्यवृत्त्या देण्यासाठी समाजाला वेळेवेळी एकूण रु. १,५२,०००/- च्या उदार देणग्या देऊन झातीतील शिक्षण प्रसाराविषयी जी कळकळ व्यक्त केली त्याबद्दल दि. १७-११-१९६३ रोजी जिना हॉल, ग्रॅण्ट रोड येथे त्यांचा कृतज्ञतापूर्वक सत्कार करण्यात येऊन त्यांच्या तैल चित्राचे अनावरण करण्यांत आले. “जोडोनिया धन उत्तम व्यवहारे। उदास विचारे वेच करी।” या वृत्तीने अगदी साधेपणाने व काटकसरीने राहून जमा झालेली सर्व संपत्ती त्यांनी समाजाला दिली हे भुषणावह होय. या वर्षी १७२ मुलामुलींना रु. १९,७५२ च्या

शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. सरकारी कर्ज रोख्यातील कायम निधीची गुंतवणूक रु. ६,९५,००० झाली.

दुर्दैवाने १९६४ सालाच्या डिसेंबर महिन्यांत डॉ. दिनकर दामोदर देसाई ह्यांचे अल्प आजाराने बडोदे येथे निधन झाले. त्यानंतर समाजाने प्रा. वामन पांडुरंग खानोलकर यांच्या अध्यक्षतेखाली दुखवट्याची सभा घेतली गेली. या वर्षी समाजाचा गुंतवणूक केलेला स्थायी निधी रु. ७,२०,०००/- झाला. १६९ विद्यार्थ्यांना रु. १८,६३६ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या.

१९६५-६६ या वर्षामध्ये समाजाच्या मूळ उत्पादकांपैकी हयात असलेले अखेरचे सदस्य रावसाहेब गणेश रघुनाथ पाटकर यांचे नाशिक येथे निधन झाले. आपल्या कर्तव्यगारीने सरकारी वन खात्यामध्ये वरीष्ठ हुद्यापर्यंत चढत गेलेले रावसाहेब पाटकर हे कमी बोलणारे पण समाजासाठी सतत काही ना काही काम करणारे होते. आरंभापासून हीरक महोत्सवापर्यंत समाजाच्या निधीमध्ये भर घालण्याकरिता त्यांनी सतत प्रयत्न केले होते. या खेरीज सफाळ्याचे देणगीदार श्री. शांताराम राजाराम केळुसकर, थोर शिक्षणतज्ज्ञ श्री. रामकृष्ण विठ्ठल मतकरी आणि समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य श्री. पितांबर दिगंबर देसाई यांचे देखील निधन झाले. या वर्षी १७० अर्जदारांना रु. २१,१९२ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. समाजाचा कायम निधी एकूण रु. ७,६५, १५७.२८ झाला.

१९६६-६७ मध्ये युनीक ब्लॉक्सचे श्री रा. वा. नेरकर यांच्या पत्ती श्रीमती विलम रामचंद्र नेरकर यांनी आपले बंधु कै. प्रभाकर श्रीधर गोसावी यांचे स्मरणार्थ कायम शिष्यवृत्ती सुरु करण्यासाठी रु. दहा हजार ची देणगी दिल्याने व रिफंडवसुली देखील रु. साडेपंधरा हजार झाल्यामुळे समाजाचा एकूण स्थायी निधी रु. ८,१०,०७७.७४ झाला. या वर्षी सावंतवाडीचे धोर समाजसेवक डॉ. हरि शिवराम उर्फ भाऊसाहेब परुळेकर यांचे निधन झाले. त्यांनी दीर्घ काळ समाजाला मदत

केली होती. १९३८ ते ४४ या काळात समाजाचे ते उपाध्यक्ष देखील होते. समाजाचे माजी विद्यार्थी व व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य श्री. सावलाराम रामचंद्र परुळेकर, समाजासाठी सतत ५० वर्षे वर्गणी गोळा करणारे पुण्याचे श्री. नारायण बाबाजी तथा अप्पा आजगांवकर, कोल्हापूरचे माजी नगराध्यक्ष व समाजाचे एक आश्रयदाते श्री. बाळकृष्ण रघुनाथ तेंडोलकर व वसईचे कॉटेक्टर आणि समाजाचे आश्रयदाते श्री. वासुदेव दाजी नेरकर यांचे देखील यावर्षी निधन झाले.

कै. तात्यासाहेब नाईक यांच्या कन्या आणि कै. नरसिंह भाऊ ठाकूर यांच्या पली श्रीमती लक्ष्मीबाई (लाडुबाई) नरसिंह ठाकूर यांचे निधन १९६७ साली झाले. कै. लाडुबाई ह्या आपले वडील व पती यांच्या प्रमाणे विद्यावृद्धि समाजाविषयी आस्था बाळगणाऱ्या व तत्परतेने काम करणाऱ्या होत्या. त्या १९२६ ते २९ व १९३२ ते ४१ अशी बारा वर्षे समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाच्या सदस्य देखील होत्या. या वर्ष अखेरीस कायम निधी रु. ८,४२,५४२.२३ झाला. तसेच १६५ अर्जदार मुलामुलींना रु. २२,७२८ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर झाल्या

श्री. सखाराम सीताराम उर्फ भाऊसाहेब नाईक यांनी वृधापकाळामुळे समाजाच्या अध्यक्षपदाची निवृत्ती १९६८ साली स्वीकारली. आपले काका कै. तात्यासाहेब नाईक यांच्या प्रवृत्तीला अनुसरून भाऊसाहेबांनी सतत ५० वर्षे समाजाचे कार्य निरलसपणे केले. त्यापैकी शेवटची २८ वर्षे ते समाजाचे अध्यक्ष होते. ते प्रथम अध्यक्ष झाले तेव्हा रु. दोन लक्ष असलेला कायम निधी ते निवृत्त होताना रु. साडे आठ लक्षापलीकडे पोचला. त्यांच्यानंतर समाजाच्या अध्यक्ष पदावर श्री. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांची निवड झाली. समाजाच्या सुधारलेल्या घटनेप्रमाणे समाजाचे अध्यक्ष हे चेअरमन राहणार नसल्याने त्या पदावर व्यवस्थापक मंडळाने श्री. भालचंद्र भास्कर सामंत यांची निवड केली आणि व्हाईस चेअरमन म्हणून श्री. वामन नारायण बावकर निवडले गेले. या वर्षी १६७ अर्जदार मुलामुलींना रु. २२,५०० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर

करण्यांत आल्या. सालअखेर समाजाचा कायम निधी रु. ८,६२,६१२.४८ झाला.

श्रीमती सरलाबाई बाबुराव नाईक या आपल्या ज्ञातीतील पहिल्या पदवीधर व विद्यावृद्धि समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाच्या १९२० ते १९२६ पर्यंतच्या पहिल्या रुग्ण सदस्या यांचे यावर्षी निधन झाले. त्यांनी समाजाला रु. १०६६ ची देणगी देखील दिली होती. या खेरीज समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य श्री. भास्कर नारायण आजगांवकर व समाजाचे तत्पर स्वयंसेवक श्री. गणपत सूर्यजी उर्फ गणुमामा देसाई यांचे देखील या वर्षी निधन झाले.

घरोघरी फिरुन वार्षिक वर्गणी गोळा करणारे श्री. पांडुरंग पुंडलीक सरनाईक, श्री. दामोदर रामचंद्र खानोलकर, श्री. बाळकृष्ण जगन्नाथ सामंत व श्री. सहदेव सीताराम वालावलकर वृधापकाळामुळे थकल्याने व त्यांची जागा कुणी घेऊ न शकल्याने हे उत्पन्न हळूहळू घटत गेले. समाजाला ७५ वर्षे पूर्ण झाल्यानंतर तर ते नाममात्र होऊ लागले. पण एक रकमी मोठ्या देणाऱ्या वाढत्या प्रमाणांत येऊ लागल्या. त्यामुळे समाजाचा एकूण निधी झापाट्याने वाढला.

समाजाचा अमृत महोत्सव

दि. २१ व २२ फेब्रुवारी १९७०

विद्यावृद्धि समाजाचा अमृत महोत्सव ७५ वर्षे पूर्ण झाल्यानंतर ७६ व्या वर्षी शनिवारा व रविवार दि. २१ व २२ फेब्रुवारी १९७० रोजी किंग जॉर्ज हायस्कूल, दादर येथील सभागृहामध्ये साजरा झाला. पण त्या पूर्वी समाजाच्या ७५ व्या वार्षिक सभेमध्ये समाजाचे कार्यालय व सभागृह बांधण्यासाठी, स्वतंत्र निधी जमा करण्याचे निश्चित करण्यांत येऊन विजयादशमीच्या शुभ मुहूर्तावर चेअरमन श्री. भालचंद्र भास्कर सामंत आणि चिटणीस श्री. श्रीरंग रघुनाथ प्रभु व श्री. वामन श्रीधर परुळेकर यांनी मुंबई बाहेरील ज्ञाती बांधवांची भेट घेण्याकरिता प्रयाण केले. पुणे, कोल्हापूर, बेळगांव, सावंतवाडी, गोवा इत्यादी ठिकाणी ते गेले आणि त्यांनी समाजाचा प्रचार करून लहान मोठ्या देणाऱ्या गोळा केल्या. त्याच सुमारास मुंबई मध्ये देखील कार्यकर्त्यांनी

फिरावयास प्रारंभ केला. समाजाला देणाऱ्या व स्मरणिकेला जाहिराती मिळून एकूण सुमारे दीड लक्ष रुपये जमले.

महोत्सवाचा उद्घाटन समारंभ दि. २१.२.१९७० रोजी समाजाचे माजी विद्यार्थी, मुंबईचे माजी महापौर व माजी केंद्रीय मंत्री श्री. सदाशिव कान्होबा पाटीलयांच्या अध्यक्षते खाली झाला. प्रारंभी स्वागताध्यक्ष श्री. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांनी समाजाच्या ७५ वर्षांच्या कार्याचा आढावा घेताना असे सांगितले की दि. ३१ मार्च १९६९ पर्यंतच्या कालावधीमध्ये समाजाने २,१३७ विद्यार्थ्यांना रु. ५,५८,७९८/- च्या शिष्यवृत्त्या दिल्या असून समाजाचा कायम निधी रु. ८,६२,५००/- झाला आहे. सध्याचे वार्षिक उत्पन्न रु. २७,००० असून त्या पैकी रु. २३,०००/- त्या शिष्यवृत्त्या वाटल्या जातात. कै. ठाकूर यांनी आपल्या भाषणामध्ये ७५ वर्षांच्या प्रदीर्घ कालावधीत समाजाला लहानमोठ्या देणाऱ्या देणाऱ्या देणगीदारांचे, व्यवस्थापक मंडळाच्या वेळेवेळीच्या सभासदांचे, तसेच पदाधिकाऱ्यांचे आणि स्वयंसेवकांचे कृतज्ञतापूर्वक स्मरण केले. त्यांतही मुख्यतः १९९९ साली समाजाचे कार्य प्राथमिक अवस्थेत असताना रु. ४८,०००/- ची देणगी देणारे कै. लक्ष्मण कृष्ण सामंत आणि १९४६ ते १९५६ च्या दरम्यात एकूण रु. १,५२,०००/- च्या सरकारी प्रॉमिसरी नोटांच्या देणाऱ्या देणारे कै. दिनकर दामोदर देसाई यांचा त्यांनी आवर्जून उल्लेख केला.

समारंभाचे अध्यक्ष श्री. सदाशिव कान्होबा उर्फ आप्यासाहेब पाटील यांनी अमृतमहोत्सव स्मरणिकेचे प्रकाशन केले. साठ वर्षाहून अधिक काळ समाजाची निरनिराळ्या नात्याने सेवा करून १९६८ साली समाजाच्या अध्यक्षपदावरून निवृत्त झालेले सेवाभावी इंजिनिअर सखाराम सीताराम नाईक यांच्या तैलचित्राचे अनावरणही समारंभाच्या अध्यक्षांनी केले. त्यानंतर केलेल्या आपल्या भाषणांत ते असे म्हणाले की, कुडाळ देशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाजाने स्वज्ञाती बाहेरील गरजू व लायक विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्त्या देण्यास जर प्रारंभ केला तर त्याकरिता आपण स्वतः

एक लक्ष रुपये जमा करून देऊ.

या महोत्सवाच्या निमित्ताने दि. २१ व २२ फेब्रुअरी १९७० असे दोन दिवस विविध शैक्षणिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम झाले. त्यातील एक लक्षणीय कार्यक्रम म्हणजे विद्यार्थी व कला या विषयावरील परिसंवाद होय. पद्मश्री वसंतराव देसाई यांच्या पुढाकाराने झालेल्या ह्या कार्यक्रमामध्ये अनेक नामवंत व उदयोन्मुख कलाकारांनी भाग घेतला होता.

कार्यालय व सभागृह उभारण्यासाठी जमविला जाणारा अमृतमहोत्सव निधी ठेवण्यासाठी बडोदा बँकेमध्ये स्वतंत्र खाते उघडण्यांत आले. त्यामध्ये वर्षभरामध्ये रु. ७४,४७७ जमा झाले. त्यांत मुख्यतः श्री. नारायण अनंत तेंडोलकर रु. २,५०१/- श्री. शांताराम कृष्णाजी पंत वालावलकर रु. २,२५१/- व श्री. यशवंत गोपाळ सामंत रु. २००१/- या देणाऱ्यांचा समावेश होता. हा निधी आणखी वाढवून भग कार्यालय व सभागृह उभारण्याचे कार्य हाती घ्यावे असे ठरविण्यात आले.

अमृत महोत्सव ते शताब्दी महोत्सव

(१९७० ते १९९४)

शानदार स्वरूपात साजन्या झालेल्या अमृत महोत्सव नंतर श्री. प्रभाकर गणेश पाटकर यांनी आपले वडील कै. रावसाहेब गणेश रघुनाथ पाटकर यांच्या नावे शिष्यवृत्ती सुरु करण्यासाठी दिलेले रु. ३,०००/- चे सरकारी कर्ज रोखे, श्री. दिनानाथ बाळकृष्ण नाईक यांनी कै. भिकुदादा सामंत परुळेकर यांचे नावे शिष्यवृत्ती सुरु करण्यासाठी दिलेली रोख रक्कम रु. ३०००/- तसेच कोल्हापूरचे श्री. शांताराम कृष्णाजी पंतवालावलकर व सौ. नलिनीबाई शांताराम पंतवालावलकर यांनी शिष्यवृत्त्या सुरु करण्यासाठी दिलेल्या अनुक्रमे रु. ३,००१/- व रु. १,५०१/- च्या रोख देणाऱ्या स्वीकारण्यांत आल्या. या वर्षी १६८ अर्जदार मुलामुलींना रु. २४,६७६ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या.

प्रथम व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य म्हणून आणि मग व्हाईस चेरमन म्हणून (१९२६ते ५०) सतत २५

वर्षे समाजाची तत्परतेने सेवा करणारे सॉलिसिटर श्री. बासुदेव भिकाजी सामंत यांचे या वर्षी निधन झाले. तसेच निष्ठावंत स्वयंसेवक म्हणून सतत ३५ वर्षे समाजाकरिता 'वर्गणी' गोळा करणारे आणि रिफंड वसुली करणारे श्री. दामोदर रामचंद्र खानोलकर आणि समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य व सुवर्ण महोत्सवाच्या काळ्यात व त्यानंतरही घरेघरी फिरून सुमारे एक लक्ष रुपयांच्या देणाऱ्या गोळा करणारे श्री. यशवंत कृष्ण तथा दादासाहेब परुळेकर यांचे देखील या वर्षी निधन झाले. कै. दादासाहेब परुळेकर हे एक निष्ठावंत देशभक्त व कौरिस कार्यकर्ते होते.

समाजाचे अध्यक्ष श्री. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांनी १९७० साली आपल्या पदाचा राजिनामा दिल्यामुळे त्यांच्या जागी समाजाचे माजी विद्यार्थी आणि सरकारी शिक्षण खात्यांतील वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारी प्रा. वामन पांडुरंग खानोलकर यांना अध्यक्ष म्हणून निवडण्यांत आले. ठाकूर यांचा समाजाच्या कायांशी चिटणीसपदापासून अध्यक्षपदापर्यंत सतत ४० वर्षे संबंध होता. समाजाच्या कामाची घडी नीट बसविष्यात त्यांनी महत्वाचा हातभार लावला होता. या वर्षी समाजाचे ज्येष्ठ चिटणीस श्री. श्रीरंग रघुनाथ प्रभु यांनी देखील चिटणीस पदावर ३१ वर्षे काम केल्यावर निवृत्ती स्वीकारली. श्री. प्रभु हे एक नावाजलेले वकील होते. आपल्या वकिली झानाचा आणि कार्यकुशलतेचा उपयोग त्यांनी मुख्यतः माजी विद्यार्थीकडून रिफंड वसुली करण्याकरिता केला. त्यांच्या जागी चिटणीस म्हणून श्री. वसंत रघुनाथ पाटकर यांची निवड केली गेली.

या वर्षी कार्यालय व सभागृह निधीसाठी रोख रु. १०,७९८ च्या देणाऱ्या मिळाल्या. अमृत महोत्सव स्मरणिकेतील जाहिरातीद्वारे, खर्च वजा जाता प्राप्त झालेली रु. ८,८८३.८६ ची रक्कम कार्यालय निधीस देणाऱ्या म्हणून देण्यांत आली. तेव्हा व्याजासह कार्यालय व सभागृह निधीची एकूण रक्कम रु. ९,७०२८/- झाली. सौ. इंदिराबाई काशिनाथ झारापकर व श्री. अरविंद काशिनाथ झारापकर यांजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्यांसाठी प्रत्येकी रु. १,२०१/- प्राप्त झाले.

या वर्षी १६२ अर्जदार मुलामुलीना रु. २२,६४४ च्या शिष्यवृत्या मंजूर करण्यांत आल्या. कायम निधीतून घेतलेल्या सरकारी कर्जरेख्यांची एकूण रक्कम रु. ९०४५०० झाली. समाजाचे माजी उपाध्यक्ष व समाजाला कायद्यांत मदत करणारे ॲड. त्रिविक्रम नारायण वालावलकर यांचे या वर्षी निधन झाले.

१९७१-७२ साली देणाऱ्यांचा ओघ वाढू लागलेला दिसतो. कै. साबाजी बाबाजी पाटील, टोपीवाले यांच्या स्मरणार्थ त्यांच्या भगिनी कै. श्रीमती रमाबाई श्रीधर ठाकूर यांच्या मृत्युपत्रानुसार कार्यालय व सभागृहासाठी रु. ७,६७० ची देणगी प्राप्त झाली. या खाती इतरही काही देणाऱ्या मिळाल्या आणि वर्ष अखेर व्याजासह हा निधी रु. १,१३,९०२ झाला. या खेरीज स्वतंत्र शिष्यवृत्या सुरु करण्यासाठी काही देणाऱ्या मिळाल्या. यातून रु. २४,००० चे नवीन सरकारी कर्जरेखे घेणे शक्य झाले. त्यामुळे कायम निधीतून घेतलेल्या सरकारी कर्ज रेख्यांची रक्कम या वर्षी एकूण रु. ९,२८,५००/- झाली. १६८ अर्जदार मुलामुलींचा रु. २४,१२० च्या शिष्यवृत्या मंजूर करण्यात आल्या. या वर्षी थोर स्वातंत्र्य सैनिक व महात्मा गांधींचे आठ खंडात चरित्र लिहिणारे डॉ. डी.जी. तेंडोलकर यांचे आणि लघुवाद न्यायालयाचे न्यायाधीश श्री. शरदचंद्र सदानंद ठाकूर यांचे निधन झाले.

चिटणीस श्री. शांताराम शंकर ठाकूर हे १९७२ साली सेवानिवृत्त झाल्यामुळे त्यांच्या जागी श्री. दत्तात्रेय सखाराम आजगांवकर यांची निवड झाली. श्री. ठाकूर यांनी चिटणीस म्हणून दहा वर्षे समाजाची निरलस सेवा केली. या वर्षी वसईचे डॉ. सदानंद केशव गाळवणकर यांचे निधन झाले. त्यांनी समाजास रु. २,७०२ च्या देणाऱ्या तर दिल्या होत्या. पण समाजावर त्यांचा विशेष लोभ होता. वसईच्या आर.पी.वाघ हायस्कूल मध्ये, तसेच वसई नगरपालिकेत त्यांचा दीर्घकाल महत्वाचा सहभाग होता. मुंबई विद्यापीठाच्या सिनेटवरही त्यांनी काम केले होते. राज्य विधान परिषदेवरही नगरपालिकांचे प्रतिनिधी म्हणून ते काळी काळ होते. या खेरीज या वर्षी सकाळ्याकर पदभूषण डॉ. नारायण भिकाजी तथा नानासाहेब परुळेकर यांचे, वांद्रयाचे श्री.

नारायण दाजी तथा मामासाहेब सामंत यांचे आणि कै. तात्यासाहेब नाईक यांचे मेहुणे डॉ. विठ्ठल रघुनाथ तेंडोलकर उर्फ क्ही. रघुनाथ यांचेही निधन झाले. कै. ना. भि. परुळेकर हे समाजाचे माजी विद्यार्थी होते. त्यांनी समाजाच्या हीरक महोत्सवाचे अध्यक्षपद भूषविले होते आणि स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. १,२०० ची देणगी देखील दिली होती. कै. मामासाहेब सामंत हे चार वर्षे समाजाचे उपाध्यक्ष व पंचवीस वर्षे ट्रस्टी होते. त्यांनी समाजाला स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. १०,३०० च्या देणग्या दिल्या होत्या. टोपीवाला चॅरिटीचे एक ट्रस्टी व निराश्रित सहाय्यकारी फंडाचे अध्यक्ष म्हणून त्यांनी काम केले होते. बांद्रा पिपल्स को—आॅप. बैकेचे उत्पादक अध्यक्ष, तसेच नेशनल लायब्ररीचे अध्यक्ष बी.ई.एस.टी कमेटीचे सदस्य म्हणूनही त्यांनी काम केले होते. त्यांनी तसेच कै. डॉ. क्ही. रघुनाथ यांनी बांद्रा फिजिकल कल्चर असोसिएशनसाठी, तसेच बांद्रा हिंदू असोसिएशनसाठी केलेले कार्य तर बहुमोल होते. ते देखील काही काळ समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य होते.

या वर्षी १५३ मुलामुलींना रु. २४,१०८ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या. श्री. दिनकर बाळकृष्ण नाईक यांनी त्यांचे वडील कै. बाळकृष्ण भिकाजी तथा मामासाहेब नाईक यांच्या स्मरणार्थ स्वतंत्र शिष्यवृत्ती ठेवण्यासाठी समाजाला रोख रु. ६,०२५ ची देणगी दिली. कै. मामासाहेब नाईक हे समाजाच्या आद्य प्रवर्तकांपैकी एक होते. परतफेड मर्यादित स्वरूपात होत असल्याने गरजू व लायक विद्यार्थ्यांना वाढत्या महागाईतील खर्चानुसार जादा रक्कम मंजूर करणे समाजास शक्य होत नसल्याचे चिटणिसांनी या वर्षाच्या आपल्या अहवालात मुद्दाम नमूद केले होते.

श्री. नारायण दाजी सामंत यांच्या निधनाने रिकाम्या झालेल्या विश्वस्तांच्या जागी समाजाचे उपाध्यक्ष श्री. सीताराम रामचंद्र पाटकर यांची निवड १९७३ साली करण्यांत येऊन त्यांच्या रिकाम्या झालेल्या उपाध्यक्ष पदावर अँड. श्री. विनायक त्रिविक्रम वालावलकर निवडले गेले. कार्यालय व सभागृह निधीमध्ये आता मुख्यतः केवळ व्याज रुपाने वाढ होत

असल्याने हा निधी रु. १,३४,९३२ पर्यंत पोचला. पण जागांचे भाव झपाट्याने वाढत असल्याने त्याचा वापर करता येण्याजोगी सोयीस्कर जागा प्राप्त करणे जमू शकले नाही. रिफंड वसुलीच्या दृष्टीने विचार करता १९७३-७४ ह्या ऐंशीव्या वर्षाच्या अखेरीला परत फेडीच्या शिष्यवृत्तीं पैकी एकूण रु. १,६९,०२५ ची परत फेड झाली. मयत विद्यार्थ्यांकडील रु. १५,४२५ बुडीत खाती धरले गेले. ऐच्छिक परतफेड स्वीकारता येण्यायोग्या शिष्यवृत्त्यांच्या रकमांपैकी एकूण रु. ६०,९५९ ची परतफेड झाली होती. मयत विद्यार्थ्यांकडील रु. १,२४४ बुडीत खाती धरले होते आणि बाकी येणे रक्कम रु. २,१८,१३८ होती. या वर्षी १५३ अर्जदारांना रु. २५,१२८ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यात आल्या. कायम निधीतून घेतलेल्या सरकारी कर्जरोख्यांची रक्कम रु. ९,४३,५००/- झाली.

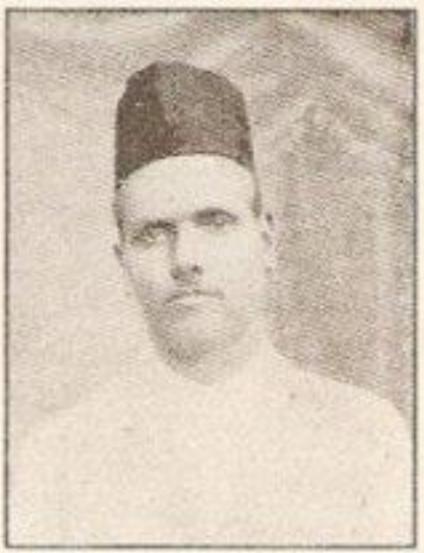
समाजाविषयी अतिशय आस्था बाळगणारे व सतत १२ वर्षे समाजाचे उपाध्यक्ष असलेले डॉ. लाडकोबा श्रीरंग देसाई यांचे, त्याचप्रमाणे समाजाच्या व्यवस्थापकमंडळाचे सदस्य म्हणून सात वर्षे, चिटणीस म्हणून तीन वर्षे व ट्रस्टी म्हणून एक वर्षे पर्यंत कार्य केलेली श्री. दत्तात्रय नरहरी पाटकर यांचे १९७४-७५ या वर्षी निधन झाले. समाजाच्या सुवर्ण महोत्सवासाठी व हीरकमहोत्सवासाठी त्यांनी महत्वाचे कार्य केले होते. कै. डॉ. ला. श्री. देसाई यांच्या जागी उपाध्यक्ष म्हणून माजी चिटणीस कै. श्रीरंग रघुनाथ प्रभु यांची निवड झाली.

या वर्षी श्री. राजाराम गोविंद सामंत आणि कुटुंबियांकडून शिष्यवृत्ती देण्यासाठी रु. १,५००/- आणि सॉलिसिटर श्री. एन. पी. सामंत यांचे चिरंजीव श्री. आनंद नीळकंठ सामंत यांच्याकडून पारितोषिक फंडासाठी रु. ३,५००/- च्या देणग्या प्राप्त झाल्या. समाजाच्या भांडवलाच्या व इतर निधींच्या रकमांची गुंतवणूक अथवा फेर गुंतवणूक संस्थेला हितकारक अशा रीतीने करून संस्थेच्या उत्पन्नात वाढ करण्याच्या दृष्टीने संस्थेच्या घटनेत योग्य तो बदल करण्याकरिता दि. १.१२.१९७४ रोजी साधारण मंडळाची सभा

दाते



के. शंतराम राजाराम केशवकर



के. बालकृष्ण बाचुराव तेंडोलकर



के. लक्ष्मण सखाराम आङगङ्कर



के. रवळनाथ पांडुरंग सामंत



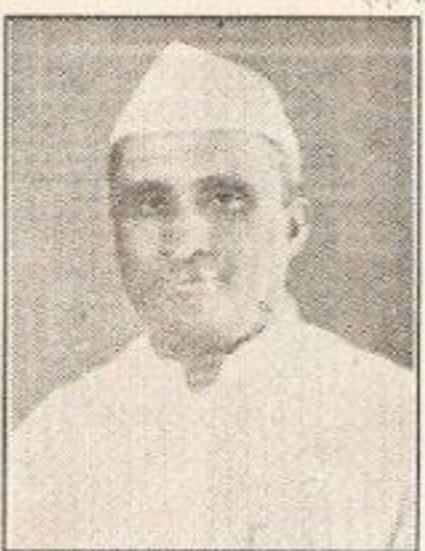
के. ओमती मधुराबाई दत्तात्रेय पट्टिकर



के. लाडकोबा श्रींग देसाई
एव. सी. ए. एस.



के.प्रा. रामचंद्र विठ्ठल पट्टिकर,
एम. ए., एम. एड. (लॉडस)

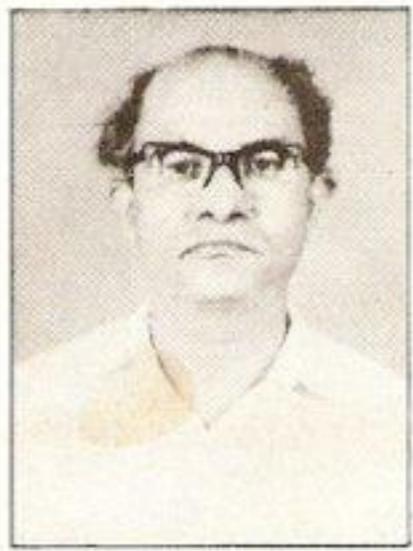


के. स. का. पाटोल
माजी महापौर व केंद्रीय मंत्री

**माजी
विद्यार्थी**

वर्ष १९९३

पदाधिकारी आणि



मोहन अ. पत्लेकर



शंतराम अ. सामंत



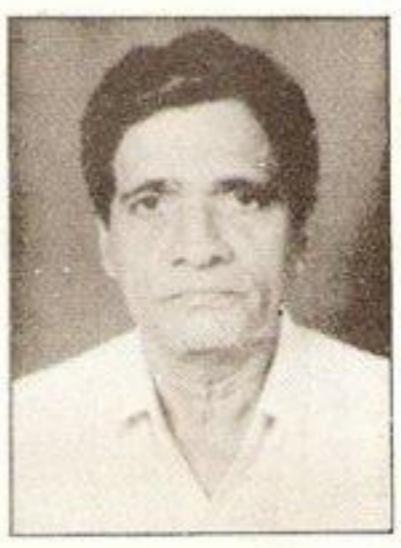
दत्तात्रेय स. आजगांतकर



डॉ. तुकाराम रा. पेटे



श्रीमती सुधीलेश्वारी ल. गवांगकर



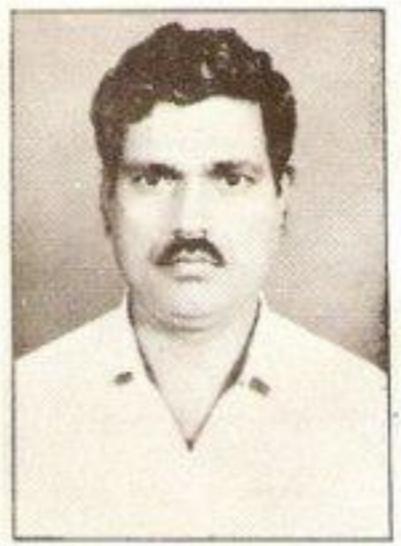
वसंत दा. नाईक



विलासराव दा. नाईक



श्रीप्रसाद दा. पंतवाळेकर



नरेण्यन दा. पंतवाळेकर

- १४ अरवेरील

व्यवस्थापक मंडळ

कार्याधिकारी

श्री. भा. आ. सांगत



उपकार्याधिकारी

श्री. डॉ. अ. अंदाजेल



सभासद



श्री. गोपाल लं. वार्तनिकर



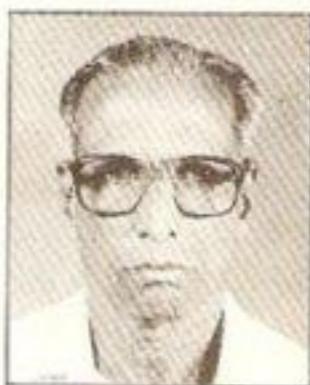
डॉ. फ. विजयर. वर्कोट



श्री. जयश्री टु. वार्तनिकर



श्रीपाद डा. पाटील



राजेन्द्रलक्ष्म वि. घोडके



नारायण फा. वार्तनिकर



सुंदर डा. सांगत वैद्यनाथकर



जयंत डा. सांगत कोपराडकर



सुधाकर सु. पाटकर



दत्तेनाथ डि. सांगत



शाहर. डे. देशपांडे

दाते



शांतराम कृष्णजी पंतवालावलकर



श्री. सुधाकर श्रीरंग प्रभू



श्री. एकनाथ केशव ट्रिवेदी



सौ. राधाबाई तु. वालावलकर



श्री. गंगाबाई भिकाजी नाईक



कृ. श्रीमती शारदाबाई गजानन नाईक

प्रभु यांच्या जागी श्री. दत्तात्रय पुरुषोत्तम गाळवणकर हे निवडले गेले. चिटणीस श्री. दत्तात्रय सखाराम आजगांवकर यांनी राजिनामा दिल्यामुळे त्यांच्या जागी श्री. वसंत शंकर कोचरेकर यांची निवड झाली.

यानंतर या वर्षी समाजाच्या काही महत्वाच्या कार्यकर्त्यांचे निधन झाले. १९२६ सालापासून १९७० पर्यंत समाजाशी प्रथम चिटणीस म्हणून, मग व्हाईस चेअरमन व पुढे अध्यक्ष या नात्याने महत्वपूर्ण सेवा करणारे श्री. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांचा, तसेच १९५५ ते १९७५ पर्यंत प्रथम व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य, मग चिटणीस व पुढे चेअरमन म्हणून कार्य करणारे श्री. भालचंद्र भास्कर सामंत यांचा त्यामध्ये अंतर्भाव होता. या दोघांनीही समाजाकरिता निधी गोळा करणे, सुवर्ण महोत्सव व हीरक महोत्सव यशस्वीपणे पार पाडणे, निधीचे वितरण व्यवस्थित करणे अशी कामे निरलसपणे पार पाडली होती. ज्ञातीतील तसेच इतरही सामाजिक संस्थामध्ये देखील ते सतत कार्यरत होते. समाजाचे स्वयंसेवक म्हणून सतत ३५ वर्ष कार्य करणारे श्री. पांडुरंग पुंडलिक सरनाईक आणि व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य श्री. दत्तात्रय त्रिंबक सामंत कोपराडकर यांचे देखील यावर्षी निधन झाले. घटनादुरुस्तीनुसार समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाला प्राप्त झालेल्या नव्या अधिकारान्वये कायम निधीची योग्य तन्हेने गुंतवणूक करून, उत्पन्नात भर घालण्याकरिता तजांचा सल्ला घेण्यांत आला आणि समाजाकडे असलेले रु. ९,४३,५०० दर्शनी किंमतीचे ३ टक्के व ५.७५ टक्के व्याज दराचे कर्ज रोखे सेंट्रल बँक ऑफ इंडिया मार्फत विकण्यांत आले. त्यातून प्राप्त झालेली रु. ५,७२,०२८ ची रक्कम सेंट्रल बँक ऑफ इंडियामध्येच ६१ महिन्यांच्या मुदत ठेवीमध्ये १० टक्के व्याज दराने लगेच गुंतविण्यांत आली. मूळ किंमतीच्या फरकाची रक्कम रु. ३,७१,४७२ ही कायम भांडवलातून प्रमाणत: कमी करण्यांत आली. या व्यवहारामुळे विविध पारितोषिक व शिष्यवृत्ती फंडांच्या मूळ रकमांमध्ये घट झाल्याचे जरी वरकरणी दिसले, तरी त्यावरील व्याजाच्या उत्पन्नांत दुपटीने वाढ होऊन यापुढे त्यांत सालिना सुमारे रु. ३०,०००/- ची भर

पडण्याची सोय झाली.

या वर्षी समाजाला देणाऱ्या देखील भरीब प्रमाणांत मिळाल्या. त्यामध्ये कै. पांडुरंग पुंडलिक तथा आबा सरनाईक यांच्या नांवे स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी त्यांच्या पत्नी श्रीमती राधाबाई पां. सरनाईक यांनी दिलेले रु. १०,०००/- तसेच कै. महादेव विठ्ठल सामंत यांच्या स्मरणार्थ त्यांचा नातू डॉ. महेश गोविंद सामंत याजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ५,५०१/- श्री. बाबाकृष्ण जगन्नाथ सामंत याजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ३,५०१/- श्री. वामन विष्णु ठाकूर यांजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. २,०००/- कै. भास्कर केशव परुळेकर यांच्या स्मरणार्थ श्री. दिनकर भास्कर परुळेकर यांजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. १,१११ आणि कै. रघुनाथ गणेश ठाकूर यांच्या स्मरणार्थ स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी श्रीमती सीताबाई रघुनाथ ठाकूर यांजकडून रु. १,१०१/- या देणाऱ्यांचा अंतर्भाव होता. या खेरीज कै. अनंत रघुनाथ पाटकर पारितोषिकासाठी सौ. वंदना श्रीपाद पंतवालावलकर यांजकडून रु. १,००० मिळाले.

कार्यालय व सभागृह निधीची रक्कम या वर्षी व्याजासह रु. १,७१,९०९ झाली. तसेच १८७ विद्यार्थ्यांना एकूण रु. ३७, १२८ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. १९७७ साली पदाधिकाऱ्यांमध्ये काही महत्वाचे फेरबदल झाले. समाजाचे चिटणीस म्हणून १९४६ ते ७७ पर्यंत सतत ३१ वर्षे महत्वाचे कार्य करणारे श्री. वामनराव श्रीधर परुळेकर यांनी त्या पदाची निवृत्ती स्वीकारली. पण समाजाचे एक उपाध्यक्ष अऱ्ड श्री. विनायक त्रिविक्रम वालावलकर यांनी देखील कार्यबाहुल्यामुळे आपल्या पदाची निवृत्ती स्वीकारल्यामुळे श्री. वामन श्रीधर परुळेकर यांची त्यांच्या जागी उपाध्यक्ष म्हणून निवड करण्यांत आली. श्री. वसंत रघुनाथ पाटकर ह्या चिटणीसांनी देखील यावर्षी निवृत्ती स्वीकारली. चेअरमन पदावर एक वर्षभर असलेले प्रा. दत्तात्रय गणेश वालावलकर यांनी प्रकृती बरी नसल्यामुळे निवृत्ती स्वीकारली असता श्री. वामन नारायण बावकर हे चेअरमन म्हणून निवडले गेले आणि

श्रीमती सुशिला गव्हाणकर व्हाईस चेअरमन झाल्या.

दुर्दैवाने त्यानंतर लवकरच प्रा. दत्तात्रय गणेश वालावलकर यांचे निधन झाले. ते समाजाच्या कार्याति नेहमीच उत्साहाने भाग घेत असत. या खेरीज व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य श्री. मोरेश्वर भास्कर बोद्रे यांचे देखील या वर्षी निधन झाले. कै. बोद्रे निराश्रित सहाय्यकारी फंडाचे देखील कार्य करीत असत. दादरच्या शारदाश्रम विद्यामंदिराच्या स्थापनेत, तसेच बोरिवलीच्या अभिनव सहकारी गृहवसाहतीच्या उभारणीत त्यांचा महत्वाचा सहभाग होता.

यावर्षी प्राप्त झालेल्या देणायांमध्ये कै. येसूबाई अनंत तेंडोलकर यांच्या स्मरणार्थ शिष्यवृत्ती करिता श्री. गंगाराम गोविंद पाटकर यांजकडून रु. २,६४७/- शिक्षणमहर्षी कै. रामचंद्र विठ्ठल परुळेकर स्मारक शिष्यवृत्तीसाठी श्री. बाळकृष्ण रामचंद्र परुळेकर व इतर यांजकडून रु. ४,००२/- श्री. केशव वासुदेव प्रभुकोचरेकर यांजकडून कै. वासुदेव भिकाजी प्रभुकोचरेकर व कै. लक्ष्मीबाई वासुदेव प्रभुकोचरेकर स्मरणार्थ रु. २,०००/- कै. राधाबाई केशव प्रभुकोचरेकर स्मरणार्थ रु. २,००१/- तसेच कै. भालचंद्र भास्कर सामंत यांचे स्मरणार्थ श्री. अशोक भालचंद्र सामंत यांजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीकरिता रु. २,००० मिळाले.

या वर्षी परतफेड स्वीकारण्याजोग्या रिफंड वसुलीचे रु. ६,१५८ जमा झाले. विशेष म्हणजे समाजाच्या निधीची गतवर्षी फायदेशीर गुंतवणूक केल्यामुळे यावर्षी व्याज खाती रु. ७०,०४७ जमा झाले. बँकातील बचत व मुदतीच्या ठेवी खात्यातील एकूण रक्कम रु. ८,६९,२३४ झाली होती. या वर्षी शिष्यवृत्त्यांकरिता २३० अर्ज आले होते. त्यापैकी १७९ विद्यार्थ्यांना रु. ४९,७४० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. उपलब्ध होणारे व्याज वाढल्यामुळे या वर्षी सर्व मुलामुलींना दिल्या जाणाऱ्या शिष्यवृत्तीच्या रकमेत भरीव वाढ करणे शक्य झाले.

श्री. शांताराम शंकर ठाकूर यांनी चिटणीस पदाची १९७८ साली निवृत्ती स्वीकारल्याने त्यांच्या जागी श्री.

दत्तात्रय सखाराम आजगांवकर यांची निवड करण्यांत आली. या वर्षी वांद्रे येथील श्री. भगवंत जगन्नाथ महाजन व श्री. दत्तात्रय पांडुरंग नाईक तसेच बेळगांव येथील धोडोपंत राजाराम उर्फ बाबुराव ठाकूर यांचे निधन झाले. कै. भ. ज. महाजन हे समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळाचे १० वर्षे सदस्य होते. या खेरीज जातीच्या निराश्रित सहाय्यकारी फंड व गौडब्राह्मण सभा ह्या संस्थामध्ये तसेचे बांद्रा पिपल्स को-ऑपरेटीव बँकेमध्ये त्यांनी व्यापक सामाजिक कार्य केले होते. कै. दत्तोपंत नाईक हे कै. तात्यासाहेब नाईक यांचे चिरंजीव होते. विलायतेतून उच्च विद्या विभूषित होऊन आलेले दत्तोपंत साधेपणे रहात. कर्नाटिकामध्ये उद्योग व्यवसायानिमित्त रहात असता तिथल्या गरीब जातीबांधवांमध्ये त्यांनी भरीव कार्य केले. पुढे वांद्र्याला रहावयास आल्यावर त्यांनी बंद पडलेले गौडब्राह्मण त्रैमासिक पुनरुज्जीवित केले व योग्य मार्गाला लावले. कै. बाबुराव ठाकूर हे थोर देशभक्त व बेळगांवच्या तरुणभारत ह्या झुंझार वृत्तपत्राचे संपादक होते. महाराष्ट्रामध्ये बेळगांव व इतर सीमाभाग यावा म्हणून त्यांनी सतत प्रयत्न केले. ज्ञाती कार्याबद्लही त्यांना विशेष आस्था होती.

या वर्षी सौ. प्रेमा भिकाजी पाटकर, गोरेगांव यांजकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ८,००१/- ची देणगी मिळाली. त्या खेरीज शिक्षण महर्षी कै. रामचंद्र विठ्ठल परुळेकर स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी त्यांच्या कुटुंबियांकडून आणखी रु. ६,००२/- प्राप्त झाले. तसेच कोळीवाडी येथील डॉ. यशवंत आत्माराम सामंत यांनी स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ३,००३/- दिले. वर्ष अखेरीस समाजाच्या नांवे बँकांच्यां बचत व मुदतीच्या ठेव खात्यांत रु. ९,७७,२४५/- जमा होते. या वर्षी २०१ विद्यार्थ्यांना रु. ५७,३२० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. पण त्यापैकी काही शिष्यवृत्त्या योग्य शिक्षणक्रमाला प्रवेश न मिळणे वा समाधानकारक प्रगती न होणे यामुळे रद्द केल्या. त्यामुळे प्रत्यक्षात रु. ४९,६१०/- ची रक्कम शिष्यवृत्त्यांवर खर्च झाली.

डॉ. बाळकृष्ण रामचंद्र सामंत यांनी ट्रस्टी ह्या

पदाची निवृत्ती १९७९ मध्ये स्वीकारल्यामुळे त्या पदावर डॉ. तुकाराम रामकृष्ण प्रभु ह्यांची निवड करण्यांत आली. डॉ. सामंत हे ह्या पदावर १९५९ ते १९७९ पर्यंत सतत वीस वर्षे होते. त्यांनी ट्रस्टीचे प्रतिनिधी म्हणून व्यवस्थापक मंडळावर चांगले काम केले. या वर्षी समाजाचे खजिनदार श्री. दामोदर रावजी सामंत यांचे निधन झाल्यामुळे त्यांच्या पदावर श्री. शिवराम अनंत तथा आण्या सामंत यांची निवड करण्यांत आली. श्री. वामन बावकर निवृत्त झाल्यामुळे चेअरमन म्हणून श्रीमती सुशिला लक्ष्मण गव्हाणकर यांची व व्हाईस चेअरमन म्हणून श्री. वसंत रघुनाथ पाटकर यांची निवड झाली. चेअरमनच्या पदावर यावर्षी प्रथमत: एक झाती भगिनी निवडली गेली. समाजाचे माजी अध्यक्ष प्रा. वामन पांडुरंग खानोलकर यांचे या वर्ष अखेरीस निधन झाले. त्यांनी मैनेजिंग ट्रस्टी म्हणून टोपीवाला चैरटीचे देखील काम केले होते. या वर्षी समाजाच्या एक देणगीदार व समाजाच्या कामाविषयी सतत आस्था असणाऱ्या सौ. इंदिराबाई सदाशिव पाटील (माजी केंद्रीय मंत्री श्री. स. का. पाटील यांच्या पली) यांचे देखील निधन झाले.

या वर्षी श्री. अनंत दामोदर सामंत यांनी स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ५,०००/- ची देणगी दिली. या खेरीज शिक्षण महर्षि कै. रा. वि. परुळेकर स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडाच्या पूर्वीच्या एकूण रु. १३,०१०/- च्या देणगीमध्ये भर म्हणून आणखी रु. ४,२५४ च्या देणग्या त्यांच्या कुटुंबातील व्यक्तीकडून मिळाल्या. तसेच श्री. राधाकृष्ण श्रीरंग दाभोळकर यांच्याकडून स्वतंत्र शिष्यवृत्तीसाठी रु. ५,०००/- ची देणगी मिळाली. खेरीज यावर्षी ऐच्छिक रिफंड रु. १९,७२३ वसूल झाला. वर्ष अखेरीस बैंकेतील जमा रक्कम रु. १०,५७,००२/- झाले. या वर्षी १६८ विद्यार्थ्यांना रु. ४५,७२० च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या होत्या. पण प्रत्यक्षात रु. ४१,१७५ एवढीच रक्कम शिष्यवृत्त्यावर खर्च झाली. कार्यालय व सभागृह निधिची रक्कम व्याजाने वाढून या वर्षी रु. २,०४,०८७ झाली. पण प्रयत्न करूनही कार्यालयासाठी सोयीस्कर जागा मिळू शकली नाही.

१९८०-८१ ह्या समाजाच्या सत्याएशीव्या वर्षामध्ये १६७ विद्यार्थ्यांना एकूण रु. ५३,२३०/- च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. परंतु प्रत्यक्षामध्ये रु. ४८,११४ चे वितरण झाले. एकूण कायम निधीची रक्कम रु. ९,९४,३४६.६४ झाली. त्यामध्ये कार्यालय व सभागृह निधीच्या रु. २,१७,९९४.३३ चा अंतर्भाव होता.

१९८१ मध्ये श्री. सदाशिव कानोजी तथा आण्यासाहेब पाटील यांचे, तसेच श्री. गोविंद रामचंद्र तथा गणपतराव सामंत यांचे निधन झाले. कै. स. का. पाटील हे समाजाचे माजी विद्यार्थी होते. स्वातंत्र्य चळवळीमध्ये भाग घेऊन पुढे ते कौंग्रेसचे कार्यकर्ते झाले. मुंबईच्या सुधारणासाठी ते सतत प्रयत्नशील होते. पुढे ते खासदार व केंद्रीय मंत्री देखील झाले. त्यांचा समाजावर विशेष लोभ असल्याने समाजाच्या अमृतमहोत्सवाचे अध्यक्षपद त्यांनी स्वीकारले होते. कै. गणपतराव सामंत १९ वर्षे समाजाचे ट्रस्टी होते. त्याखेरीज टोपीवाला चैरटीचे कामही त्यांनी दीर्घकाळ पाहिले. निराश्रित सहाय्यकारी फंडाचे कार्यालय व संपूर्ण व्यवस्थापन त्यांच्याच पेढीवरून केले जात असे. या वर्षी श्री. विनायक नारायण नाईक हे प्रथमत: चिटणीस म्हणून निवडले गेले.

या वर्षी झारापकर टेलरींग कॉलेजचे संस्थापक श्री. काशिनाथ रामचंद्र झारापकर यांनी रु. २५,०१०/- आणि त्यांच्या पली सौ. इंदिरा काशिनाथ झारापकर यांनी रु. ५०,०२०/- कै. रामचंद्र कान्होबा झारापकर व कै. श्रीमती लक्ष्मीबाई रामचंद्र झारापकर स्मारक शिष्यवृत्ती फंडासाठी दिले. तसेच श्री. रामचंद्र हरी आजगांवकर, श्री. लक्ष्मण हरी आजगांवकर, श्री. काशिनाथ शंकर रामदास आणि श्रीमती सुमती श्रीधर वालावलकर यांनी प्रत्येकी रु. २,५००/- च्या देणग्या दिल्या. यामुळे एकूण कायम निधी रु. १०,८५,४५६.५९ झाला. त्यापैकी कार्यालय व सभागृह निधीची रक्कम रु. २,३९,४६०.२८ होती.

या वर्षी २०७ विद्यार्थ्यांना एकूण रु. ६३,६९६ च्या शिष्यवृत्त्या मंजूर करण्यांत आल्या. पण प्रत्यक्षात रु. ५४,४४४/- चे वितरण होऊ शकले.

१० वी व १२ वी च्या परीक्षांसाठी समाजाकडे असलेली पारितोषिके दि. ११ ऑक्टोबर १९८१ रोजी ठाणे येथे गौड ब्राह्मण सभेच्या विद्यामाने भरलेल्या दसरा सम्मेलनामध्ये वाटण्यांत आली. समाजाचे एक विश्वस्त श्री. रामचंद्र वासुदेव नेरकर यांचे १९८२ मध्ये निधन झाले. ते समाजाच्या कार्यामध्ये आपुलकीने लक्ष घालीत असत. कै. रामभाऊ सात वर्षे समाजाचे विश्वस्त होते. त्यांच्या निधनाने रिकाम्या झालेल्या विश्वस्त पदावर श्री. विनायक त्रिविक्रम बालाबलकर यांची निवड करण्यांत आली. १९८२ साली चेअरमन म्हणून श्री. वसंत रघुनाथ पाटकर आणि व्हाईस चेअरमन म्हणून श्री. श्रीपाद बाळकृष्ण पाटील यांची निवड झाली. समाजाचे माजी विश्वस्त कै. रामचंद्र वासुदेव नेरकर यांच्या इच्छेनुसार मरणोत्तर देणगी रु. २०,०००/- शिष्यवृत्तीसाठी प्राप्त झाली. तसेच गोरेगांवचे श्री. काशिनाथ रामचंद्र झारापकर आणि सौ. इंदिराबाई काशिनाथ झारापकर यांनी आपल्या पूर्वीच्या देणग्यांमध्ये आणखी रु. ८,८००/- ची भर घातली. तुकाराम हरी पहळेकर यांच्या अंतिम इच्छेनुसार मरणोत्तर देणगी रु. ५,०००/- प्राप्त झाली. या खेरीज या वर्षी श्री. पंकज कमलाकर गव्हाणकर, माहीम आणि कु. विजया शांताराम मुणगेकर, विलेपालें यांच्या कडून प्रत्येकी रु. २,५००/- च्या देणग्या मिळाल्या. त्यामुळे कार्यालय व सभागृह निधीच्या रु. २६३,५६४.०८ सह कायम निधीची एकूण रक्कम रु. ११,६१,७६७.३९ झाली. शिष्यवृत्त्यांकरिता २०१ अर्ज मंजूर करण्यांत येऊन रु. ६४,३२० शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या.

समाजाचे अध्यक्ष श्री. राजाराम गोविंद तथा बापुसाहेब सामंत यांचे दि. ३०.१.१९८३ रोजी निधन झाले. सुमारे ५० वर्षे ते समाजाच्या कार्याशी संबंधित होते. व्यवस्थापक मंडळाचे सभासद, चिटणीस, खजिनदार इत्यादी पदांवर काम केल्यानंतर १९७६

सालापासून निधनापर्यंत ते समाजाचे अध्यक्ष होते. समाजाच्या घटनेची वेळोवेळी करावी लागलेली दुरुस्ती व चौरिटी कमिशनबरोबर झालेला समाजाचा पत्रव्यवहार या बाबतीत त्यांनी योग्य मार्गदर्शन केले होते. आपल्या जातींच्या तसेच इतर समाजिक व शैक्षणिक संस्थांच्या कार्यातही त्यांचा सक्रीय सहभाग होता. त्यांच्या निधनाने रिकाम्या झालेल्या समाजाच्या अध्यक्षपदावर आय.आय.टी. पवईचे सेवानिवृत्त अध्यापक डॉ. गंगाधर सदाशिव तेंडोलकर यांची निवड करण्यांत आली. श्री. श्रीपाद बाळकृष्ण पाटील हे चेअरमन व श्री. जगन्नाथ भगवंत महाजन व्हाईस चेअरमन झाले.

या वर्षी श्री. काशिनाथ रामचंद्र झारापकर आणि त्यांच्या पली सौ. इंदिरा काशिनाथ झारापकर यांनी आपल्या यापूर्वीच्या एकूण रु. ६०,७५९/- च्या देणग्यामध्ये रु. १०,०००/- ची भर घातली. या खेरीज कु. कुसुम विडुल पाटील, पुणे, रु. ३,०००/-, श्री. शांताराम कृष्णाजी पंतवालाबलकर, कोल्हापूर, रु. २,५००/-, व सौ. सुनंदा अनंत गोसाबी, गिरगांव, रु. २,५०१/- अशा इतर देणग्या समाजाला मिळाल्या. त्यामुळे कार्यालय व सभागृह निधीच्या रु. २,९०,२७३.९३ च्या रकमेसह एकूण कायम निधी रु. १२,१३,३२३.२४ झाला. आतापर्यंतच्या नव्यद वर्षातील काळामध्ये समाजाने विद्यार्थ्यांना एकूण मदत रु. ११,२६,९७१.२७ केली. पण त्यापैकी रु. ८,७७,४५३.७७ ची रक्कम परत फेड स्वीकारण्याजोगी असूनही प्रत्यक्षात माजी विद्यार्थ्यीकडून या वर्षअखेरपर्यंत फक्त रु. ३,०१,४२३.४६ वसूल झाले. यावर्षी २१२ विद्यार्थ्यांना रु. ८१,०३०/-च्या शिष्यवृत्त्या दिल्या गेल्या.

या वर्षी प्रथमतःच समाजाची वेगवेगळ्या परीक्षांकरिता असलेली पारितोषिके समारंभपूर्वक देण्यांत आली. इयता १० व १२ वीच्या परीक्षेत अनुक्रमे कीमान ८५% व ८०% गुण मिळविलेल्या स्वज्ञातीतील २७ विद्यार्थ्यांचा हा कौतुक सोहळा बालमोहन विद्यामंदिर दादर येथे आयोजित केला होता. डॉ. गंगाधर सदाशिव तेंडोलकर यांच्या हस्ते या सर्व विद्यार्थ्यांना समाजातके प्रत्येकी रु. १००/- ची रोख

पारितोषिके व प्रशस्तीपत्रे देण्यांत आली. या समारंभाला मुलांचे पालक व निमंत्रित बंधुभगिनी बहुसंख्येने उपस्थित होते. समाजातर्फे स्वतंत्र फंडातून दिली जाणारी पारितोषिके देखील या समारंभामध्ये वितरीत करण्यांत आली. या निमित्ताने समाजाचे कार्य झाती बांधवांसमोर आकर्षकपणे सादर करता आले आणि झातीतील जी मुले खुल्या स्पर्धेमध्ये विशेष शैक्षणिक यश मिळवीत असतात त्यांचे एकत्र कौतुकही साध्य झाले. यानंतर विद्यार्थ्यांच्या वार्षिक कौतुक सोहळ्याची ही प्रथा कायम सुरु राहिली आहे.

या पुढील काळात मोठ्या रकमांच्या देणग्या अधिक प्रमाणात येऊ लागल्या. त्यामध्ये शिष्यवृत्त्यांबरोबरच पारितोषिकांकरिता येणाऱ्या देणग्यांचाही अंतर्भाव होता. एके काळी फक्त कै. डॉ. विश्वनाथ बाळाजी पाटील पारितोषिक रु. ३६ शालांत परीक्षेत पहिल्या येणाऱ्या मुलाला दिले जात असे. तिथे आता प्रतिवर्षी साडेतीन हजार रुपयांहून अधिक रकमेची पारितोषिके दिली जाऊ लागली. झातीतील हुशार मुलांना त्यामुळे चांगले प्रोत्साहन प्राप्त झाले. पण घरोघरी फिरून वार्षिक वर्गणी गोळा करणारे स्वयंसेवक मात्र हळूहळू कमी होऊन हे सदरच संपले.

या वर्षी श्रीमती सुलोचना महादेव प्रभु, माहिम रु. १०,०००/-, श्री. काशिनाथ रामचंद्र झारापकर व सौ. इंदिरा का. झारापकर (पूर्वीच्या रु. ७०,७५९/- मध्ये वाढ) रु. ९,१६५/- अशा मोठ्या देणग्या प्राप्त झाल्या. या खेरीज सौ. लीलावती रा. आजगांवकर, गोरेगांव, रु. ५,००१/-, श्री. रघुनाथ विठ्ठल धोंड, गोरेगांव रु. ५,०००/-, सौ. रजनी दि. खानोलकर, धांडुप रु. ५,०००/-, सौ. आसावरी वि. परुळेकर, गोवा रु. ५,०००/-, श्रीमती शकुंतला गंगाधर सामंत, पुणे ५,०००/- व श्री. दिगंबर सदाशिव प्रभु चेंदवणकर जुहू रु. ५,०००/- अशा इतरही भरीव देणग्या प्राप्त झाल्या. समाजाचा एकूण कायम निधी रु. १५,२६,६४४.२६ झाला. तसेच २४६ विद्यार्थ्यांना रु. १५९६० च्या शिष्यवृत्त्यांचे वितरण करण्यांत आले.

यावर्षी कौतुक सोहळा व पारितोषिक वितरण

समारंभ शारदाश्रम विद्यामंदिर, दादर येथे दि. २६ ऑगस्ट १९८४ रोजी झाला. याप्रसंगी प्रमुख पाहुणे महणून विराचे समाजसेवक श्री. वामन त्र्यंबक सामंत हे उपस्थित होते. त्यांच्या हस्ते स्वतंत्र पारितोषिक फंडातून रु. १४६७ ची एकूण १६ पारितोषिके तसेच गत वर्षापासून सुरु करण्यात आलेल्या खास पारितोषिक योजनेनुसार १० वीच्या १८ व १२ वीच्या ४ विद्यार्थ्यांना प्रत्येकी रु. १००/- ची खास पारितोषिके देण्यांत आली. या सोहळ्याला झातीबांधव मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळावर सदस्य महणून १९६८ पासून सातत्याने कार्य करणारे श्री. वसंत रघुनाथ पाटकर यांचे दि. २६.११.१९८४ रोजी अकाली निधन झाले. ते १९७० ते ७७ पर्यंत समाजाचे चिटणीस होते आणि १९७९ ते ८२ मध्ये व्हाइस चेअरमन व १९८२ ते ८४ पर्यंत चेअरमन होते. त्यांनी अतिशय तळ्यालीने समाजाच्या कामांना हातभार लावला होता. त्यांच्या निधनाने रिकाम्या झालेल्या पदावर सेवानिवृत्त कस्टम अधिकारी श्री. श्रीषाद बाळकृष्ण पाटील हे चेअरमन झाले.

अमृत महोत्सवाच्या वेळी सुरु केलेल्या कार्यालय व सभागृह निधीवरील व्याजाचा विनियोग दहा वर्षे न झाल्यामुळे आयकर खात्याने १९७९—८० सालाकरिता लावलेला रु. २,५८८/- चा कर या वर्षी भरण्यांत आला. मात्र १९८०—८१ सालाकरिता या खात्याने लावलेल्या रु. ४८,१०८ च्या कराविरुद्ध अपील करण्यांत आले. श्री. मोहन महादेव परुळेकर, सौ. ए. हे समाजाचे उपाध्यक्ष अपिलाचे काम पहात होते. त्यांनी ५० टक्केहून जास्त सूट मिळविली. त्यामुळे फक्त रु. २३,५२६/- आयकर वर्ष अखेरनंतर भरावा लागला.

१९८५—८६ सालामध्ये स्वतंत्र शिष्यवृत्ती व पारितोषिक फंडासाठी श्रीमती गंगुलाई शंकर आंबेसकर, विरार रु. १०,०००/-, श्रीमती रुक्मिणी बाळकृष्ण परुळेकर, वाशी, रु. ५,०००/-, डॉ. तुकाराम रामकृष्ण प्रभू, माटुंगा, रु. ५,०००/-, श्रीमती सरोज वेसुवाला (कुलकर्णी) रु. ४,०००/-, श्री. जयंत दत्तात्रेय सामंत, वसई रु. ३,३०८, श्री.

जयंत विश्वनाथ नाईक, माहीम रु. २,५०१/- व श्री. दिवाकर बाबुराव सामंत, बोरीवली रु. २,५००/- अशा महत्वाच्या देणग्या मिळाल्या. यांदेरीज समाजाच्या कायम फंडासाठी एका ज्ञातीबांधवाकडून रु. १०,०००/- व कै. भास्कर रावजी तिरोडकर यांच्या वारसदारंकडून रु. ३,०००/- अशा आणखी काही मोठ्या देणग्या मिळाल्या. त्यामुळे समाजाच्या एकूण निधीची रकम रु. १५,९८,३९१.७२ एवढी झाली.

यावर्षी शिष्यवृत्त्यांच्या वितरणामध्ये देखील लक्षणीय वाढ झाली. २८१ विद्यार्थ्यांना रु. १,१०,६३०/- वाटण्यांत आले. विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या विद्यार्थ्यांचा गुणगौरव व कौतुक सोहळा दि. २५ ऑगस्ट १९८५ रोजी बालमोहन विद्यामंदिर, दादर येथे झाला. या प्रसंगी आय.आय.टी. पवईचे सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. भास्कर बाळकृष्ण परुळेकर प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. त्याच्या हस्ते समाजाच्या स्वतंत्र पारितोषिक फंडातील रु. २,७६७ ची १८ पारितोषिके देण्यांत आली. तसेच विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या १० वीच्या २० व १२ वीच्या ६ विद्यार्थ्यांना प्रत्येकी रु. १०० प्रमाणे एकूण रु. २,६०० ची पारितोषिके समाजाच्या सर्वसाधारण कायम फंडातून देण्यांत आली. या समारंभाला ज्ञातीबांधव मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

विद्यावृद्धि समाजाच्या कार्यात दीर्घ कालपर्यंत सक्रीय असलेले अँड. श्री. श्रीरंग रघुनाथ प्रभु ह्यांचे दि. २७.७.१९८५ रोजी निधन झाले. १९४० पासून १९७० पर्यंत सतत ३१ वर्षे ते समाजाचे चिटणीस होते. त्यानंतर त्यांनी १९७४ ते १९७६ पर्यंत उपाध्यक्ष म्हणून काम केले. समाजाच्या रिफंड वसुलीच्या आणि इतर कायदेशीर कामात त्यांनी विशेष लक्ष घातले होते. समाजाचा हीरकमहोत्सव आणि अमृत महोत्सव यशस्वी करण्यामध्ये त्यांचा चांगला हातभार लागला होता. त्यांच्या खेरीज समाजाचे विद्यमान चिटणीस श्री. व्यंकटेश जगत्राथ परुळेकर यांचेही दि. १८.४.१९८६ रोजी निधन झाले. ते प्रथम १९५० ते १९५६ पर्यंत व पुढे १९८३ ते १९८५ पर्यंत व्यवस्थापक मंडळाचे

सदस्य होते. त्यानंतर ते चिटणीस झाले. त्यांच्या रिकाम्या झालेल्या चिटणीसपदावर श्री. श्रीपाद शंकर पंत बालावलकर यांची निवड झाली.

समाजाचे अध्यक्ष डॉ. गंगाधर सदाशिव तेंडोलकर यांनी १९८६ मध्ये राजीनामा दिल्यामुळे, उपाध्यक्ष पदावर असलेले श्री. बामन श्रीधर परुळेकर यांची अध्यक्ष म्हणून निवड करण्यांत आली. तसेच त्यांच्या रिकाम्या झालेल्या उपाध्यक्ष पदाच्या जागेवर श्री. दत्तात्रेय सखाराम आजगांवकर यांची निवड करण्यांत आली. यावर्षी कायम शिष्यवृत्ती व पारितोषिक फंडासाठी श्री. विश्वनाथ बा. परुळेकर यांनी रु. १०,०००/- श्री. दिनकर मोरेश्वर सामंत कोपराडकर रु. ३,०००/-, श्रीमती प्रेमाबाई भि. पाटकर रु. २,५०१/- व श्री. तुकाराम रघुनाथ सामंत कोंडकर रु. २,५०१/- तसेच कायम निधीसाठी श्री. गजानन महादेव नाईक रु. ५,०००/- अशा देणग्या प्राप्त झाल्या. त्यामुळे समाजाचा एकूण निधी रु. १६,८०,१५०.९२ झाला. मात्र कार्यालय व सभागृह निधीच्या व्याजावर रु. २,७७०/- चा आयकर द्यावा लागला. यावर्षी ३१८ विद्यार्थ्यांना रु. १,३०,०५०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यात आल्या. देणगीदारांच्या पारितोषिक फंडातून रु. ३,५०५ ची पारितोषिके तसेच विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या १० वीच्या ७ व १२ वीच्या १२ विद्यार्थ्यांना समाजाच्या फंडातून प्रत्येकी रु. १००/- प्रमाणे एकूण रु. २,९०० ची पारितोषिके दि. २४.७.१९८६ रोजी बालमोहन विद्यामंदिर दादर येथे झालेल्या मुलांच्या कौतुक सोहळ्यामध्ये बँक ऑफ इंडियाचे महाव्यवस्थापक श्री. नंदकुमार परुळेकर या प्रमुख पाहुण्यांच्या हस्ते देण्यांत आली.

या नंतरच्या वर्षी (१९८७-८८) श्री. बाळकृष्ण रा. परुळेकर रु. ५,०००/-, श्री. मोहन म. परुळेकर रु. ५०००/- व श्री. विश्वनाथ बा. परुळेकर रु. २,०००/- अशा देणग्या स्वतंत्र शिष्यवृत्त्यांसाठी प्राप्त झाल्या. खेरीज समाजाच्या कायम फंडासाठी श्री. बाबुराव विश्राम खानोलकर रु. १०,०००/- व सौ. आशा सुरेश सामंत रु. ५,०००/- अशा देणग्या प्राप्त झाल्या. त्यामुळे कार्यालय व सभागृह निधीच्या

रु. ४,३६,३५९.११ सह समाजाचा एकूण कायम निधी रु. १७,७०,९९३.८८ झाला. या वर्षी ३१ विद्यार्थ्यांना रु. १,२७,१९०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या. देणगीदारांच्या विशेष पारितोषिक फंडातून एकूण ४,२६०/- ची पारितोषिके देण्याचा तसेच विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या १० वी व १२ वी च्या एकूण २५ विद्यार्थ्यांना प्रत्येकी रु. १००/- प्रमाणे एकूण रु. २,५०० ची पारितोषिके वितरीत करण्याचा व त्यांचे कौतुक करण्याचा सोहळा दि. २३.८.१९८७ रोजी बालमोहन विद्यामंदिर, दादर येथे आयोजित केला असता प्रमुख पाहुणे म्हणून थोर समाजसेवक व स्वातंत्र्यसैनिक श्री. दिनेश देसाई हे उपस्थित होते. श्री. न. ना. पंतबालावलकर हे यावर्षी प्रथमत: चिटणीस म्हणून निवडले गेले.

या वर्षी डॉ. बाळकृष्ण रामचंद्र सामंत, पुणे, यांचे दुःखद निधन झाले. ते १९५९ ते १९७९ पर्यंत समाजाचे ट्रस्टी होते. त्यांनी समाजाच्या कामात तत्प्रतेने लक्ष घातले होते. याखेरीज १९५६ ते १९६८ पर्यंत समाजाचे व्यवस्थापक मंडळाचे सदस्य असलेले अऱ्ड. श्री. शंकर गोपाळ सामंत, माहीम यांचे देखील निधन झाले. त्यांनी रिफंड वसुलीचे खटले चालविण्याच्या बाबतीत समाजाला चांगली मदत केली होती. आतपर्यंतच्य १४ वर्षांच्या काळात समाजाने एकूण रु. १४,५९,४१६.२७ च्या शिष्यवृत्त्या झाती विद्यार्थ्यांना दिल्या. त्यापैकी फक्त रु. ३,२८,३१७.४६ ची परतफेड माजी विद्यार्थ्यांनी केली.

१९८४ ते ८८ पर्यंत यशस्वीपणे चेअरमन म्हणून काम करणारे श्री. श्रीपाद बळकृष्ण पाटील यांच्या जागी १९८८ साली श्री. भास्कर माधवराव सामंत यांची निवड करण्यांत आली. या वर्षी समाजाच्या कायम फंडासाठी रु. २,४५,९७९/- स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडासाठी रु. १,३८,५००/- व स्वतंत्र पारितोषिक फंडासाठी रु. १७,५०२/- अशी भरघोस रक्कम जमा झाली. यामध्ये श्री. एकनाथ केशव ठाकूर रु. १,००,०००/-, श्रीमती शारदाबाई गजानन नाईक रु. १,००,०००/-, श्री. कमलाकर लक्ष्मण बालावलकर रु. २७,०००/-, श्री. रत्नाकर लक्ष्मण

बालावलकर रु. २७,०००/-, श्री. दत्तात्रेय लक्ष्मण बालावलकर रु. २६,०००/-, श्री. हरिकृष्णद केशव दाभोळकर रु. १५,०००/-, डॉ. श्रद्धानंद सदानंद ठाकूर रु. १५,०००/-, सौ. निर्मला श्रद्धानंद ठाकूर रु. १५,०००/-, श्री. हरिकृष्णद केशव दाभोळकर रु. १५,०००/-, श्रीमती शालिनी वि. देसाई रु. १०,०००/-, श्री. शामराव मुकुंद सामंत रु. १०,०००/-, श्रीमती नीला भालचंद्र नाईक रु. १०,०००/-, श्रीमती उषा मधुसुदन सामंत रु. ५,००१/-, श्री. वसंत शंकर नाईक रु. ५,०००/-, व सौ. सुंगंधा मोहन परुळेकर रु. ५,०००/- या देणगायांचा मुख्यतः अंतर्भाव होता. या वर्षी ३०१ विद्यार्थ्यांना रु. १,२७,७६०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या.

या वर्षी कौतुक सोहळ्याचे प्रमुख पाहुणे म्हणून सुप्रसिध्द समाजसेवक व नैशनल स्कूल ऑफ बैंकिंगचे प्राचार्य श्री. एकनाथ केशव ठाकूर हे उपस्थित होते. ते स्वतः समाजाचे माजी विद्यार्थी असल्याचे त्यांनी आवर्जून सांगितले आणि आपली एक लक्ष रुपयांची देणगी उत्सुर्तपणे समारंभात जाहीर केली. त्यांच्या हस्ते देणगीदारांच्या पारितोषिक फंडातून रु. ५,०७२ ची पारितोषिके आणि समाज फंडातून १० वी व १२ वी च्या परीक्षांत विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या ३७ विद्यार्थ्यांना प्रत्येकी रु. १००ची पारितोषिके देण्यांत आली. हा गुणगौरव व कौतुक सोहळा शारदाश्रम विद्या मंदिर येथे दि. २८.८.१९८८ रोजी झाला. या वर्ष अखेरीस कार्यालय व सभागृह निधीच्या रु. ४,८५,१६१.७६ सह समाजाच्या निधीची एकूण रक्कम रु. २२,०८,६५४.३० झाली.

यावर्षी समाजाचे आश्रयदाते श्री. सीताराम नारायण देसाई टोपीवाले यांचे दुःखद निधन झाले. त्यांनी झाती बांधवांना केलेली मदत व त्यांचे झाती विषयीचे प्रेम लक्षणीय होते. त्यांच्या पक्षात त्यांच्या पली श्रीमती विजया उर्फ नर्मदाबाई देसाई झातीच्या विविध उपक्रमामध्ये मुख्यतः भगिनी मंडळाच्या कामामध्ये सक्रीय भाग घेतात.

१९८९ सालानंतर समाजाच्या कायम निधीमध्ये मोठ्या प्रमाणात भर पडण्याचा क्रम सतत चालू राहिला आहे. या वर्षी स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडासाठी रु. ९,००१/- आणि समाजाच्या कायम फंडासाठी रु. १,३२,२०४/- च्या देणग्या मिळाल्या. यामध्ये अर्थातच मुख्यतः कै. श्रीमती शारदाबाई गजानन नाईक (पूर्वीच्या रु. १,००,०००/- च्या देणगीत भर म्हणून) रु. १,००,०००/-, श्री. शांताराम कृष्णाजी पंतवालावलकर कोल्हापूर रु. १,००,०००/-, श्री. कलमनाथ लक्ष्मण सामंत, लंडन रु. ४८,०००/-, सौ. सुधा कमलाकर देसाई रु. १०,०००/-, श्री. नारायण (राजीव) श्रीकृष्ण पाटकर रु. १०,१०१/-, व श्री. लक्ष्मण सखाराम प्रभु आजगांकर रु. १०,०००/-, यांचा अंतर्भाव होता. त्यामुळे वर्ष अखेरीस कायालय व सभागृह निधीच्या रु. ५,५१,४५७.४१ सह समाजाच्या कायम निधीची एकूण रक्कम रु. २६,१७,८४४.६४ झाली.

या वर्षी ३०६ विद्यार्थ्यांना एकूण रु. १,५८,४८० च्या शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या. तसेच देणगीदारांच्या पारितोषिक फंडातून एकूण रु. ५,३०२ ची पारितोषिके आणि समाजफंडातून १० वी व १२ वीच्या परीक्षांत विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या ४५ मुलांना प्रत्येकी रु. १००/- ची पारितोषिके २७.८.१९८९ रोजी शारदाश्रम विद्यामंदिर, दादर येथे झालेल्या पारितोषिक वितरण समारंभामध्ये प्रमुख पाहुणे चित्रपट निमित व जाहिरातदार श्री. एम. वी. सामंत यांच्या हस्ते देण्यांत आली. खेरीज समाजाला एकूण दोन लक्ष रुपये देणगी देणाऱ्या श्रीमती शारदाबाई गजानन नाईक आणि प्रत्येकी एक लक्ष रुपये देणगी देणारे श्री. शांताराम कृष्णाजी पंत वालावलकर व श्री. एकनाथ ठाकूर यांचा विशेष सत्कार प्रमुख पाहुण्यांच्या हस्ते करण्यांत आला.

दुर्दैवाने श्रीमती शारदाबाई नाईक यांचे या सत्कारानंतर लवकरच निधन झाले. आपले वडील कै. डॉ. दिनकर दामोदर देसाई यांची परंपरा कायम ठेवून स्वतःचे सर्व संचीत धन त्यांनी समाजाला दिले

हे विशेष भग्नत्वाचे होय. या वर्षी फोबिवलीचे श्री. यशवंत विठ्ठल देसाई यांचेही निधन झाले. ते १९५९ ते १९६२ पर्यंत समाजाचे चिटणीस होते. तत्पूर्वी समाजाच्या हीरक महोत्सव प्रसंगी प्रसिद्ध झालेल्या स्मरणिकेतील समाजाच्या इतिहासाचे लेखन करण्यांत त्यांचा महत्वाचा हातभार लागला होता.

या नंतरच्या वर्षी (१९९०-९१) प्राप्त झालेल्या स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडासाठी रु. ९२,५००, स्वतंत्र पारितोषिक फंडासाठी रु. ३३,००५ आणि समाज फंडासाठी रु. १८,४७९ च्या देणग्यांमध्ये मुख्यतः सौ. शैला कमलनाथ सामंत, लंडन २५,०००/-, श्री. नारायण हरी सामंत व सौ. पुष्पा विष्णु आजगांवकर, रु. २०,०००/-, श्रीमती जानकीबाई पुरुषोत्तम तेढूलकर, बेळगांव रु. १५,०००, व सौ. सुधा कमलाकर देसाई, मालवण रु. १०,०००/-यांच्या देणग्यांचा मुख्यतः अंतर्भाव होता.

यावर्षी ३४४ मुलांना रु. १,८१,४२०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या. यामध्ये परदेशी शिक्षण घेण्यासाठी गेलेल्या दोन मुलांना प्रथमतः प्रत्येकी रु. ५,०००/- देण्यांत आले. या परदेशी शिक्षणासाठी जाणाऱ्या मुलांना अर्जी करण्याकरिता विशेष स्वरूपाचे फॉर्म्स तयार करण्यांत आले होते. या वर्षी देणगीदारांच्या पारितोषिक फंडातून एकूण रु. ८,४०० ची पारितोषिके, तसेच समाज फंडातून १० वी व १२ वीच्या परीक्षांत विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या ६१ मुलामुलीना प्रत्येकी रु. १००/-ची पारितोषिके देण्यात आली. या पारितोषिक वितरणाच्या कौतुक सोहळ्याला दि. १६.९.१९९० रोजी शारदाश्रम विद्यामंदिर, दादर येथे प्रमुख पाहुणे म्हणून कोल्हापूरचे उद्योगपती श्री. तात्या तेढूलकर हे उपस्थित होते.

या वर्षामध्ये दि. ६.२.१९९१ रोजी सुप्रसिद्ध समाजसेवक व उद्योगपती श्री. रामकृष्ण हरी उर्फ काका सामंत नेवाळकर यांचे दुःखद निधन झाले. ते विद्यावृद्धि समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळ्यावर १९६२ ते १९८३ अशी २१ वर्षे होते. समाजाच्या प्रत्येक सभेला हजर राहून ते कामकाजात बारीक रक्ष घालीत असत. गरीब

व गरजू मुलांना मदत मिळाली म्हणून त्यांचा प्रयत्न असे. निराश्रित सहायकारी फंड, गौड ब्राह्मण सभा, को—ऑप. क्रेडीट सोसायटी, दाखोली मठ, परुळ्याचे आदिनारायण देवस्थान अशा इतर संस्थांमध्ये देखील ते तत्परतेने काम करीत असत. त्यांच्या निधनाने या सर्वच संस्थांची फार हानी झाली.

दि. ३० जून १९९१ रोजी झालेल्या समाजाच्या १७ व्या सर्वसाधारण सभेमध्ये मंजूर करण्यांत आलेल्या संस्थेच्या सुधारित नियमांनुसार आजीव सभासदत्वाची वर्गणी रु. २५० करण्यांत येऊन समाजाच्या कायम स्वरूपाच्या विशिष्ट कामासाठी कीमान रु. १,०००/-— किंवा कायम स्वतंत्र पारितोषिक फंडासाठी कीमान रु. २,५००/- अथवा कायम स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडासाठी कीमान रु. ५,०००/- (अगर तितक्या किमतीची स्थावर जंगम मिळकत) देणाऱ्याला आश्रयदाता समजण्यांत येईल असे ठरविण्यांत आले. बदलत्या समाजिक व आर्थिक परिस्थितीनुसार उचित अशीच ही गोष्ट होती. या खेरीज प्रतिवर्षी एक वर्षाच्या मुदतीकरिता व्यवस्थापक मंडळाला एक सभासद स्वीकृत करता येण्याची तरतूद करण्यांत आली.

यावर्षी स्वतंत्र शिष्यवृत्ती फंडासाठी रु. १,४०,१०२/-, स्वतंत्र पारितोषिक फंडासाठी रु. १६,००१ आणि समाज कायम फंडासाठी रु. १८,२२९.६३/-च्या देणग्या जमा झाल्या. त्यामुळे कार्यालय व सभागृह निधीच्या रु. ६,६०,०४६.४१ सह एकूण निधी रु. ३०,८०,१६९.४९ झाला. प्राप्त झालेल्या देणग्यांमध्ये सौ. राधाबाई तात्या वालावलकर (राजिवडेकर), वांद्रे रु. १,००,१०१/- ह्या देणगीचा अंतर्भाव होता. या वर्षी ३४९ मुलांना रु. १,७७,५१०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यात आल्या. खेरीज परदेशी शिक्षणासाठी गेलेल्या दोन मुलांना प्रत्येकी रु. ५०००/- देण्यात आले.

दि. २५.८.१९९१ रोजी वनमाळी हॉल, दादर येथे साजरा करण्यात आलेल्या मुलांच्या कौतुक सोहळ्याला प्रमुख पाहुणे म्हणून पुण्याचे उद्योगपती श्री. नारायण नरसिंह देसाई उपस्थित होते. त्यांच्या हस्ते डॉ.

श्रीधर शांताराम आजगांवकर यांचा मधुमेह उपचारशास्त्राचा आंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिळाल्याबद्दल शाल व श्रीफल देऊन गौरव करण्यात आला. डॉ. आजगांवकर १९५१ ते १९६८ पर्यंत समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळावर होते. त्यापैकी काही काळ ते व्हाईस वेअरमनही होते. विद्यावृद्धि समाजाच्या तसेच गौड ब्राह्मण सभेच्या व निराश्रित सहाय्यकारी फंडाच्या कार्यक्रमांत त्यांनी सक्रीय भाग घेतला होता.

खजिनदारपदाची जबाबदारी १९७९ ते १९९१ पर्यंत अतिशय समर्थपणे सांभाळून समाजाच्या आर्थिक विकासाला हातभार लावणारे श्री. शिवराम अनंत उर्फ आणा सामंत यांनी वृद्धापकाळामुळे त्या पदाचा राजिनामा दिला असता त्यांना उपाध्यक्षपदी निवडण्यात आले आणि उपाध्यक्षपदावर असलेले श्री. दत्तात्रेय सखाराम आजगांवकर यांची खजिनदार म्हणून निवड झाली. व्यवसायाने बिल्डींग कॉटक्टर असलेले समाजाचे ट्रस्टी श्री. सीताराम रामचंद्र पाटकर यांचे या वर्षी दि. २६.१.१९९२ रोजी निधन झाले. ते १९५९ ते १९७३ पर्यंत १७ वर्षे समाजाचे उपाध्यक्ष होते. त्यानंतर १९७३ ते १९९२ पर्यंत १९ वर्षे ट्रस्टी होते. त्यांच्या बहुमोल मार्गदर्शनाचा लाभ समाजाला सतत ३६ वर्षे मिळाला. गौड ब्राह्मण सभा, निराश्रित सहाय्यकारी फंड व टोपीवाला चैरेटीवरही त्यांनी काम केले होते. वांद्रे येथील नॅशनल लायब्ररी, सहकारी बँक, सहकार बाजार, व्यायाम शाळा इत्यादी संस्थांच्या कार्यातही त्यांनी सक्रीय भाग घेतला होता. कै. स. का. पाटील यांच्या मार्गदर्शनाखाली कॅप्रिस पक्षाच्या कार्यात ते सहभागी झाले. मुंबई महापालिकेवर ते तीन वेळा निवडून आले होते. स्थायी समितीचे अध्यक्षपद व मुंबईचे महापौरपदही त्यांनी भूषिविले होते. नंतर ते पाच वर्षे आमदार होते. या वर्षी व्यवस्थापक मंडळाचे माजी सदस्य व प्रसिद्ध उद्योगपती श्री. जगन्नाथ घनःशाम प्रभुखानोलकर आणि समाजावर कृपालोभ असलेले समाजाचे एक देणगीदार आयकर तज्ज्ञ श्री. यशवंत पांडुरंग पंडित यांचेही निधन झाले.

समाजाच्या नव्याणवाच्या वर्षी (१९९२-९३)
देखील समाजाला प्राप्त होणाऱ्या देणग्यांचा ओघ सतत

वाढता राहिला. यामध्ये मुख्यतः श्रीमती गंगाबाई भिकाजी नाईक, वांद्रे, रु. १,००,००१/-, श्री. रघुनाथ विठ्ठल धोंड, व सौ. लता रघुनाथ धोंड, लंडन रु. ६०,०००/-, डॉ. सुधीर श्रीधर वालावलकर रु. २५,०००/-, श्री. काशिनाथ रामचंद्र झारापकर, गोरेगांव रु. २२,५१०/-, सौ. इंदिराबाई काशिनाथ झारापकर रु. २२,५१०/-, सौ. सुलभा उपेंद्र तेंदुलकर, बेळगांव रु. ११,०००/- व श्रीमती सुशिला गव्हाणकर, अमेरिका रु. १०,०००/- यांचा अंतर्भाव होता. या वर्षी ३२६ मुलांना रु. १,८५,४६०/- च्या शिष्यवृत्त्या देण्यात आल्या.

शारदाश्रम विद्यामंदिर येथे दि. २०.९.१९९२ रोजी झालेल्या मुलांच्या गुणगौरव व पारितोषिक वितरण समारंभाला प्रमुख पाहुणे म्हणून अखिल भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्थेचे महासंचालक श्री. कृष्णाजी राजाराम खानोलकर उपस्थित होते. त्यांच्या हस्ते स्वतंत्र पारितोषिक फंडातून रु. ११,१९५ ची पारितोषिके, तसेच समाजाच्या फंडातून १० वी व १२ वी च्या परीक्षांत विशेष गुणवत्ता दाखवणाऱ्या एकूण ५३ विद्यार्थ्यांना प्रत्येकी रु. १००/- देण्यात आले.

श्री. सीताराम रामचंद्र पाटकर यांच्या निधनाने रिकांम्या झालेल्या ट्रस्टीच्या पदावर श्रीमती सुशिला लक्षण गव्हाणकर, वसई यांची निवड करण्यात आली.

या वर्षी सुप्रसिद्ध समीक्षक व चरित्रकार श्री. गंगाधर देवराव खानोलकर यांचे वृद्धापकाळामुळे निधन झाले. ते समाजाचे माजी विद्यार्थी होते. 'गौड ब्राह्मण' त्रैमासिकाचे संपादक म्हणून त्यांनी काही काळ काम केले होते. विद्यावृद्धि समाजाच्या कार्याला देखील त्यांनी थोडा हातभार लावला होता. या खेरीज पत्रास वर्षापूर्वी काही काळ समाजाच्या व्यवस्थापक मंडळावर कार्य केलेले श्री. विष्णुपंत महाबळेश्वर परुळेकर यांचेही या वर्षी निधन झाले. कै. परुळेकर हे अणु ऊर्जा संशोधन केंद्राचे आद्य संचालक डॉ. होमी भाभा यांचे विश्वासू सहकारी होते.

समाजाच्या शताब्दी वर्षामध्ये (१९९३-९४) सतत सर्वत्र समाजाचे प्रचारकार्य योजिले होते. त्यानुसार

ज्ञाती-बांधवांनी सहकार्य करावे असे आवाहनपत्र देशात व परदेशात ठिकटिकाणच्या ज्ञातीबांधवांकडे पाठविण्यात आले. तसेच मुंबईबाहेर कुडाळ, पुणे व डोंबिवली येथील, स्थायिक ज्ञातीबांधवांच्या सहकायने अनुक्रमे दि. २३ मे, दि. २ सप्टेंबर व दि. २६ डिसेंबर १९९३ रोजी सभा घेण्यांत आल्या. या सर्व सभांचे स्वरूप खेळीमेळीच्या बातावरणातील सम्मेलनांचेच होते. कुडाळ येथील संपूर्ण दिवसाची सभा श्री. वि. रा. प्रभू गुरुजी यांच्या अध्यक्षतेखाली श्री. बापू नाईक यांच्या ओंकार मंगल कार्यालयात झाली. यावेळी कणकवलीपासून गोव्यापर्यंतच्या क्षेत्रातील ज्ञातीबांधवांचे सुमारे अडीजशे प्रतिनिधी उपस्थीत होते. पुणे येथील अर्ध्या दिवसाची सभा डेक्कन जिमखान्यावरील मंगल कार्यालयात सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री. श्रीपाद वाघ यांच्या अध्यक्षतेखाली झाली. या सभेला पुण्याच्या शिवाजी नगर, कोथरूड वर्गावर विविध भागांसह पिंपरी चिंचवड व तळेगांव येथीलही दोनशे ज्ञातीबांधव उपस्थित होते. डोंबिवलीची अर्ध्या दिवसाची सभा प्रा. उदय सामंत यांच्या अध्यक्षतेखाली झाली. तिला पूर्व व पश्चिम डोंबिवलीतील सुमारे दोनशे ज्ञातीबांधव उपस्थित होते. या सर्व सभांना विद्यावृद्धि समाजाचे पदाधिकारी आवर्जून उपस्थित होते. समाजाच्या कार्याचे स्वरूप समजावून सांगण्याचे कार्य त्यांनी केले. तसेच उपस्थित स्थानिक ज्ञातीबांधवांचे समाजाविषयीचे विचारही ऐकून घेतले.

समाजाचे पदाधिकारी, कार्यकारी मंडळाचे सदस्य व कार्यकर्ते निधी संकलनासाठी सतत फिरत राहिल्यामुळे समाजाच्या निधीत चांगली भर पडली. प्राप्त झालेल्या देण्यांमध्ये मुख्यतः श्री. सुधाकर श्रीरंग प्रभु लंडन रु. ५,०८,०००/-, डॉ. महेश गोविंद सामंत, अमेरिका रु. ३१,०००/-, श्री. विनायक विठ्ठल देसाई, वसई रु. २५,०००/-, सौ. सुशिला विनायक देसाई, वसई, रु. २५,०००/-, सौ. प्रभा रविंद्र सामंत, बडोदे रु. २१,०००/-, सौ. सुधा कमलाकर देसाई, मालवण, रु. २०,०००/-, श्रीमती सरिता मधु व्ही. रघुनाथ, वांद्रे रु. २०,०००/-, श्री. दिगंबर भास्कर परुळेकर, बेळगांव रु. १९,०००/- आणि श्री. दत्तात्रेय वासुदेव परुळेकर, पुणे रु. १८,०००/- या देण्यांचा अंतर्भाव होता. या शताब्दी

वर्ष अखेरीस समाजाचा कायम निधी रु. १७,८६,६६९/-, स्वतंत्र शिष्यवृत्तीकरिता निधी रु. २३,१३,९५५/- पारितोषिकांकरिताचा निधी रु. ३,२१,७७८/- झाला असून सभागृह व इमारत निधी रु. ८,३४,५७८/- झाला आहे. यापैकी कायम निधीमध्ये या वर्षाच्या रिंडवसुलीच्या रु. ६,२००/- चा अंतर्भाव आहे. खेरीज शताब्दीच्या निमित्ताने प्रसिद्ध करावयाच्या स्मरणिकेकरिता झातीबांधवांनी व इतरांनीही दिलेल्या जाहिरातीचे उत्पन्न रु. १,१३,०००/- झाले आहे. या वर्षी एकूण ३७२ झाती विद्यार्थ्यांना रु. २,८२,९९० च्या शिष्यवृत्त्या देण्यांत आल्या.

या वर्षी विशेष गुणवत्ता दाखविणाऱ्या विद्यार्थ्यांना पारितोषिके देण्याचा व त्यांचा गुणगौरव करण्याचा सोहळा दि. २२ ऑगस्ट १९९३ रोजी शारदाश्रम विद्यामंदिर, दादर येथे झाला. याप्रसंगी प्रमुख पाहुणे महणून श्री. दि. मु. परळेकर हे उपस्थित होते. त्यांच्या हस्ते १० वी च्या ५४ मुलांना व १२ वी च्या १५ मुलांना प्रत्येकी १००/- रुपये प्रमाणे पारितोषिके समाज फंडातून देण्यात आली. त्याखेरीज खास पारितोषिक फंडातून रुपये १४,८०० च्या पारितोषिकांचेही वितरण करण्यांत आले.

शताब्दी वर्षातील अत्यंत दुःखद घटना म्हणजे समाजाचे विद्यमान अध्यक्ष श्री. वामन श्रीधर परळेकर यांचे १४ नोव्हेंबर १९९३ रोजी झालेले निधन ही होय. कै. वामनराव परळेकर यांचा प्रथम चिटणीस म्हणून व त्यानंतर उपाध्यक्ष व पुढे अध्यक्ष म्हणून सतत ४८ वर्षे समाजाशी संबंध होता. या कालावधीमध्ये समाजाच्या प्रत्येक कार्यात ते तत्परतेने सहभागी झाले होते. शताब्दी वर्षाची सांगता अगदी जवळ आली असतांना त्यांचे निधन होणे ही अतिशय दुर्दैवाची घटना होय. त्यांच्या खेरीज या वर्षामध्ये ठाणे येथील श्री. सहदेव सीताराम देसाई यांचे देखील वृद्धापकाळाने निधन झाले. कै. देसाई हे दीर्घकाळ घरोधरी फिरून समाजासाठी वार्षिक वर्गणी गोळा करीत असत.

शताब्दी वर्षाचा सांगता समारंभ
(दिनांक ६ मार्च १९९४)

कुडाळदेशस्थ गौड ब्राह्मण विद्यावृद्धि समाजाच्या शताब्दी वर्षाचा सांगता समारंभ स्वातंत्र्यवीर सावरकर स्मारक भवन, दादर (पश्चिम) येथे दि. ६ मार्च १९९४ रोजी

संपूर्ण दिवस साजरा करण्यांत आला. तेव्हा प्रमुख पाहुणे म्हणून सुप्रसिद्ध कामगार नेते श्री. दत्ता सामंत हे उपस्थित होते. समारंभाची सुरुवात समाजाचे उपाध्यक्ष श्री. शिवराम अनंत उर्फ आपा सामंत यांच्या हस्ते दीप प्रज्वलनाने ठीक सकाळी ९.०० वाजता झाली. ब्रह्मवृदाचे स्वतीवचन व वेद मंत्रोच्चारण झाल्यानंतर कलावंत झाती बंधुभगिनीचे हस्ते करमणुकीचे विविध कार्यक्रम झाले.

यानंतर झाती संस्थांच्या आवश्यकतेबाबत एक परिसंवाद डॉ. रविंद्र रामदास यांच्या अध्यक्षतेखाली झाला. त्यामध्ये श्री. एकनाथ ठाकूर, श्री. दिनेश देसाई, श्री. ग. म. वालावलकर, प्रा. कमलाकर तिरोळकर, श्री. ज. भ. महाजन, श्री. मनोहर कोचेरेकर, श्रीमती इंदिरा तेंडोलकर, श्री. वि. रा. प्रभु इत्यादींनी भाग घेतला. चर्चा उठलटसुलट विचारांनी चांगली रंगत गेली. यावेळी सुमारे पाचशे झातीबांधवांची प्रेक्षागारात उपस्थिती होती.

दुपारच्या सत्रांत प्रथम श्री. वसंत आंजगावकर यांचे सुश्राव्य गायन झाल्यावर, माजी खासदार व सुप्रसिद्ध कामगार नेते श्री. दत्ता सामंत यांच्या प्रमुख उपस्थितीत मुख्य समारंभ झाला. समाजाचे उपाध्यक्ष श्री. मोहन महादेव परळेकर हे यावेळी अध्यक्षस्थानी होते. समाजाचे कार्याध्यक्ष श्री. भा. म. सामंत यांनी निमंत्रितांवे स्वागत करून समाजाविषयी व शताब्दीवर्षातील कार्याविषयी प्रास्ताविक माहिती सांगितली. त्या नंतर श्री. श्री. वा. पाटील यांनी प्रमुख पाहुणे श्री. दत्ता सामंत यांची ओळख करून दिली. समाजाचे कार्यवाह श्री. श्रीपाद पंतवालावलकर यांनी समाजाचा शंभर वर्षाचा इतिहास थोडक्यामध्ये सांगितला. निमंत्रित समाजबांधवांपैकी श्री. ग. म. वालावलकर, कुडाळ व श्री. वा. त्र्यं सामंत, विरार यांची समाजाच्या कार्याविषयी व शताब्दी समारंभाविषयी घन्यवाद देणारी भाषणे केली.

प्रमुख पाहुणे श्री. दत्ता सामंत यांनी आपण समाजाचे माजी विद्यार्थी असल्याचे आवर्जून सांगितले व आजही समाज कार्याची आवश्यकता असल्याचे प्रतिपादन केले त्यांनी स्वतःची रुपये एक लाखाची देणगी जाहीर केली. यानंतर श्री. मोहन परळेकर यांनी अध्यक्षीय समारोप केल्यावर उपकार्याध्यक्ष श्री. ज. भ. महाजन यांनी आभार मानले. या समारंभाचे सूत्र संचालन प्रा. विजया ठाकूर यांनी केले.

* *